

॥ ईशानमः सिद्धम् ॥ ॥ अथ आत्मानुशासनग्रंथकी प्रास्ताविका लिख्यते ॥ ॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥ श्रीजिनशस
नगुरुनमः ॥ नामाविधिमुष्कार आत्मदिनउपदेशते करैमां लाया ॥ ॥ सवेया सोहे जिनसामममे आत्मानु
शासनमुत्तजाकी ॥ ॥ यहा सुष्कारमां चीसासना ॥ जाके गुननदकर्ता गुननदजाके जानि नदगुनधारी भव
करतउपासना ॥ ऐसे सारसास्त्रको प्रकाशे अर्थजीवनिके वने उपकारमात्रे भिषा प्रमदासना ॥ ताते देवना
याकरि अर्थको धकाशकरौ जाते मंदबुद्धी के होत अर्थनासना ॥ ॥ २॥ ॥ अथ श्रीगुणनदनामां मुनिअथ
नां धर्मनदलोकसे नमुनि विषय विमोदित भयाताका संवोधन कामिसकरि सर्वजीवनिके उपकार जो नल
मार्गताका उपदेश देने का अनिलायी होत संतानि विघ्नशास्त्रकी संपूर्णता आदि अनेक फल उंयं छता अथ
ने इष्टदेवकं नमस्कार करत संता प्रथम ही लहरी इत्यादि सुवक हे दे ॥ ॥ लहरी निवास निजयं विनीने
किनयं निधाय हृदि वीर्य आत्मानुशासनमंदे वहे मोहाय नवाना ॥ ॥ ३॥ ॥ अर्थ ॥ मेनुदे शास्त्रकर्ता गुणनद सोदी
रक हिए चर्चमान तीर्थकर देव अथवा कर्मशुभासने उं सुनटवा विशिष्ट क हिए लहरी ताकुरतिक हिए ॥
हे ऐसा सर्व अरहंत दिकता हि अयता हृदय विषे अवधारण करि आत्माको हित रूप शिक्षा का देन हारु ऐसा

गधर्मवुद्धिकरिनीजेअरमेधअंतराजलकरिआले वज्ररिमनुष्यतोसंसारउघतेजीवनिकाउधारकरनेकीइबाकीधा
 रे अरमेधअन्नादिउपजावनेतेलोककाउधारकरनेकाकारणयनाकोंधरे ऐसेमनुष्यवामेधउर्लभहे ॥ ३ ॥ उय
 देशदातावज्रतहंपरंतुहमजैसेधर्मवुद्धितेजीवनिकाउधारकरनेकोउपदेसदेवगेनेसंउपदेसदेमहारेधारेहं नातेहम २
 रउधमनिरर्थकनाहीहे ॥ ४ ॥ आगेऐसेहैतोकिसेगुणनिकरिसंयुक्तउपदेसदाताहोहे ऐसाप्रपदहोतेथाइइत्या
 दिदोयशोककहेहे ॥ ५ ॥ प्राज्ञः प्राप्समस्तसास्वदृश्यः प्रयत्नलोकस्थितिः प्राप्ताज्ञः प्रतिनायरः प्रथमवान्प्रा।
 गेवदृष्टोत्तरः प्रायश्चमसहप्रभुपरमनोहारीयगनिंदयात् ॥ ६ ॥ व्याधर्मकथांगणीगुणनिधिः प्रस्पष्टमिष्टाक्षरः ॥ ७ ॥
 ॥ ८ ॥ ऐसागणीसजानायकहोईसोधर्मकथाकोकहे केसावुद्धिवानहोई जातेवुद्धिहीनकावक्तापनावनेनाही व
 ज्ररिपथाहैसमस्तसास्वनिकारहस्यजिहैऐसाहोयजातेअनेकअंगजानेविनायथार्थभासेनाही वज्ररिप्राटहे
 लोकववहारजाकेऐसाहोई जातेलोकरितिजानेविनालोकविरुद्धहोहे वज्ररिप्रकर्षपनेअस्तनईहैआसाजा
 केऐसाहोई जातेआज्ञावातारजायमानकीयावाहे यथार्थअर्थप्रसंगेनाही वज्ररिअंतिकरिउत्तरहोई जाते २
 सोजायमानननरंमहंतपनेसोऐनाही वज्ररिउपशमपरिणामयुक्तहोई जातेतीव्रकषायीसर्वकुंअनिष्टनिंदाक १

स्थानहोई वज्ररिप्रश्नकीएंगहनेहीदेखिहैउत्तरजानेऐसाहोई जातेआपहीप्रश्नउत्तरकरिसमाधानकरेतोआत १
 निकेउपदेसकीदृष्टताहोई वज्ररिप्रचुरप्रश्ननिकासहनद्वाराहोई जातेप्रश्नकीएंगेदखिअहोयतौआताप्रश्नक
 रिसके तद्यतिनकासंदेहकेसंदरिहोई वज्ररिप्रभुहोई जातेजाकोआपतेउंचाजानेताहीकाकक्षामाणिहै वज्र
 रओरनिकेमनकाहरनद्वाराहोई जातेजोअसुहावनालागिताकीसीधकेसमाने वज्ररिगुणनिकातिधानहोई ज २
 तेगुणविनानायकयणोसेनिनाही वज्ररिस्पष्टअरभीवेजाकेउपदेसरूपअक्षरहोई जातेप्राटवचनविनासमा
 केनाही मीठाबोलेविनारुचिनहोई ऐसागुणहिथसोओरनिकीनिंदावाओरनकरिनिंदनहोई ऐसीरितिकी
 रधर्मकथाकंकहे ॥ ९ ॥ आयविषेइतनेगुंनहोइतवसास्वकहनेकाअधिकारीहोनायोपहे ॥ १० ॥ श्रुतमवि।
 कलंघवृत्तिः परप्रतिबोधने परणतिरुसद्योगीमार्गवर्तनसद्विधे ॥ ११ ॥ बुधनुतिरनुसेकोलोककृतामृडतास्पृह १
 यतिपतिगुणायस्मिन्ममेवसोस्तुगुरुः सतां ॥ १२ ॥ जिसविषेऐसेगुणहोई सपूर्णसंदेहरहिततौसास्वज्ञानहोई
 वज्ररिअदोषरहितयथायोग्यमनवचनकायकीप्रवृत्तिहोई वज्ररिओरनिकासंबोधनविषेपरिणामहोय वज्र
 रिजिममार्गकाप्रवर्तवनेकीनलीविधिविधेवडाप्रमहोई वज्ररिपंजीनिकरिक्कीक्रीकईनमनक्रियाहोई वज्र

धिकरणनीनिकाविनयकरिनमनहोई वज्ररिउद्धतयनाकरिरहितताहोई वज्ररिलोकरीतिकागतायनाहोई वज्ररि
 कोमलयनाहोई वज्ररिवांवारहितयनाहोई ऐसैएगुणहोई वज्ररिओरजीऐसैहीयतीस्वरसंवंधीगुणजाविषेहोयस
 सुरधनिकाजलाकरै तातेहमारीजीयऊआसीवीहोई जोऐसाहीउपदेसदातागुरुहोउ जाकरिजीवनिकाबुराहोई
 सोउपदेशदातागुरुकाऊकेमनिहोऊ आगेऐसाउपदेसकहेयतोशिष्यकैसाहोई ऐसंप्रलेकहोई नव्यः
 किंऊशलंममेतिविम्वानडः स्वातन्त्र्यंजीतवात् सोमैषीश्रवणदिवुद्धिनिनवः धुत्यविचार्यः स्फुटं धर्मशर्मकरं
 दयागुणमयंयुक्तंआमांस्थितं गुरुनधर्मकथाश्रुतावभिदत्तसास्योनिरस्ताउदः जिसविषेइतनेगुन
 होयताकेसुननेविषेअधिकारीकीयहि केसा प्रथमतोउपदेसजातेजाकाजवितवजलाहोनेकानहोयतोसुनना
 केसेकर्यकारीहोय वज्ररिमैगुरुलाएकहोई ऐसाविचारताहोयजातेजाकेअयनांनखाबुराहोनेकाविचारनां ?
 सोकाहेकोसीधसुने वज्ररिउपदेसप्रतिशयकरिमरताहोई जातेजाकेनरकादिककामयनाही सोयायबोझनेका
 सास्रकोहेकोसुने वज्ररिसुषकाअजिनाधीहोय जातेआगामीसुषचाहेतोधर्मसाधनकाशामसुने वज्ररिअव ३
 एआदिवुद्धिकाविमवजाकेपाईऐसाहोई तहांसुननेकीइछाकानांमसुषधीहोसुननेकानामप्रवणहोमना

करिजामनेकानांमयहणहो नचूलनेकानामधारणहो विशेषविचारनेकानांमविज्ञानहो प्रलोभरकरिनिर्णयकरनां
 ताकांनमआयोहोई तवधुधमकेअजिप्रायकानांमसत्ताजिनिबेवाहो ऐसैरबुद्धिकेगुणहोसोआकूंयाईहोई
 जातेप्रसन्ननिशिष्ययनांघनेनाही वज्ररिसुषकारीदयागुणमईअनुमानआगामकरिसिद्धनयाऐसाजोधर्म
 साकूंमुनिकरिविचारकरिगृहणकरनाहोई जातेऐसाहोधर्मऐसैहीशिष्यकेकर्यकारीहोई वज्ररिनष्टन
 याहिषोटावजाकेऐसाहोई जतिहवज्ररिआयधापीहोईताकोसीधलागेनाही नावार्थ ऐसागुणसहि
 तहोयसोधर्मकथाकेसुननेकाअधिकारीहोयवाहीकाजलाहोई इतगुणनिविनाधर्मकथाकासुननाकार्य
 कारीनहोई आगेकहोई ऐसमिषहोसोपुरुषउपदेसतेसुषकाअर्थीपनांकरिधर्मउपार्जनहीकेअर्थी
 प्रवर्त्त जातेऐसानायहो यायादुःखंधमासुषमिति सर्वजनसुप्रसिद्धमिदं तस्माद्विहायपापं चरतुसुषा
 धीमदाधर्म पापतेउपहोई धर्मिसुषहोई ऐसैयजुधनमसर्वजननिविषेजलेप्रकारप्रसिद्धहो सर्वहीऐ
 सेमानेहो वाकहोई तातेसुषकाअर्थीहोजाकोसुषचाहोसोयायऊंजोसिद्धकालधर्मऊंआचरे
 पापकाफलडः धर्मधर्मकाफलसुषऐसैहमहीनाहीकहोई सर्वकहोई तातेजोसुषचाहोहोतोयायजोनि

विश्वोत्पत्तिं न के साहे महाकालमूढता आदि विषय निरूपित है। तहां जो क मूढ समग्र मूढ है मूढ ने देती
न मूढ अप्रजाति कुल जाति आउमह अरविछात्र न भ्यां न अरि अरु न के वार क जीव जैसे मूढ अनाय
तन अश्वार्थ मर्द ॥ सर्वज्ञान न अमर्ष इका पान ॥ अमर्ष इका पान युक्त पुरुष ॥ अमर्ष इका अचरण
सहित पुरुष ॥ जैसे मूढ अनायतन ॥ एष मूढ के स्थान नाही ॥ ताते इन कुं अनायतन कहि है ॥ बहु विमंका
॥ कांहा ॥ विवि किंसा ॥ मूढ मूढ ॥ अरु तो ॥ अरु न पुरुष न स्थिती करवा ॥ दास अश्वत्थमा का मूढ न व सो
अरि ॥ जैसे आउमह ॥ जैसे सम्यग् दर्शन के यही मर्दो ॥ ये तिन करि रति म सोई निर्मल चंदान है ॥ ताते इन दोष
मि को लगे सम्यक् का अभाव होई ॥ के सम्य मी मा होई ॥ धृष्टि सो अमर्ष के साहे ॥ मंदे गादि गुण नि करि निर्म
ल पान ते वंदन है ॥ दास करि सेवे गादि मंदे गादि गुण धरे ॥ ईश्वर साधे न यदा धर्म धर्म का कल को दे धर्म
करना ताका नाम सेवे गहे ॥ अविमर्ष ते मीमांसा आदि जं नना ॥ दृष्टि सो अमर्ष म संसार का हान हारा है
॥ धृष्टि कुम सिद्ध युक्त मीमांसा मती न अमर्ष मीमांसा गुह्यता का दे म हारा है ॥ अनायतन से मई सम्यक् न
मुपा न होई ॥ वहु विमंका मीमांसा अश्वत्थ म सं द धर्मि र मीमांसा गुह्यता म गर्जित की ए सात ल वतिन का मिश्र

असर्वज्ञता
आचरण x

MEMORIAL

[illegible]

की गति ऐसं इहं वसने दानने आगं इहं का विरोध वर्णन के अर्थ आकास मत्तं इत्यादि तीम कायक
 है है आकास मत्तं मुक्तं यदुत विस्मयितं वीतरागा इत्येव मत्तं यदुत प्रयं च विवम मत्तं यदुत अदुत
 ते मार्ग अक्षम मातः पुनरुत्तरपुराणोपदेशो यजाता आसदा मागमा धिप्रसूति निरुपदेशादि गदेशि दृष्टिः
 हेनम जे आसदा मत्तं विना वीतरागा की आकाही करि वत्त मत्तु न न ही करि अक्षम होय सो आकास मत्त
 कक हा है वदरि यं विस्तार का मुन नो विना वास अक्षम य रिगु ह दित अक्षम कक हा है वदरि यं विस्तार का मुन नो विना वास
 रद रान मो वकी आति हो से ते अक्षम कर ता जो होई ताहि मार्ग अक्षम कक है वदरि यं विस्तार का मुन नो विना वास
 तिन के पुशानि का उपदेश ते जो नीय जी सो सम्यक् सां सकरि आगाम मत्तु प्रविष्टे धीरा पुशानि करि उ पदेश है
 आदि विवेका के असी दृष्टि करि है यदुत उपदेश मत्तं है आकर्षण धार मत्तं मुनि चरण विधेः सत्तु सं अक्षम
 नः सत्ता सो सत्तु दृष्टि रधिगम मत्तं रक्षार्थ सवीने के विदुता तो यन होइ राम राम वदरि यं विस्तार का मुन नो विना वास
 ये सो वदु धार विमुपात वान साधु सं है यह है मुनि के आचरणा का विधान कं प्रतिया वदरि यं विस्तार का मुन नो विना वास
 सप्रता हि मुनि करि अक्षम कर ता जो होई सो सत्तु दृष्टि मत्तं प्रकर कही है यदुत सत्तु मत्तं है वदरि के इदी जजिग

६

विषयान्न को का रण नि न करि अनुपम दर्शन मो द का उपसम के वसतें दुः कर है ज्ञानने की गति जा की अ
 साधु सार्थ निवास मत्तं की नई है यदुत अक्षम न स प्रय रण ति जा के असा करणानुयोगा का प्या नी जय
 त के वी अहृष्टि हो है वदरि यं विस्तार का मुन नो विना वास अक्षम य रिगु ह दित अक्षम कक हा है वदरि यं विस्तार का मुन नो विना वास
 संके यदृष्टि है यदुत संके पस मत्तं ज्ञानना यः शुत्वा दद सां गी कृत स विषय सं विधि विस्तार दृष्टि सं ज्ञाना
 योत्सु मत्तं प्रवचन वदरि यं विस्तार का मुन नो विना वास अक्षम य रिगु ह दित अक्षम कक हा है वदरि यं विस्तार का मुन नो विना वास
 आने कि तार्थ स विर पर मादि गते निरुता अव जो सत्तु सां गी कृत स विषय सं विधि विस्तार दृष्टि सं ज्ञाना
 विषयान्न ता हि विस्तार दृष्टि है अक्षम ज्ञानि यदुत विस्तार मत्तं है वदरि यं विस्तार का मुन नो विना वास अक्षम य रिगु ह दित अक्षम कक हा है वदरि यं विस्तार का मुन नो विना वास
 दृष्टि है निवेद कोई अर्थ का निमित्त से नई सो अर्थ दृष्टि है यदुत अक्षम मत्तं ज्ञानना वदरि यं विस्तार का मुन नो विना वास अक्षम य रिगु ह दित अक्षम कक हा है वदरि यं विस्तार का मुन नो विना वास
 स मत्तं जे न सा सत्ता के अक्षम ता हि सत्तु जे न सा सत्ता के अक्षम ता हि करि मो की य जी सो अक्षम ता हि दृष्टि है यदुत अक्षम मत्तं ज्ञानना
 अक्षम ता हि सत्तु जे न सा सत्ता के अक्षम ता हि सत्तु जे न सा सत्ता के अक्षम ता हि करि मो की य जी सो अक्षम ता हि दृष्टि है यदुत अक्षम मत्तं ज्ञानना
 है यदुत अक्षम मत्तं ज्ञानना अक्षम ता हि सत्तु जे न सा सत्ता के अक्षम ता हि सत्तु जे न सा सत्ता के अक्षम ता हि करि मो की य जी सो अक्षम ता हि दृष्टि है यदुत अक्षम मत्तं ज्ञानना

[illegible]

तैसंमिवात्प्रसम्पत्सहितक्रियानिभीययिणकजातिहै तथ्यामिनिशयकेविशेषतेंमिथ्यात्वसहित
कथाप्रवृत्तनारवैतोनीमहिभानपावै अस्मत्प्रसहितक्रियाकासुवप्रवहेतोवहेनमहिभांयोगहै
आगेहोसंमपत्प्रसम्पत्प्रवहेतोनीमहिभानपावै अस्मत्प्रसहितक्रियाकासुवप्रवहेतोवहेनमहिभांयोगहै
सर्वकहेहै मिथ्यात्वप्रसम्पत्प्रवहेतोनीमहिभानपावै अस्मत्प्रसहितक्रियाकासुवप्रवहेतोवहेनमहिभांयोगहै
मिथ्यात्वप्रसम्पत्प्रवहेतोनीमहिभानपावै अस्मत्प्रसहितक्रियाकासुवप्रवहेतोवहेनमहिभांयोगहै
यजसुक्रमान्नीविशयविणहै हेमिष्यजैसंमपत्प्रवहेतोनीमहिभानपावै अस्मत्प्रसहितक्रियाकासुवप्रवहेतोवहेनमहिभांयोगहै
इतिप्रवृत्तहै तैसंमिवात्प्रसम्पत्प्रवहेतोनीमहिभानपावै अस्मत्प्रसहितक्रियाकासुवप्रवहेतोवहेनमहिभांयोगहै
साधनगुणहै प्रवहेतोनीमहिभानपावै अस्मत्प्रसहितक्रियाकासुवप्रवहेतोवहेनमहिभांयोगहै
करोरसाधननीसहेतोनीमहिभानपावै अस्मत्प्रसहितक्रियाकासुवप्रवहेतोवहेनमहिभांयोगहै
विश्वकामप्रवृत्तहै प्रवहेतोनीमहिभानपावै अस्मत्प्रसहितक्रियाकासुवप्रवहेतोवहेनमहिभांयोगहै
तानासहै सोईप्रवृत्तहै प्रवहेतोनीमहिभानपावै अस्मत्प्रसहितक्रियाकासुवप्रवहेतोवहेनमहिभांयोगहै

अनुक्रमकोंकरता आचार्य सोतिमका आराधक कोंयोपप्रेसेही सुगम अणुवृत्त रूपचारित्र आराधन कोंदिवा
 वता संता सुव कहिहे विषयविषमात्र नोत्थित मोहद्वार जनित तीव्रदृष्टस निःशक्ति कस्यवत्तः प्र
 यः पेणधुपक्रम भेदान विषयस्वी विषम नो जमते उत्तम नयामोहसुधी ह्वज के प्रेमासक्ति
 हितन आ जो सोंतेरे पेय आदि अनुक्रम है सोई साधनकारी है जैसे का कों के विरुद्ध नो जन उत्तम
 तेज रजा याता करि रषावडतनई वजरि सामर्थ्य घटिगाया ता कों पीवने योग्य आदि नो जन अनुक्रम सोई
 गुणकारी है परिष्ट नो जन करे अरु पेया ही तव उत्तरा रोगवधे तेमें हे सिध्द तेरे विषय संनोते मोह उत्तम न
 याता करि यरव सुकी दृष्टानई वजरि आत्मसक्ति घटिगाई तोऊं अणुवृत्त रूपसाधन का अनुक्रम सोई गुणका
 री है मुनियस्य हण करे अरु पेया ही तव उत्तरा संसारवधे इहां प्रयोजन युक्त है यावत् अंतरंग रागपरि
 णाम रहे तावत् अनुक्रम ते जो साधन करि धर्मवधावना आगोयुक्ति सचारित्र आराधना का प्रारंभ किस
 कों कर ना योग्य है प्रेमा कहिहे सुखितस्पदु खितस्पद संसार धर्म एव नव कार्यः सुखितस्पद निष्ठैः दु
 ष्टं न त उपपत्ताय संसार विषे सुधी वादुःखी जो तं सो मुक्त कों धर्म ही कर ना योग्य है सुधी के तो तिस सु

वकी वधवारी के अर्थ है अरु दुष नो ता के तिस दुःख काना संके अर्थ है जेमें जा के झंजी होई ता कुंजी धन
 कमावना ही योग्य है अरु जा के ऊण होई ता कुंजी धन कुंभावना ही योग्य है झंजी होय अरु धन कमावै तो झंजी की
 वृद्धि होई ऊण होय अरु धन कमावै तो ऊण काना होई तेमें जा के पुण मुंदे ते सुखाई एहे ता कों जी धर्म ही कर
 ना योग्य है अरु जा के पाप ने में दुष पाई एहे ता कों जी धर्म ही कर ना योग्य है सुधी होय धर्म करे तो सुख वधवारी हो
 ई दुषी होय धर्म करे तो दुख का भाग होई ताते सर्व अथ विषे धर्म साधन न करे यजुता तय जान ना अ
 गे विषय सुख है सो धर्म का फल है याते धर्म की रक्षा करता पुरष क दिसो विषय सुख नो गवना योग्य है सोई कहिहे
 धर्मो मम सखं फलानि सर्वे दिपाय सो भानि संरक्षतांस्तनस्तामुच्चिनुयैते मयि सत्त्वं सा
 मस्तान्दिय विषय निके सुख है ते धर्म रूपी जे साधन के सामक संयमादिक वृत्तिन के फल है ताते संजिहतिह
 उपाय निकरि तिन वृत्तिन कुं रावि तिन फल नि कुं सुखि हण करे जेसां ना पुरुष है सो जिन बाग का
 वृत्तिन के फल नामे चोयेति निषक निकी तो रक्षा करे उन के फल चागेति न कुं य हण करे तेमें तं विवेकी है तो जि
 न धर्म नि का अंग नि का मुर न रूप फल नि जेति न धर्म के अंग नि की तो रक्षा करि अरु उन का फल सुख नि यमे

ताजं मेधी मेसे ही की ए सुषका विवेक न हो है ॥ ५॥ विषय सुषकी शक्ति के अर्थ धर्म को आधार ता जो जीवत के
विषय सुषका अभावे है प्रसी आसे का करि तं धर्म ते विमुषमति हो उ जाते मेसे भाये है ॥ ६॥ धर्म सुषा है मुहं त
प्रविरोधक स्वकार्य स्प तस्मात् सुष नंग मया मानू धर्म स्प विमुष वस्त्व ॥ ७॥ धर्म है सो सुषका कारण है वृद्ध
रिक्तार ल होई सो अयने कार्य का विरोधी होइ ना ही ॥ ताते सं सुषका नंग होने का मय करि धर्म के विमुष वमति हो
॥ ८॥ ताते सो विषय सुषा है जिस कार्य का जो कारण होई तिस कार्य का सो कारण विरोधी ना शक्य ॥ ९॥
गम होई ॥ १०॥ सुषका है धर्म का कारण है सो धर्म सुषा का मंग है सं करेगा ॥ ताते धर्म साधन करता मेरा सुष नंग
ग होगा ॥ सो साधन करि धर्म विषे अनादर मति करे कारण ते कार्य की वृद्धि ही हो है ॥ ताते धर्म साधे सुष की वृ
द्धि हो है ॥ सो साधन करि धर्म विषे प्रीति ही करनी योग्य है ॥ ११॥ अगोइस ही अर्थ को वृद्धांत दार करि दृढ़ क
र तस्मात् सुषा है ॥ १२॥ धर्म सुषा म किजो धर्म प्रतिपालनो गम मुन वसु ॥ बीज दवा प्रधमः कषी वृजस्त सवी
ज मिद ॥ १३॥ धर्म ते पाया है सुष संपदा रूप विजय जामे प्रसा जीव है सो धर्म को पाल करि भोग को मोखावे ॥ जिमे
बीज ते पाया है अन्न जिहि प्रसा पित दृष्ट हो सो तिस अन्न का बीज को राखे ॥ १४॥ जेसे अन्न निपु जे है सो बीज अवे

[illegible]

परहमं योग्यं है ॥ आगे जो साधर्म्य काहेते उपार्जन करि रहे श्रीसे धर्म कहै है ॥ परिणाममेव कारण प्रा
 क्तः स्वतु पुण्यपापयो धातु तस्मात्पापचयः पुण्योपचयश्च सुविधियः ॥ २५ ॥ बुद्धिबलं ते ते निष्पद्य क
 रिषु पुण्यपापका कारण परिणाम ही को कहै है ॥ ताते पापका नासन अप्रपुण्यका संवयन त्रै प्रकार कर ना
 योग्य है ॥ नारायण कोई सरिका सामर्थ्य न होने करि कोई धर्मादिक न होने करि कोई महापादिक न हो
 ने करि धर्मसाधन न हो ता माते है सो यहु धर्म है ॥ परका दोष लगाय उपदेस ऊंति रर्थक करो मति सुसु
 नो ॥ पुण्य अप्रपापका कारण परिणाम ही है ॥ जाति परका की या पुण्य पाप होताना ही ॥ अपने ही परिण
 मते पुण्य पाप होत है ॥ ताते असुत्र परिणाम बांछना शुभ परिणाम करना ॥ ऐसे तुम ऊं पापका नाश पुण्य
 का संवयन कर ना योग्य है ॥ आगे जो जीव धर्म का संवयन कर ते संते विषय सुषु निऊं नो गवै है ॥
 तिन की निरादिषा वस्तु कहै है ॥ कदा धर्म विषय विषय सुषु म सुषु नवतिय मोहात आ विष
 त रुक्म लान् ॥ फलानि पुं कति ते पापा ॥ २५ ॥ जो जीव मोह भ्रम ते धर्म कथात करि विषय सुषु निऊं नो
 गवै है ॥ तो पापी मूल ते वृक्ष मिऊं वेदिक रिफल निऊं गवै है ॥ नारायण ऐसे कोई पापी फल ही ऊं चाहे परं



त्रौ ज्ञानाद्यनि ते वृक्ष ऊं जउ ते कटिजे फल हयि न मो निमऊं ग्रहण करै ॥ ते मोही जीव सुषु ही ऊं चाहे ॥ परंतु या
 य बुद्धि ते धर्म का वात करि नो सुषु नदय आवै ता ऊं नो गवै ॥ इह संन संमजनां जैसे वृक्ष ऊं का दोषा रक्षो फ
 ल नो जैसा पाद एवै मित नां ही साय नाग ॥ वृक्ष ऊं काटे आगामी फल या मिहो नां नां ही ॥ एवं आगामी फल या
 मिहो ही जैसे धर्म कथा नो वा राधो ॥ सुषु मो जै मा नदय हो नां है मे कहो सी ॥ धर्म ऊं धर्म आगामी सुषु या मिहो नां
 नां ही ॥ एवं आगामी सुषु की या मिहो है ॥ इह संन ॥ जो धर्म का वात करि सुषु का नो गवनां कथा अपर धर्म ऊं राधि
 सुषु का नो गवनां कथा ॥ ता कथुन राध धर्म का वात करि विषय जीव परहनां ॥ अन्त्या रूप या पाप कार्य करना मि
 ले विषय नि ते धर्म विषय नि की दृष्टा कर ती कथा परिणाम ती उराध नो ॥ इह विषय नि ती लीं विषय सुषु
 का नो गवनां सो तो धर्म का वात करि सुषु का नो गवनां जाननां ॥ धर्म का वात करि विषय धर्म साधनां ॥ अम
 य रूप या पाप कार्य न करना ॥ नि ले विषय नि विषय सो वरूप रमा ॥ कथा वृक्ष के मे रनी ॥ इह विषय नि ती लीं कि
 बुद्धि य सुषु का नो गवनां सो धर्म राधि सुषु का नो गवनां जाननां ॥ वृक्ष निहं कथा य ही मोहात हा विषय साम
 ग्री का सामा की सुषु सामा गी मि ले नी मि गवनां है ॥ तस्मात् परमा धर्म को ना विवर मा र्थ सुषु का नो गवनां जाननां

मो॥ इति श्री श्री गुरु उपादे सविपावेनोपादे भक्त कृष्णार्दी॥ ज्ञानेति सविषय सुधके नो गतं भविष्ये धर्म उपाज्जि
न क र्ने कं सर्वथा असमर्थ पनां हे श्री सेतक कीर्ति ॥ ३॥ क र्ने त्व हे तु क र्ते त्वा नु भवेत् ॥ स्मरणाय लघु ने धुयः
सर्वथा निगमः सकथं धर्मेति सं ग्राह्यः ॥ ३॥ ७७ ॥ कर्त्ता पुनो मोक्षन कर हे तु को कर्त्ता पुनो मोक्ष कर्त्ता
का अनुसारी निधाय सो अनुमोदन इति नो क र्ति मरण मन का विचारः प्रत्यक्ष कथं करि सं किरा कर
र वचन जाय करि वोलनां इति विषयो धर्म सर्व प्रकार पावनं योग्य हे मो धर्म कै से सं ग्रह करे ॥ जावर्थ जो एक
प्रकार धर्म होता होई तो सर्व विषय निकासाग कीर्ण ही धर्म होई परंतु या वत् सर्व विषय का साग न होई सि के
ता वत् अनेक प्रकार करि थोरा थोरा धर्म ही का संवय करे ॥ जैसे अनेक व्यापार निकरि धन ने ना कै से ते से अ
नेक प्रकार धर्म साधन करि धर्म का संवय करे ॥ मो धर्म का संवय न च प्रकार है ॥ मन करि धर्म कर नां कर वनां
अनुमोदनां वचन करि धर्म कर नां कर वनां अनुमोदनां कथ करि धर्म कर नां कर वनां अनुमोदनां वद
रि धर्म के अनेक अंगो हेति न विषे जो धर्म वने मोई करे ॥ वद रिण कहि धर्म थोरा वनां जे ता वने ते ता ही कर
नां ॥ ऐसे सर्व प्रकार धर्म का संवय होई ता ते सुन न हे ॥ वद रि सं कृति न ता अंग र करि धर्म विषे निरुद्धी जया

[illegible]

नीकहै। अरु सलोक परलोक विवेक लाग करी है। **भावार्थ** सिकार आदिकार्य को तं सुषका कारण माने है सो है तो प्रत्यक्ष दुषका स्थान की जाते तहां घट के समान लता विशेष हो है। परंतु तेरे तिस कार्य करने का कुला मजया सो तेरी मानि तें सो कार्य सुषके अर्थ हो है। बज्ररि जो दुषका स्थान की तेरी मानि तें सुषते अर्थ नया अरु जो घट के अंग आकृतता घट ने तें प्रत्यक्ष सुषका स्थान की धर्म कार्य तिस विवेक तेरी मानि करे तो सुषके अर्थ के से म होई। बज्ररि तं जाने गा सिकार आदिकार्य तो जो भी पुरुष न के करने के है। अरु धर्म कार्य तो गीन का करने के है। सो ऐसा ना ही। सिकार आदिकार्य को तो अहं नी आदि धार्य करे है। अरु धर्म कार्य को ब्रह्मवर्ति आदि मनुष्य मोरी सो आदरे है। बज्ररि आगामी भला जाते होई तिस दुष विवेक नी सुष मानि ए सो सिकार आदिकार्य तो नर कारिक दुःख के कारण है। धर्म है सो सुगम मोर के सुष को कारण है। तातें सिकार आदिकार्य तो रिसुष के अर्थ धर्म ही अंगीकार कर हां योग्य है। **आगे** सिकार खेल नां विषे आसक्त ते जीवति त के असंत निर्वयप नां के दिया व ता संता सुत्र कहै है। **गीत** मूर्तिगत प्राण निर्विषदेह विनिका संतल प्रष्ट एा प्रति धृगीर मे पुका कथा ॥ २२ ॥ ५४ ॥ अथ वं भे मूर्ति जिन की अरु रक्षा करि रहित अरु दोष करि रहि

१३

त अरु सरीरा उधम करि सहित अरु दंत निविषे लगे है तिन जिन के असंजो हिरणी तिन कुं मारे है। **आरनि** विषे अदृष्टा की कह वात है। **भावार्थ** जो क विषे राजा दिक समर्थ पुरुष है ते नी एक तो नय वं म कुं न माये वा कुं अयने सर एं रधि बज्ररि आकार रुक म होई ता को म मोरे अर्थी नि की रक्षा ही करे। बज्ररि आमो बोरी आ विदोष ना ए ता कुं म मोरें शिष्ट की प्रतिपादना ही करे। बज्ररि आ के धन म होई ता कुं म मोरें रंजन की सहाय ही करे। बज्ररि दंतां तिगां तीयां होई ता कुं न मोरें मान बो मे निर्यय ही करे। बज्ररि त्रि कुं न मोरें सृष्टि आदिकी हसा पुरुषार्थ का धार्य न करे। ऐसे एक एक वार्ता ज्ञाये ता ई ए ता कुं नी मय नं सुक्त ना ही सो हिरणी निविषे तो ए सर्व वात पाई ए है तिम कुं जी सिकार ये समं जाले मोरें। तो उभ के जोर नि की दया के से होई ता तें सिकारी पुरुष मह नि दय महा पापी जानने। **आगे** हिंसा का त्याग पृथु त विषे दृढ यो करि अमृत स्तेय का त्याग रूप वृत्त विषे दृढ यो कर मे को सुत्र कहै है। **ये** सम दे मरं प्र से अमृत धात का दि य रिहा रात लोक दय हित मर्जय धर्मार्थ यः सुवार्थ ॥ ३० ॥ **अर्थ** दुष्टता अमर्दनता अरु कपट अरु बोरी अरु प्रसन्न अरु मुनिह सा आदि पात क इत्यादि पाप कार्य निका त्याग करने तें दे अमृत हो प्र लोक संबंधी हित का उपार्जन करि द

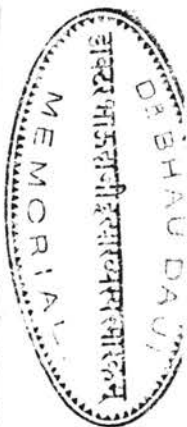
सोयोजनकरहेहे। धर्मअर्थजसमुपपुण्यकेअर्थजोसाकार्यकरिअसंभमतोऊंअरेहे। अथअन्यते
 यविषेगर्भितअसाइपनाईनियताविगपनांअसत्पवेलनामहापापपातककार्यकरना। इत्यादि
 कार्यतिनकासागकरनाभोग्यहे। इनकासागईसलोकपरलोकविषेहितकारीहे। जसेइनकेसागतेअ
 एवतमहावृत्तरूपधर्महेहे। वरुलोकविषेविष्वासहेमेंकरिधनउपाजनिअनिमित्तवनेहे। वरुविधि।
 रुधलोककार्यजोरनेतेंजसहेहे। वरुआकुलतामिटनेतेंवासुधकाकारनहोनेतेंसुधहेहे। वरुसिता
 वेदनीयआदिपुण्यकाबंधहेहे। जतेइसलोकपरलोकविषेइमकासागऊंहितकारीजानिहेनअनुमअसा
 कार्यकरे। सहांतर्कजोसुतीनिकेनीउपसर्गः। खआंअपनीरुकाकेअर्थहिंसाअमृतआदिपापक
 दावितहे। असासर्ककीएइससूचकहेहे। पुण्यउरुधकतपुण्यमनीदोपि। जोपदवेनिजवतिषमवेइ
 नसे। संतापयनजागदओषमशीतरश्मिः। यकोपुयअविदधातिविकसलहंती। अथहेजअहेतुमपुण्य
 करे। जसेपुण्यकीआतिसऊंजिसमारिषानवेष्ठाअसाजीउपद्वहेसोनाहीपडिहे। वरुवहउपद्वहेसो
 ईविनूतिकेअर्थहेहे। तंडहांदसंतरेषि। समस्तजगतऊंआतापदेनाअसासूर्यहेसोकमननिविषेविकास

१४

सपुलहीऊंकरहेहे। नावार्थ। उपसर्गद्वयकारणहेसोपुण्यवंगकंडपरेनेऊंसमर्थनाही। जेमेंसूर्यओ
 र कौआतापउपजोकेकमलनिकंपुलितकीऐतेंउपद्वहेसोपुण्यउदयहोयतिनऊंविनूतिकाहा
 ताहेहेसोअसहरेषि। जिसउपद्वनविषेवकाः। स्वतोमीअरकोरकेपुण्यउदयहेयतकेसिसउपद्वहीवि
 षेअदिककासागहेअतेधर्मीतापुरवहेसोउपसर्गआपनीधर्मऊंठोरिहुंसादिआपनपुनोईअहेहे
 । अगोंपुरुषार्थहेतेअनुमिऊंरिक्किउपसर्गनिअरकेऊंसमर्थयनोहे। जसेपुण्यकरिपरीपरोकिमुसि
 दिनाही। असीआतंसकरिसमाधमकरनेरूपअहेहे। जनेताउहेवदसति। अहरणवजसुभसेतिका।
 खोडगमिमुण्यः। वलुहरेरेरावलोवारण। इमअर्थहवाधितोपिकेअभिप्रायपरेसंगरे। अऊंमनुदेवमे
 वसरणमि। चिनुथापेरयं। जिहावहसतिनोमंडीअरवजुअपिआपनवसेनाविषेवाकरअ
 रसर्गागदअपररजोईअरुताकाअपुण्यहसहाय। अरिआवतहाधीपाईअसाअर्थकारिअनसहित
 हेनोनीइहेसोअोरनिकरिसंपादविषेहास्य। तातेनिअवकरियउपद्वहेहेसोसिंदारएमहायहे। व
 धानिः। कलजोपुरुषार्थहेताऊंधिकारहेभिकारहे। नावार्थ। जोसीवपुरुषार्थकविद्वयनिवारनानिजे

लवार्थ
 स्प
 मद्यवा

में आयनां पुरुषार्थ मध्ये में पाय करे है। ताको कहै है। पुरुषार्थ निष्फल है पुण्य कर्म है। ताही कानां मदे दे सोई
 सहाय है। वाको होतें पुरुषार्थ नी कार्यकारी हो है। उस विना पुरुषार्थ कि दु कार्यकारी नाही। तहां वेधवम
 त अये का उदाहरण कहा। देवता नि काई इवल वाने है तो नी देस नि करि संशं म विधे हास्य। अथवा या
 ही को जे नमत अये का अर्थ की जिए तो इंदुनां मां धि बाधर नथा है वने मंत्री आदिक का हृद सति आदिनां
 मधुसो है सो वहुत पुरुषार्थ करि संयुक्त नया सो नी रावण करि हास्य। तातें पुरुषार्थ कं निरर्थ कजां नि पुण्य
 कर्म ही कार्यकारी नां नि पुण्य का साधन करनां योप है। इहां तर्क जो हिंसा दिका साग कहि नां देवता नां ही
 ताका आचर्या करण वाले असे नां है। आते तिन की पहलें नई वार्ता माव ही मुने में अविधि। ऐसे क
 हता पुरुष कं उत्तर कहै है। नतीरः ऊल पर्वता इव नुवे मोहं विहाय स्वयं रत्नानां निधयः ययो धय इव
 आहत वितस्तेहाः। स्पष्ट करि यो नो नो विनु तथा विष्णु स्पष्टि यांतये। संतया विधिरंतां तिक चराः संतः
 कयंतोपमी। विरका अवती वर मुनि तिन के शिष्य उन के मार्ग विधे प्रवर्तते ऐसे केई सत्पुरुष अ
 वनी प्रत्यक्ष पाइए है। के से है सत्पुरुष आप मोह को छोड़ि ऊला चलवत। एही कानर्त है जे से ऊला चलप



२५

वत एही कं धरि रहै। अरिष्ट एही विधे मोह करि रहित। ते से संत पुरुष हित विधे लगई एही स्थित जीवनि को पोषे
 है। अरति न जीवनि विधे मोह करि रहित है। समुद्र वसर भनि के निधि है। अर नां ही है धम की बाजा जिन के ऐसे
 नी है। ते से समुद्र मोती आदि रत्न नि की बांनि है। अर धम की बाजा करि रहित है। ते से संत पुरुष सम्पद रत्न आ
 दि रत्न नि की बांनि है। अर धनादिक की बांनि करि रहित है। वहु रि के से है। आकाश वत् कि न कं करि स्पष्टि मिता
 ही है। अर विमुता जो परम महंता ता करि सर्व जगत की विधांतिके अर्थ होय रहि है। ऐसे आकास के ईयदाथ
 नि करि लिस नां ही। अर वडा पनां कर्म सर्व जगत का रहने का स्थान है। ते से संत पुरुष को ई परभाव न लिस नां ही।
 अर महं तयनां कर्म सर्व जगत का दुःख हरि करने का ठिकाना है। ऐसे केई सत्पुरुष अवनी पाइए है। जावया
 जिस काल विधे ई संप्रदा की एखनां नई है। तिस काल विधे यथा मुनि धर्म के धारक केई जीव रहि गए अर शि
 ष्या लावपी वहुत नए। तहां का फनें ऐसी तर्क करि जो मुनि धर्म कवि न वहुत है ताका आवरण ही दोषे काल वि
 धे नई वाने ही मुनि एहो पंथ केई आवरे बला तो दी सतानां ही। ताकं के है। अवनी केई मुनि धर्म का धारक
 प्रत्यक्ष पाइए है। तं धर्म का अनाव करि सिधलाधार को पुष्ट कोह कं करे है। कोई भेद काल विधे धर्मात्मा पोरे हो

ईश्वरनेहोईतौ धर्मका स्वरूप तो यथावत ही मानना योग्य है ॥ ३ ॥ आगे इन संतनिकरि आचर्या जो मार्गति सते जुहा
जो यहु लोक सो संसार की स्थिति कुंन देवता संता कहै है ॥ ४ ॥ पिता पुत्र पुत्र पुत्र मनि संभाय वृद्ध विमोहा ही है
तमुषल वम वा मुंन पदं अहो मुषो लोको मरत जन नंदं पुतरा तो न पश्यति आंतं नुम पहरं तं यम ममुं ॥
३५॥ ५॥ पिता तो पुत्र को अर पुत्र पिता कुं वृद्ध प्रकाश विग करि मोह ते सुष का है अंस जा मे असा ज पद प
वनें को वां वै है अहो वम आश्चर्य है मूरख लोक मरण जन मरुदा ट के म भ्रष्ट नय निरंतर सरीर को हर
ता जो यहु मम ता कुं ना ही अवलोकै है ॥ ४ ॥ ५ ॥ जे से को ई सिंह की दाह विषे आया पशु सो अपना सरीर को वा बत
जो सिंह ता क तो विचार ही करे ना ही अर कीड़ा करने का उपाय करे त हां व हा आश्चर्य है ॥ ता से जन्म मरण द
सा है सो मम की दाह है ता के बीच का काल विषे भ्रष्ट नय यहु लोक सो अपना आयु को हरता जो काल ता का
तो विचार ही करे ना ही अर सादि पद लेने का ना ना उपाय करे है सो यहु वन आश्चर्य है ॥ असा मूरख पना को
कोरिय म क चित वन रा वि विषय वां ता करनी योग्य ना ही है ॥ ३ ॥ आगे विषय नि विषे कारण मोहित जो जीव ता
के पुत्र का मारना आदि अकार्य की प्रवृत्ति हो है ता विषे कारण कहै सो कहै है ॥ ४ ॥ अंधा दयो म हन धो विष

१६

यंधी कते रणा ॥ बहु बांधो म जानाति विष बांधो न के न चित ॥ ३५॥ ५॥ विषय निकरि अंध की य है ॥ ५ ॥ हां हे तु क
है है ॥ अंध है सो तो नेत्र ही करि ना ही जानै है अर विषय करि अंध है सो का ऊ करि न जाने ॥ भावा य अंध पुरुष कुं
तो नेत्र ही करि ना ही स जे है अत करि विचार ना कामा करि मुम ना इत्यादि पांन तो भुकि पाई है ॥ अर जो
विषय वास ना करि अंध नय है ता के का ह हरि ज्ञान न होई स कै है ॥ विषय नि विषे ॥ स्व सो ता नेत्र निक
मिरी मे म न क वि विचारि ना मे सी घं दे ने का ना मु ना वि इत्यादि पांन से ने के कारण वने ॥ परंतु विषय वास ना
करि असा अंध होइ कहु कुं गि ने ना ही ॥ ता ते अंध हो ना निषधे तिस ते जी विषय निकरि अंध से आ अति
निषध जान मां ॥ ४ ॥ आगे कहै है किं चित विषय की वां ता करि निन की भूति प्रती प्रवर्ति है सो अंध वां ता
तो स व ही धाणी निकै है ॥ परंतु या वां ता करि को भवे मान वं चित पदार्थ की सिद्धि नई का ऊ के न म ॥ ५ ॥ आ
भा र्तः प्रतिपादिय मि निष्ठ म ए पम कस्य किं किय दा यति वथा वो विषये धिता ॥ ३६॥ ५॥ अहो धा
णी ॥ यह आभा र्ही आं ना बा न स व ही धाणी निकै है ॥ जा विषे सम सारे लो का की विभूति अण स धा न
रु स है ॥ जे धि लो का की विभूति एक धाणी के ॥ आयु परे तो उर धांन ना जे को न के कहा के ता य आवे ता

[illegible]

यमुपनयनार्थं होयताही कैदीर्घ आयु सुंदर कार्यवेनुसादिकहेयहे। अजानें पुण्यमनयाजोसे अधिकन
 यमकये अतिवेदधिभरोयतोउककुहीभहोर्गोसविचारकरिविबेकीपुखयाभयके कार्यविबेतोमंद।
 उद्यमीहेअरुडिधुहीपरनवकेसुधारिवेकेअर्थिअतिधीनिकरिविसेयनकरैहैं॥ ॥ ॥ आगेकोउपपन्नक
 रैहैंकियाभयकेसुखकेसाधकजेविषयपूर्वप्रमकेयताइसेआयवापमएतिमिविबेकाहेकमंदवसमी।
 होयताकासमाधानकरैहैं॥ ॥ ॥ स्वयोविषयेकसोवहुविषययेधनंडः सितामानचेष्टुमिद्वयाशुचिक
 तयेनाजिमानामृतं अज्ञातं करणेर्मनः प्रार्थयिष्ये ॥ ॥ ॥ कष्टं रागसौः सुधीस्तुमसि स नृविस्त ॥ ॥
 सिताखादन॥ ॥ ॥ ॥ कष्टवेदियतुमजेविषयनिनविबेसलसाइहैं। प्रभाकरिअंततड्यीजोसंसाइ
 नविषयनिनकुंदटिकरितेंअपवांसहनताइएअममलीमकीय॥ ॥ ॥ अरमनकेसेवकजुंइतिमकाआज्ञा
 कारीहैंयविषयनिविषेधसर्मा॥ ॥ ॥ जेसेपित्तजरवेद्युजोअलीताहिवस्तुमिक्तसवावदियरीतिमासेतेसं
 मुकुंदहैंतोउविषयनिनाधीनयायकमगाएसकविदियरीतसाधीनय॥ ॥ ॥ ॥ असेपित्तजरवावेउंअस्तु
 निताखादविपरीतजोसैतेमेंतरामजरकविदियरीतिखाहीअयाकउवेविषयअंमएविषयतिनविबेक

हृदयार्थे परंतु तो हिंसाद साक्षात् ॥ अर इन्ही कं मनोप जां निदं दता नया ॥ विषय निहाय करि महा दुखी जो तूं
सो अथना महंतता रूप अमृत सुविकरता नया ॥ जीविषया जितार्थ होयता की महंतता सर्वथा नरहे ॥ ॥ ॥ ॥
गं कहें हे कि विषया शक्त जो तूं अरकाज की वस्तुतिन विषे ना ही निवसो हे चित्त जाका सो तेरे न विवेकी असा
मर्थ जसे कहु उवत्या सो उवत्या जावनि ते तो तूं सर्व नही मया ॥ ॥ ॥ अनिवृत्ते जगत सर्व मुखाद वसिमिष्टियत ॥
ततः स्याद्वाक्यतो ज्ञेयं विन मोर्ते सु सो भवत ॥ ॥ ॥ ॥ निवृत्ति ते रहित जो तूं सो सर्व जगत की माया ताके अ
भीकार करवे की हे अनिलाय जाके सो जावनि ते तो ते कहु ही नवो मया ॥ अर तेरे मुख ते जो कहु व्या सो जो जन
की अत किते वया ॥ असें राऊर विसमिति गलता ज्ञाना निगलन सका ता ते वरे ॥ जावाये ॥ यह जीव असा विषय
आसक्त अर वृक्ष लुरहे ॥ जो सर्व जगत की विनृति अर विलोक के विषय या हिंसा मिहोय तो उदृष्टान मिटे ॥ प
रंतु जो कहु उव सो सो जोग दे की असामर्थता ते उव सो ॥ असें राऊर विसमिक्त नयिन सका ता ते उवरे ॥ ॥ ॥ ॥
गं कहें हे कि देव योगा ते कहु एग रूप मया हे चित्त जाका अर मोह लय मी की अनिलाया करि हिंसा की निवृत्ति
कं देवे हो ॥ असा तूं मोहि वासा द स्थ ही ते सर्वथा परिग्रही करता असा दिधावे हे ॥ ॥ ॥ साध्या जं कथ मण वा य वि

[illegible]

मनुष्ये अथो यकरि नारे तो मनी न प्रायगा से उताय मने को मारे पना ही रहने से। सो जे से लाभ के उताय वेक
 रि नो निक की हा मनी से से से जे मे परिग्रह संपदा तो गी पीठे न जगा सो यह माया मनी न जायगा के प
 रे लाह समा महे तो ही श्री कर नां यो मना ही न जनी तो हे ही तो ग्रह ही का डकं करे जिन वक्रव नो दिगज
 निराज संपदा नो गद ति न हंत जीत व मुक्त न। सो तं ड मार अरु स्या ही ते न जि जो उ न ही ते व ल ह हो ई। जे से।
 का डक पुरष के की वला गाथा सो दोय करि व जल नया। अर जो की कन गा वही ना ही सो सर्वो क ह हो। अर की
 वला माय करि धाया बाहे सो हा सपा स्या म क से य ॥ ॥ आगे कह हे कि सा सती निवा ग वि नृ ति ता के साधक
 निर्जय मुनि ही हे। ग्रह स्या व स्या वि धे मि र्वा ण क सा धन न करि म के यह दृष्ट करि दि या वे हे ॥ ॥ सर्व धर्म म।
 यं क रित क वि द्य पि द्ये णा णा त्म कं। का पे त ह य व त् करे ति व सि तं प्र हा ध मा ना म पि। त स्मा दे ष त वं ध र डु
 व ल नं स्ता नं ग ज सा य वा। म ति न म त वि वे हि स म हि रि तो गे हा श्र मः स र्व धा ॥ ३९ ॥ ॥ यह ग्रह स्या म हे सो स।
 र्व धा म जी व कं क ज रा क र्ता ना ही। जे से म त वा त्म प्रा द्मी अ ने क उ म त वे षा करे ते से यह ग्रह स्या म न
 दि वान जी व नि क के म ने क व रि त्त के हे। क व ज तो सा मा य क प डि क्तां यो स ह सं य क्त त य वा सा दि करि जी

१८

वं के व ल धर्म म ही करे हे। अर क व ड क स्त्री से व ना रि करि या य म यी करे हे। अर क व ड क पू जा प्र ना व ना दि या
 उ चे त्ता ल य निर्मा ण इ त्या दि का र्य नि करि मु ण्य पा य दो उ म र्द करे ता ते यह ग्रह स्या म आ धे का जे व रा व र ना
 त म मा म हे अथ वा ग ज स्ता न व त हे। वा रे की सी चे ह हे। ना ल य यह ग्रह स्या म जी व कं ह त क री ना ही। उ
 म न पु रु ष की सी चे ह हे। क व ड तो स वे षा द या स्य सा मा य क यो स ह ति न करि ध र्म ही उ पा र्जे। क व ड क स्त्री
 से व न शृं गार दि करि या य उ पा र्जे। अर क व ड क पू जा प्र ति षा य उ चे त्ता ल य निर्मा ण इ त्या दि का र्य नि करि वि जे
 य पु न अ म ण प उ पा र्जे हे। ता ते यह ग्रह स्या म म त जि वे री गो प हे। क ल्या ण का री ना ही। जे से आ ध जे व जी व ने सो
 उ ध र ती व ली जा य अर हा र्थी स्ता न करे मि र परि ध र्म जारे ता ते उ म त वे षा हे। ॥ आगे कह हे कि सा सती मो ष
 संप दानि स का जो सा ध क हो य सो उ प कारी कहि। यह ग्रह स्या म सि व संप द का सा ध क ना ही। ता ते या वि धे ज
 व का हि न ना ही। यह ग्रह स्या म मं व स्या अर या वि धे अ सि क हि ए ष ड ग व स अर म सि क हि ए सा ही ता करि
 लि ध नां व ति अर क वि क हि ए वे ती। अर वा णि म क हि ए वा पार सो म व रु ह ही के सा ध क हे। इन मे सु ध का सा ध
 क को उ ना ही। मे सा ह ट करि दि या वे हे ॥ ॥ क ह्यो स्वा म्य ती नि षे व व ड जो जं त्वा व ने नो नि धो किं कि स्ता

सिमुखाधर्मसुचिरं कथमननः तैलत्वं सिकतास्वयं भगवसे वां केव्या जीवितुं नन्वासायद निग्रहत्
 वमुपनस्तमेतत्तया ॥ ५७ ॥ देजी वत्तं वायहस्या अमविधे सुषके अर्थिक हाके शकरे है। धाम सुषना
 ही ॥ मंहन सुधाती जोती अरवी जवा दे है। अरय गधारण करि राजा निहं से वै है। अरलेष तवृत्ति करि तं उ
 म कर है। अरवाणि अरुति करि वन अरम सुष विधे वृत्त नट के है। आपं मते चरक मण कथ कर है। मोह य
 हाय तं वा सुरे त विधे तं हं दे है। अरु विधे तं जीवा वा है है। अहो धाणी आसा ह्य प्रहता के निग्रह तं ही तो हि सु
 धे है। वृत्ति करि सुषना ही थ हते न जां मां ताते अजा एक वापरि अम कर है ॥ जाव ध्य हस्या अम विधे अमिम
 सिक अरवाणि अरु उथा यसे सव दुष दाई इम मे सुषना ही। धेती कि तो प्रगट घेद मि जरि आवे है। सवा कने स
 अणम वसि विद्या की हीनता माने नंग स्व वर वर वर अदि सप्त वृत्ति का नय अरय ग धारी आजी वक निम
 म अण निहं से वै है ॥ मोह यनिकी से वा म हा कथ करी है। जीवक के अर्थि जीव ही दे है। अरवा धारी वापर के
 अर्थि सुष निमं जित जीव वे जाय है ॥ मोह वर क हि जिहा जरी म वि जाय है ॥ अरवा म नीर वन मे नट के है इम
 के दुष कहाने के है। आभा प्रकार की गंधि चिह्न करि सदा बाहु नही रहे है। अरलेषणी धर लेवा करने अति वेदा

[illegible]

का सुयके अर्थ अनुगभी होई हे सो इतमें रंदाव सुय नाही। एनवर दुय हाई हे यमं सार असार विषे सुय
 काहे का यह संसार की भाया वां स की काया समामे हे यह वे योप नाही न जिवे योप हे। आगे कहै हे कि
 देव योग ते काऊ के तुम माव सुय पास नया सो स्थिर मां ही सो यह वात दृष्टांत करि दृष्ट करे हे। खाति मम
 जना मया जनि मिला आर उनि वीहिणा। मयो ने दिग्मात ल विधित नः कृत्वा सुतु सं किना हार वायु दृगा
 रं योप हं सति सं मिश्रि वि। शुभं तं द्रविण सतो स महसा कटं विधेष्टे। निश्चय सेती
 मा विष्णु वरी विषा पूर्ण न होई। अदयागत कष्ट करि हे। को न पु स व न की आसा करि निवाण मो द न का
 अमा स कर ता न मा सो मो द ते सं ते सिध निक सी। तव यो द न हार आरं न के सिद्धि अरि वे कं च ऊ रि क ता ल
 यं सं यो प ता न मा। सो ध मे क ए ते सुख ज न निक सा मो जु मार। अर दुर्गंध की मि नि पं न्त करि सं मु न सो न
 लान सु कि या। ता ते य द उ य म क ह्य करे। उदय की चेष्टा प्र य ल हे। को उ ज मे में उ या व करि अ
 र्थ सिद्धि क सं सो पुं म उ द य वि ना उ या व की सिद्ध न होय। सोई कथन दृष्टांत करि दृष्ट करे हे। का जा क वि
 वातुर पुरुष ते जव की आसा करि प मो द न का अमा स की या मो यो द ते सिध निक सी स व वे द धिं न होय।

२१

अति ओं का या ता ल पर्यंत मो य। त ल रं द मा व म निक सा। सो उ मार अर दुर्गंध न ट नि करि म मा सो ऊ त काल
 स कि ना। त ल य क की मा ल हा ले य उ द य की चेष्टा प्र य ल हे। आगे कहै हे कि ये मा य दृष्टि करि
 अर्थ का मय जे न कां। अर स प र मो वी क र सु य मो स सं वि सी वा त कहै ना हि म अ वि हे। अउ दे दे ने व
 वं ते स तां म पि स सं य द। हि स दं व नि। पूर्ण। त व वि द धि सं धि कं। अउ म पि यो पी मा य के आ व र न।
 करि ता नो जे प य ल उ क सि उ म पु र प नि मु यो सु य लं वा नं ही वी हे। जे ते नि र्म म य म करि क वा वि दिः स
 मु द तां ही पूर्ण होय हे। अउ जे प य ल उ क सि उ म पु र प नि मु यो सु य लं वा नं ही वी हे। अउ जे प य ल उ क सि उ म पु र प नि मु यो सु य लं वा नं ही वी हे।
 ही वी वि दि से म य वा की वी वी नं। ओं क द वि म उ नि जे न म क सि र मु द जी ही पूर्ण होय हे। ता ते म यो वा जि
 त ध म ड की वृ षा म मि स वे य निः प रि य र्। हे त। आगे कहै हे को उ यो सी जे में हे जे मो क द क सं य द की
 बुद्धि होय सो मो उ म य पि द र य द य मां ध र्य सु र्ग नां न ज र सु ग ति स म क सा भ न हे सो वा जां ति मां ने हे मा क
 कहै हे। म यो य र मा म यो क सु रं य द ना मु यं। स न ज्ञान व उ मा नं म य ति र्भ मा ति। अउ म यो ध र्म सो
 ई दे जे वि वे ध ध र्म नां। म य सु र्ग मो ई हे मा वि वे द य नां ही। अर ज्ञान मो ई हे ना वि वे द य नां नां ही। अर गति सो

मुद्रविषयकैरे तातेतायकीतिरवेकाउपायकरिऐसादिधौवै॥ ४॥ आयातोम्यतिरुंमंगयराताशामरित्य
 रितः किंनोवेधिनमुत्तमेव नितरामेनातरितुंरुमः सातंत्र्यजगत्सितीरमदिरानीवेदुरंतांमकः शाह्यात
 गनीरवक्रविषमेमधेनवाधेनवेः॥ ५॥ अथदेमिचंरपरपरवस्तकाअनिलाधीनयसंताआसाहपुनदीक २
 येसाअनादिकालकाअनंतजन्मधरताअतिदुरतेआवहैसोतंकहाजजानेहैयहआशानदीऔरकाह
 उपायकरितिरीमजाय॥ याआसानदीकंआत्मग्यानकरितरवेसमर्थहै॥ तातेअवसीप्रहीस्वाधीनताकं
 प्राप्तहै॥ याआशानदीकंतिरियेनीतीरजाऊनातरिआसानदीकावेसाजवसागरकेमध्यहैगाकेसाहै
 नवसागरदुषकरिहैअंतजाकाऐसाजोकालरूपयाहताकाफासजोगनीरमुषताकरिअतिभयानक
 है॥ जावार्थ॥ जोगनृत्ताहपुआसानदीतामेतंत्र्यनादिकालतंत्र्याचलाआवैहैसोयकेतिरवेकंआत्महं १
 नकरितंहीसमर्थहैऔरउपायनाही॥ ज्ञानहीसंआसामिटै॥ तातेअवपराधीनतातजिसीप्रहीस्वतंत्रहै
 आसानदीकेपारजाऊ॥ नांतरसंसारसमुद्रकेमध्यहैगा॥ यासंसारसागरविषेकाअहंप्रभुअतिप्रबल २३
 हैसवाधुषकारेहीरहैहै॥ ताकायनीरमुषअतिविषमहै॥ जातकुंनिगलैहै॥ तातेसंसारतंत्रेवयाचहैनवसाग

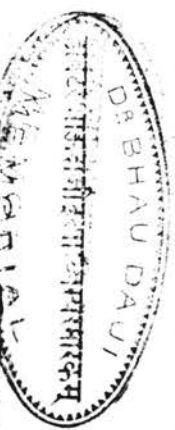
रकेमधनपरवाधैतोआसाहपुनदीकेपारजाऊ॥ ६॥ आतंकहैहैकिरिषयकीचंताकरिआकुलजोसंसो।
 अयोपहृकुंनोमीवै॥ ७॥ आशानदीकंउत्तिरियेनिर्गमकोरहैसंसारोपविशुदायनिजिलम
 सजगत्तंत्र्य॥ जोकिंतवशांतिरतिनववायाहृदयकमिमा॥ संहंतिधीरवेरिपुत्राथीजियंतीह
 रे॥ ८॥ अथ॥ यासंसारविषेविषईजीवमिकेमुहलकरिमोगकरिजेपहृयंतांमेनिमकुंतंरुद्रिअनिता
 ककरैहै॥ ऐसागानीनको॥ जानिएकिमेंहैरनवाया सोएतोलेकंअनंतवारमोगर॥ अरअनंतजीवनिअ
 नंतवारजोगिए॥ सोतोहिइनकीसामआवै॥ पारइतिहैतथाअपनीउत्तिरिहृगावर्णहिइनविषयनिकरि
 तेरेतथा॥ औरजीवनिकेकहासंतिरुवकुंनोही॥ जोलगायहृदयसाअपराधकेसमहृपुषवधैतिनिक १
 सेनाकेवैजयंतीकरिअतिअनाममानजो॥ आसाहिसंसाहैतेनामतेरेपुंतेनाई॥ ९॥ अथ॥ सतिवम
 लआशाकापरिसामोहै॥ जोलगायहृदयकीसेनाकीअपमामयहआसाहृमहै॥ नैआसंतिक
 हा॥ आशोकापसुविषईजीवमिकेमुहलकरिमोगकरिजेपहृयंतांमेनिमकुंतंरुद्रिअनिता
 ककरैहै॥ ऐसागानीनको॥ जानिएकिमेंहैरनवाया सोएतोलेकंअनंतवारमोगर॥ अरअनंतजीवनिअ

कामहमेवन करे यह तो कुं उचित नाही ॥ आगे कहै है कि ता आसा के नत जताय का तं ओर कहा की या चो है
 ॥ ३॥ मुक्त न विन वांशु ने गि विषम न जोग न बुनु कुं मुं शं संमत्ता पि स्वमस्तर्जति करुणः सर्व जिघां सु मुधा
 यद्यत्साधु विगर्हितं हन मतिस्तस्मै वधिष्ठा मुकः काम को धम हण्डा दत्त मनाः किं किं न कु यो डनः ॥ ४॥ अर्थ
 करे नाग समान प्राण निके दुरा हरे य नो पतिन के जोगि वे कहै अत्यंत अनिला धा है जो के असा जो तं सो लेन
 हार न व विगारि अपे हि स मरण मरि करि म व सु य द्या धा तता न था कै सा है तं आ प वि वे की धर लोक के न य तं
 रहित निरुद्धे क गोर परिणामी जो जो साधु नि करि निर्दिष्ट वस्तु त ही का अनिला धी न या धि कार का मी पुर धनि
 कुं काम को धम हण्डा ह नि नि व सिं दे म न जा का सो प्राणी क स कहान करे ॥ ५॥ अर्थ जो करि नाग समान विष के नरे
 तिन सं ते अति अनिला ध करि जगति का वं ध की या धर लोक का न य अर जी वि नि की द या न करी सो वृष्ण अप ने
 म व सु य दा ते धि कार हे प्र य मु दि कुं जो जो वस्तु साधु नि ने दी ता ही का अनिला धी न या काम को धम हण्डा न यं कर य
 है ॥ ६॥ इन के व सी नूत न या क स कहान अन र्ध न करे अन र्ध के मू ल विषय क षा य ही है ॥ आगे कहै है जगत्
 की स्थिति विग नं गुर ता हि न दे वे ता के नो ग नि वि धे वां डा हो य ॥ ७॥ अर्थ स्या ज नियः स ए व दि व सो द्य स्य स य

२४

दुते स्थैर्य नाम न क स वि जग दि दं क लानि लो भू तिनं आ स त्रं ति म षा स प स्य सित रं प्र त्प रु म स्ते लो न किं ॥
 ये ना वै व मु कु र्मु कु व कु त रं व द्द स्य से आ प सि ॥ ८॥ अर्थ ॥ हे आ त तं त्रं ति त जिक हा आ धि न करि य त रु न दे
 वे है यह जग त का ल रूप प व न करि निर्म ल करि ऐ हे का कु के धि र ता नं म मा त्र ही ना ही ज दि व स का य ना
 त हो य है सो ही दि व स अस्त कुं प्रा स हो य है ता तं त्र के न का र ण या जग त वि धे वा रं वा र अ सा वां धि उ मे है ॥ ९॥
 अर्थ ॥ ५॥ संसार का चरित्र का गुण गुण रं जे य र्या य धि रे सो ना स कुं प्रा स हो र ॥ जे से दि व स के आ रं त्र वि धे
 प्र ज त हो य अ र व ही दि व स सं धा स मे अस्त हो य यह जग त का ल रूप प व न करि चं व ल है बाल व द्द स व ही
 यह जने है तो हि कहान स के है तं य सं सार अ सा र वि धे आ सा वां धि का हे कुं उ प ण करे त्रं ति त जिक रि व स्तु क १
 स्व रूप य धा र्य को न जाने वि न स्वर व स्तु धि धे क हा वां डा करे ॥ १०॥ आगे कहै है कि या प्र कार जग त के मुरु प कुं रु
 ण नं गुर न वि ध प्र तां जो च से ते ध तु र्ग ति सं सार वि धे अ ने क प्र कार उ य नो गि ॥ ११॥ सं सारे न र का दि धु स्मृ ति प
 धे णु को ण का री ण प तं ॥ १२॥ खानि प्र ति से वि ता नि न व ता ता मे व मे वा स तां त ता व त्प ति र मि त सि ता पां गै र नं ग
 यु धे र्दी मा ना हि म द प त रु व न म त्वा म वा नि र्द नः ॥ १३॥ अर्थ ॥ हे जी व ते य सं सार वि धे न र का दि क ये नि मे अ

संत दुष्योग ए जिनके स्मरण किए बाकुलता गुण जै सो उन दुष्यनिकी बात तो हरि हर ही ध्यान र भव ही विषे निर
 धनता का धरन हारा तं नाना प्रकार के नोपानिका अनिलानी का म करिय ए जै सीतिन की मंद हाम्प अर कांम के
 वां एतिन के ती कृण कटा कतिन करि वे धाम ता रहे के मारे बाल चरु की सी द सा कुं प्राप्ति नया सो दुष्य ही चितारि
 । ना बा धं अनादिकाल का अवि वे की हे सो कृण जंगु र जात की माया सं अनुगम करि संसार विषे नर कनि गो
 दाहि में अने क दुष्यनिकी नोग न हार नया सो उन दुष्यन की बात तो हरि हर ही है । जिन का चितवन ही कि ए असे
 त कले सव प जै अर इ नर न व अति दुल्ल ज पाया ता ऊ में विषे दृष्टा करि सुख ले मन पाया । कांम ते ती कृण बा
 ने म दो म त ह्य नि की कटा कतिन करि यी सा रहे के नु न से आते चरु की सी द सा कुं प्राप्ति नया सो इ ह चितारि
 रि जगत की बां बां ते निर वर्त रहे नु जगत की बां बां म ग दृष्टा वत है । जै में को भ म ग व न विषे दृष्टा तुर जा म ली कुं ज
 ल जां नि वे सा सो जल न दैषे द कं प्राप्ति नया तै में विषय दृष्टा करि यी डित क न क कांम नी आदि वस्तु नि कुं
 सुख के कारण जं नि दृष्टा अनिलानी नया । तहां ले समा दु सुख न ही । कहें तो ए य दार्थ दुष्य ही के कारण हे का
 ऊ को तो क ह्य ही न मिले ता क विषे द भिन्न है अर क दा चित का ऊ कं क ह्य क मिले तो मनो वां चित न मिले ता



२५

करि मा कुल रहे । अर क दा चि को नु मन की बा ही ह्य सु मि नि जा व तो छिर नां ही । ता ते स दा चि वा तुर ही रहे अर ए
 इंद्री यं चूं ही जी व नि हूं दुष्य ही है जि नि अति अ मृगा करि ए क र इंद्री का विषय मे या ते ज प ति ह्य न
 न ए केश अर न म कुं प्राप्ति नया । सु धी तो स पर म इंद्री के अनुगम करि का ग द की ह्य ए किं सा दान जां नि
 ता के निकट आया सो धा डे में य हा सो य रा धी न ह्ये नाना दुष्य नोग व ता नया । अर स ना इंद्री के अनिलानी
 करि मी न धी वर के जाल में य हा सो य रा ही तिं ग या । अर ना सिका इंद्री के व सि धे य धु मर क म न की वा स ते न
 सि न न या सो य रा स मे क म ल ह्य डित न या ता मे य ह्य कि म र ए कं प्राप्ति नया । अर न इंद्री के विषय का
 आ स क हो य प त म ही य क की सि धा कुं म नो रुं जं नि य हा सो अ स ह्य म य । अर का इंद्री के विषय की च
 हितें रि ए र ए क अ नु रा गी तो य मि कार के क ए ते जं ए स ज ता न या । म ना सि ए क र इंद्री के विषय से द
 न ते य द सा कुं प्राप्ति नया । अर नो य चूं ही इंद्री नि के विषय से से तो अ व न य में दुष्य वा वे री य ते । ता ते न विषय नि
 जा व त जि सु य का कारण धी न रा ग ता व डं अं धी न करि । ॥ अगे क हे हे कि सं सा र विषे म रि भु मा कर
 ता जै से व रि भु अ य के प त ह रे म ता तं क न धे रा कं प्राप्ति नया । ॥ अ नो स सि दे य धा सु म न व रे हो

सिकोपदिहान्। साध्यायाधिरसीप्रहीणचरितोभ्यसादात्मनोयचकः। मत्सुनतिमुखांमरोधिजरसाशस्यो
 मिजनिमवृथा। किमतोसमिकिंहितारिहिमेकिंवासिदृष्टहः॥५॥५॥ देअनंतजन्मकेधरणहारेअ
 शानीजीवत्तयासंसारविषेअनेकयोनिमेंउपआमहादोषरूपधातुअरमलतिनकरियुक्तहेदेहतेरा
 अरकोधमानमायालोचकाधारकसंमनकीचिंताअरतनकीवाधिकरिपीडनहे। हीनाचारनेअनरुन
 रुमअयोपआचरणतिनकरिदुगचारीहे। आयकविगतहाराहे। तंजममरणकेडुषमेंपस्पादेअरकरियु
 स्तहे। वृथानमतेहोयरदादेकहाआत्मकलाणकाशनुहेकलाणविषेबांधहेवांछाते॥५॥५॥ संसार
 विषेसरीरकाग्रहणकरिजीवजन्मधरेहे। सोसंसारकामूलकारणबुद्धिअइमीजीवनिकेअनादितेहे। तते
 देहविषेआत्मबुद्धिकरिनेवेनवेसरिधरेहे। सोनारकीनिकासरीरतोमहाडुषरूपअनेकरोममईहे। अ
 रदेवनिकासरीरगारहितहेपरंतुमनकीचिंताकरिमहाडुषरूपहे। अरमनुष्यतिर्यचनिकासरीरअनेक
 रोगनिकानिवासत्रिदोषरूपसधनुमईमहाअप्रयविधहे। तिनमेंमनुष्यकासरीरमहामनीनआदिकहिए
 मनकीवथाअरबाधकहिएसरीरकीपीडातिनकरियुक्तमहाडुगचारीजीवनिकाघातीमिरदेपरिणामी।

म१

२५

अथापराधीपरधनकाहृत्तहासापरकृपाकतमलउरायकआरंभपरिणहीपरविषमसंशोषी। नेनेदेहते
 कहामेअने। तंकोधमानमायालोचकाधारकसंमनकीचिंताअरतनकीवाधिकरिपीडनहे। हीनाचारनेअनरुन
 रुमअयोपआचरणतिनकरिदुगचारीहे। आयकविगतहाराहे। तंजममरणकेडुषमेंपस्पादेअरकरियु
 स्तहे। वृथानमतेहोयरदादेकहाआत्मकलाणकाशनुहेकलाणविषेबांधहेवांछाते॥५॥५॥ संसार
 विषेसरीरकाग्रहणकरिजीवजन्मधरेहे। सोसंसारकामूलकारणबुद्धिअइमीजीवनिकेअनादितेहे। तते
 देहविषेआत्मबुद्धिकरिनेवेनवेसरिधरेहे। सोनारकीनिकासरीरतोमहाडुषरूपअनेकरोममईहे। अ
 रदेवनिकासरीरगारहितहेपरंतुमनकीचिंताकरिमहाडुषरूपहे। अरमनुष्यतिर्यचनिकासरीरअनेक
 रोगनिकानिवासत्रिदोषरूपसधनुमईमहाअप्रयविधहे। तिनमेंमनुष्यकासरीरमहामनीनआदिकहिए
 मनकीवथाअरबाधकहिएसरीरकीपीडातिनकरियुक्तमहाडुगचारीजीवनिकाघातीमिरदेपरिणामी।

करिआकलहोयहै ॥ जेमेंजलकेसमीपविषमजोकीचताविषैफसाडलनवहावलधकहजोगधेहेकैसेहे
 एइंदीउयजोपीपमतिताविषतीवजोसूर्यताकीतमायामंमजेकिरणतिनिसमानआतापकारीहै ॥ जेमें
 ॥ जेमेंरियाकीवराधनहरीपीधमकेसूर्यकीप्रज्वलितकिरणतेसीप्रज्वलितएइंदीतिनकरिवरीहेइहां
 जकेअसायहप्रविवेकीआणीमोमनवंचितवस्तुनिकुंनयायआकलहोयहै ॥ जेमेंवहाडुवेलधनधउध
 तुरजलकेअर्थिमोवरादिककेतीरगाथासोजलतकतोमपहोआआरवीचिहीमेकसाकेअनोपावेहेतै
 सेंविषयकेअर्थिउयमकरिमनवंचितविषयनिकुंनयायकेआरूपहोयहै ॥ विषयवृत्तामहाकेअकारीहै
 इहइहांआनाधतहीतेअसमें ॥ २॥ आगेकोउप्रकारहैकिजिनकंमनवंचितविषयनिकीयासिनाह
 तेतोकेअनोपावेकहेसोयमांसापरंतुजेइउप्रकारकेदिकतिनकेतोविषयपूर्णहैसोकेअनिकीमां
 तताहोयमीयाजांतिप्रकारहैताहिममजावेहै ॥ ३॥ लघेधनोहलसग्निःप्रशाम्यतिनिर्मिधनः ॥ कालसु
 नयथासुचैरहेमोहप्रिरुक्तमाय ॥ ४॥ अहोमवजीवहोअग्निहैसोइधनकेयोगतेप्रज्वलितहोयहै ॥ २॥
 अरइधनकेवियोगतेबुजिजाय ॥ अरयहमोहसुभगनिअतिप्रबलहैपरिग्रहसुभनकेयोगतेबुजा

२१

रूपहोयहै ॥ अपरिग्रहकीअमितेवाकलतारूपहोयप्रज्वलितहै ॥ यहोउप्रकारेप्रज्वलितहै ॥ तातेमोहप्रिस
 मानओरअग्निनाही ॥ ५॥ ओरअग्निहैधनकेयोगतेप्रज्वलितहोइ ॥ अरइधनकेवियोगतेबुजिजाय
 ॥ अरयहमोहप्रिरुक्तमाय ॥ ६॥ परिग्रहकेघटतेआकलतारूपहोय ॥ अवअसाता
 केवियोगतेकमनमितेनधुधीहोय ॥ अरसाताकेयोगतेकबुमितेनवृत्ताधतीजाय ॥ सोसंरुजाररुजा
 रमंजाघयाजांतिअधिकअधिकवदतीजाय ॥ संतोषविनासुखनाही ॥ तातेदोउप्रकारमोहप्रिदाहकहीहै ॥ को
 ईविषकीजीवसांतभावरूपजनकरिआहिनपममांभनवसुधीहोय ॥ ७॥ आगेकहैकि विषयसुखकेसाध
 कजेखीआदियदार्थतिनविषयवर्तिआणीनिकेमोहकेमहातमतेहैसोमोहकंनिंदासुपवर्णनकरेहै ॥
 किंकर्मीएपनिदन्त्रीकरतराडः कर्मगम्युद्गणः किंडुः स्वज्जनावनीविलसतेवीनेदिदहधिरः किंगज
 श्मभूरैरवरवाभाकर्णयनिर्नयनयोनायंतजहातिमोहविरितांमिदामजडांजनः ॥ ८॥ कहाण
 पकर्मरूपमुदगयाजीवकेमर्मकुंनेरतासंताअसंतनयकारीनाहीसर्वथाजयकारीहै ॥ अथवाकहोउ
 धरूपअगनिकीपंक्तिकेप्रज्वलितहोनेकरियाकादेहनाहीजरेहै ॥ अपितुजरेहै ॥ अरकहागाजताजोयम

ताके वदितुनिके नयं कर सव्य ह नो ही सुने हे सदा ही सुने हे को न करण यह जो हं जन अक ल्याण रूप जो मो
द जनित निष्कारित जे हे ॥ १ ॥ जो महा निष्कारित संहार मो उगने कारण यह जायत होय हे जो को उमुन
रुकी मर म की गोर दे तो निष्कारित रहे ॥ अथवा अग्नि का आत्मा पदे हंडं जागे तो निष्कारित रहे ॥ तथा वादितु ।
निके नाद सुने तो नींद जाय ॥ सोय ह अविदे की जनन पकर्म के उद्यरूप मुनर नि करि मर म की गोर मारि
एहे ॥ अरु दुष रूप अगनिक रिषा को दे हं जरे हे ॥ अरु आज यह मूखारण शय्य म के धा जि ज निके नाद सो
उ निरंतर सुने हे तो उग्र ह अक ल्याण कारणी मो ह निदाना ही त जे हे ॥ ॥ आगे कहै हे कि मो ह जनित निष्कारित
स ते यह जीव दुष रूप असार संसार विषैर नि करे हे ॥ ॥ सदा त्त मुनि सदा मुन वनं धा क सहुः कर्मणो ॥ आण
रः समं अति उद्विग्न नि निर्गदं स्वयं बंधनं निष्कारित मरण म जे छति जयं सव्य म निष्कारित ॥ ज मि न ज न म जिते त
था पिर म ते स जे विधि उं प ह ॥ ५ ॥ अथ ॥ हे ज न म रण के धरण हरे संसारी जीव ते रे धा संसार विषै निष्कारित सेती
एते दुष हे ॥ तो उं संसार ही विषै अनुगा करे हे सोय ह अविदे की ॥ को न को न डय हे सो चित्ता रिषय म तो म २८
हा के अका क म रण शरीर ता सं ते ग सं भू हे ॥ सदा देह सं देहं तर ॥ मन करे हे अरु पाप कर म के कल उष सदा जो ।

[illegible]

रोगातहापाईएहे अरपरस्परदुषअरतीजेनरकलाअमुरकुमारनिकाडुषसोकहालाकाहिरासरिदुषहीक ।
 निवासहे पापकर्मकाफलकेसकहाजोगवना अरसमेसमेकर्मकाधकतिनिकरिगाहाबंधना अरनिधावि
 धेवेसुधियोना आयुकेअंतमरना एतेदुषनिमेसुषमाननासोवनाअचिरजहे तातेइनदुषनितेउदासहोयसुष
 कामूलजेजगतेंउदासीनतासोईअंगीकारकरो ॥ ७ ॥ आगेकहेहेजासरीरसुंत्तएकतामानिअनुरागकरहेसो
 केसाहेयहदिषावेहे ॥ ८ ॥ अस्थिस्थूलसुलाकलापघटितनबंधिरास्नायुनिःश्रुमावाहितमभ्रसांध्यिशितेधि
 मंसुगुमंखले कर्मरातिजिरसुखनिगलालमंशरीरालय कारागारमंवेहितेहनमतेधीतिवयाभाकथा ॥ ९ ॥
 ॥ १० ॥ हेमिरबुद्धियहशरीररूपधरतेरावंदियहसमानहे यक्षंदुषाधीतिमतिकरेकेसाहेशरीररूपवंदियहअ
 स्थिररूपस्थलपाषाणतिनकेसमूहकमिषाहे अरनसाजालरूपबंधनकरिवेद्याहे अरधर्मसुंआकाद्याहे
 अरकधिरकदिसजजोमांसाकारिलिषहे अरदुष्टकर्मरूपवैसीनिकरिवाहे अरआयुकर्मरूपमाटीजा
 गीवेरीतिनकरियुक्तहे ॥ ११ ॥ वंदियहसमानआरदुषकाकारणमांहा सोवंदियहतोस्थूलपाषाणतिकेसमूहध
 रघडिगहे अरसरीरहाफनिकरिघमाहे अरवंदियहबंधनकरिवेदिगहे यहनशाजालकरिवेद्याहे अरवहऊ

अपरिस्त्रुतावादिर्न हे ग्रहचमकरि आवादिर्न हे अरुधिरसहितमासकरि लीप्यहे वह दुष्टनिकरि रवादि ग्रह
कर्मसपुष्टवेरनिकरि रवाहे अरवद्विरीनिकरि युक्तहे सो असा कोन कुबुद्धिहे जो वंदिग्रह तं प्रीतिकरै तं महानि
रबुद्धि जो शरीर रूप वंदिग्रह तं प्रीतिकरै तं महानि रबुद्धि जो शरीर रूप वंदिग्रह तं प्रीतिकरै हे सो तो हिया संप्रीति
उचित नाही आगे कहै हे कि शरीर तो वंदिग्रह समा नवताया अर अरज वसुधर कुटं वातिक जिम संप्रीति तेरी हे मे
के संहे यह दिखै हे अशरणमशरण बोध धूमलं चिरपरिचित दारा दार माप नृणां दिपरि मृत शत पुत्राः शत्रु
वः सर्वमेतत् स्य जतन जतन धर्म निर्मलं सर्वकामा ॥ ५७ ॥ धरतारा सरण रहित हे जहां तो हिके उदवावन सर
नाही अरवांधवबंध के मूल हे जासुं तेरा अति परिचय हे ऐसी जो सूसी आपदा रूप धर का दार हे अरण्य पुत्र स
बु हो यह सर्व परिचार दुषही का कारण हे ऐसा हं विचार करि इन सब निकुंत जि जो सुष का अर्थी हे तो निर्म
ल धर्म कुंज जि ॥ भावार्थ ॥ या संसार असार विषये ते संसार कह जा मां अनेक उपाधिका मूल हे अरवांधवबंध ही के का
रण हे इह नव पसज वडुष दई हे अरतं श्री कृं निपट निज जाने हे सो विपरीति के घर का दार हे अरण्य पुत्र अति
प्रिय जाने हे सो तेरी बेरी हे जमेत वतो स्वधका जो वन हरे अरवाल कहो यत वमिष्ट जो जन हरे अरसमर्थ हो यत व

DR. BHADU DAS
MEMORIAL

30

[illegible]

महापुण्याधिकारिचक्रवर्तीदिक निकैही मास्वतीनरहे। सो ओर नकैकेमें रहे। ॥ ८॥ आगे कहै है मासरीरविषे
 राजनकीकापटवांधा सो यह शरीर कैसाहे अरयाविषे तंके दुष नोग बहे। ॥ ९॥ ही सो भयाप्रदाता रिदासहरग
 कीटवत। जन्ममृत्युसमाप्तिषे शरीरेवतसिदसि। ॥ १०॥ अर्थ जेमें लागीरहे होउ ओर अगनिजाके असी जो ए
 रंमकीलकडी ताके मध्यप्रान्तया जो कीट सो अतिषेदयिन होय है। तेमें ताकीटकी नाई या सरीरविषे तं अ
 तिषेदयिन होय है। यह सरीर जन्ममरण करि व्याप्त है। जावार्थ अरंमकीलकडी के दोउ ओर अगनि लागे न
 वमध्यप्रान्तया कीट कहां जाय अतिषेदयिन होय मरै तेमें जन्ममरण करि व्याप्त यह सरीर ताविषे तं कीटकी नाई
 अतिषेदयिन होय जरै है। ताते सरीर तेममत्त्वतजि जो वज्ररिसरीर न धरे या सरीर तं अनुगामोही न वे सरीर धी
 रेवे का कारण हो असा जानि महा मुनि देह सुने हत आ। ॥ ११॥ आगे कहै है कि या सरीर के अधित जे इंद्रीतिन के वसि
 होय कहा अनेक प्रकार के कलेस नोग बहे। यह सिष्य बहे। ॥ १२॥ नेत्रादि चरचोदितः सकलुषो रूपादिविश्वाय।
 किं प्रेक्षः सीदसि कृत्स्नित्यतिकरे रं हस्य लंघं हयम्। नीला तानि भुजिष्यताम कलुषो विध्वंसि स्यात्तान् आ
 त्मानं धिनु सत्सु रवीधुतरजाः सहति निनिर्वृत्तः। ॥ १३॥ हे जीवितं कर्म निके उदय तेने अदि इंद्रीनिका प्रेक्षा।

३१

अतिबाहुल्यजगत्प्राविमस विषयनिकै अर्थ कहै षेदयिन होय है। इन इंद्रीनिका किं करही होय रखा है
 अनेक षेद अचरण करि अत्यंत पापनि कुं वटावता संतापि विषयनिकं नोगि करि तं अनंत नव दुषी जया।
 अव आहुल्यता तजि गानी होय समस्त विषयनिका त्याग करि ध्यानामृत ते आत्मा कं पुष्ट करि सुखी होऊ
 मोहरज कुंधोय उतमवृत्ति करि निर्वृत्ति होऊ। जावार्थ यह आत्मा कर्म निके उदय करि शरीर कंधारे हो अ
 र शरीर के योग ते इंद्रीनिके वसि होई विषे निकै अर्थ बाहुल्य होय है अर अनेक दुर्गचार करि अत्यंत पाप
 निकं वटावै हो विषयनिकं नोगि क्योनिमें परै है। अर जो क्लम वाममलिनभावतजि आत्मा कंध्यान अमृत क
 रि पुष्ट करै है। सो महा सुखी होय पापरजरहित उतमवृत्ति करि निर्वृत्ति होई है। ताते संग्राम वांन होय संसार
 ते निवृत्त होऊ। ॥ १४॥ आगे को भुषण करै है यतीनिके निर्द्वनयने ते के संसुष की बासि होय ताहि कहै है जगम के
 जीवनि धन अरु धन वांन सब दुषी होय तीही महा सुखी है। ॥ १५॥ अर्थ तो धन मया पधनि नो पध विस्वपतिः
 कश्च सर्वेपि सीदंति परमेकः सुखी सुखी। ॥ १६॥ परायता सुखादुःखं स्वायत्तं के वनं वरं अमथा सुयतामानः।
 कथमास्तं सपथिनः। ॥ १७॥ अर्थ युग जे निर्द्वन सव वान निकै अर्थ ते तो धन विनां महा दुषी है। अर जे धन वंत

हैं ते उर निविनां रक्षा करि महा दुखी हो जगत के सब जीव के दारुण हैं निश्चय करि विचारि यत्नो एक सुखी कहि सं
तोषी मुनि ते दुख महा सुखी हैं पराधीन सुखी सो केवल स्वाधीन दुखी सो कहें। यौन होय अर-अमया होय तो तय।
स्त्री हे मुनि ते सुखी सो संताप के से पावे। नावार्थ जगत विषे जे जीव हे ते सब दुखी ही है जे निर्द्धन हैं ते तो सब सामग्री र
हित है ताते आयु दुखी माने है अर जे धन वां न है तिन के दृष्टावटी अर दृष्टि ना ही। मोट्टि निविनां सुख काहे
काने दुख महा दुखी हैं। शास्त्र में सुधी नाम मुनि का है और काना ही। जगत का सब सुख पराधीन है। सो पराधीन सुख।
नै स्वाधीन दुख ही सो कहें। पराधीन यने में सुख माने है सो धृष्टा है। अर जो स्वाधीन यना में सुख न हो ततो महा तप के क
रन हारे मुनि सुखी सो माना म को पावे। ताते इह निश्चय नया जिन के आसा ते दुखी। अर जिन के आसा ना ही ते ही सुखी
एस मारी जीव सब ही आसा के दासा इन्द्रिय नि के आधीन ताते दुखी है। अर मुनि आसा के त्यागी मन इन्द्रिय नि के जीत
न हारे ताते सब सुखी है ॥ आगे कहै है काव्य देय करि मुनि नि के पुणनि की प्रसंसा करे है। ॥ यदेत तत्त्व बंद विहर
णमकार्य एवमसंनसहृद्यः संवासः श्रुतमुपसमेकप्रपफलं मनोमंदस्पंदबहिरपि विद्यति विमृशान् न जानेक। ३२
स्येयं परिणतिरुदारस्य तपसवत् ॥ विरतिरनुलाभा चेच्छित्ततथा करुणायामतिरपि संदेकांतध्यातव्यं च विने।

दिनी। अनसन तप आर्या धांते यथोक्त विधानतो। प्रवृत्तिमहतांतात्पस्येदं फलं तपसो विधे ॥ ६६ ॥ अथ मुनि नि क १
कहा मदि मां कहि जिन के स्वाधीन तो विहार है। अर दीन तारहित जो जन है अर मुनि नि के संगम में निवास है। शा
त नाव रहै कलजा का मन का वेग मंद होय गगन सो आत्म विचार ही में ली भै। चिरका ज आत्म विचार करता कव
ऊक बाटु कि या विषे आवै है। ऐसी मुनि की परम दसा लई सो हम जानें यह को न मे उदार तप की पराणति है अ
तुल्य वैराग्य अर सास्त्र का चिंतन सर्वोत्कृष्ट सर्व जीव नि की दया ॥ अर एक संवाद एक नय का हव यह सोई महान्
धकार ता के विस्तार कं ने दन हारी सूर्य की किरण समान है बुद्धि जिन की। अर अंतकाल शास्त्रोक्त विधिकरि अन
सन धारि सरित जनां एक्रिया सतपुरुष नि के अमृत की विधिक फल ना ही। महा तप के फल है। नावार्थ सब ही ज १
व पराधीन है इन्द्र नि के वसि है। जो मन ऊं करै तो कामना अर्था अर साधु नि का विस्तर स्वाधीन है। जिन के को न काम
ना ना ही है। मुनि कुं वशी रिति विनि एक स्थान क न रहनां। एक बोर रहै लोक नि ते न ह बंदे सो वैराग्य नाव की बुद्धि के
अर्था विस्तर करे अर दीन तारहित जो जन करे। जगत के जीव नि का जो जन धीन तारूप है। जे दरिद्री हैं तिन के
तो घगट दीन तारूप है। धर्म में तो सामग्री ना ही पर धर ते लाये कार्य सरे सो मिजना क विन अर जे धन वां न है ते ना

नावसुनिके अनिलासी सो देस काल के योग ते कबु पूर्ण होय ता ते दीन ता ही है। एक मुनि ही दीन तारहि ते है जिन
 कै लान अलान रस निरस सब समान है। अर मुनि कुं मुनों के संग में रहना ता समान को उ उच्छेद ना ही। लोक नि
 के ऊ संग ही। दमा ऊ संग तो अस्त्री की संगति है। जा करि काम को धादि उपजे अर साधन की संगति ते काम को धा
 द विजय जाय। अर लोगानि के ओर अभास लगि रहे है। साधुनि के श्रुत ही का अभास है। अर सास्त्र के अभास का
 फल परम शांत भाव सोई जिन के धृगट नय है। अर मूढ लोक शास्त्र के अभास करि मवो मत होय है सोय हव
 मावो छे। मुनि के मन का विगम द होय गायो है। लोक नि कामन म हा व च ल सदा वा द्य व सुनि ही विषे नट के है। मुनि
 न कामन आत्म विचार विषे लगि रह्यो है कव ऊंक वा द्य सुन क्रिया विषे ऊ आवे है। असुन क्रिया का नाम न ही। इह दसा
 मुनों की नई सो में न जाव को न से उच्छेद तय का फल है जिन के अमुन वैराग्य संसार सरीर नोग ते अति उदास जात।
 के जीव सब ही शाही है जिन के गगन दिव्य का मखि उदय है। अर अष्ट तसम्पद ही अनंत मुवंधी के अभाव ते यद्यपि मिथ्य २
 दृष्टि नि सो रागी भा ही तथापि अथ साध्यां न के उदय ते रागी है अर अणु बुती श्रुती आवक यद्यपि अथ साध्यां न के अ ३३
 नाव ते अष्ट तसम्पद ही नि ते अधिक है तथापि अथ साध्यां न के उदय ते अल रागी है। अर मुनि के अथ साध्यां न का रु अ

नाव नया ता ते विषय भुगगतौ सर्वथा मिथ्या। सं ज्ञान के उदय ते कबु ईक धर्म भुगगर रह्यो मो छे गुण स्थाने है। आ
 में उपर ले गुण स्थान नि विषे दीन राग भाव ही की छि है। ता ते मुनि के अमुन वैराग ही कहि है। धर्म भुगगा है सो धात।
 राग भाव ही का कारण है। व ऊरि मुनि के छे गुण स्थान शास्त्र का चिंतन है। उपर ले गुण स्थान विषे आत्म ध्यान हो है।
 साध्यां न मुनों का सा और नि के ना ही। अहां नी जीव तो विकथा ही विषे आसत है। शास्त्र का अनुराग ना ही। अ
 र सम्पद ही अष्ट त तथा अणु बुती आवक यद्यपि जिन सूत्र के अभासी है तथापि परियह के योग ते अष्ट त श्रुती।
 ही है। अष्ट त ना ही शास्त्र के पार मां पी व अष्ट त मुनि ही है। अर जीव दय मुनि की सी और नि के ना ही। अर अहां नी
 जीव तो सदा ही निरद ई है। अर अष्ट त सम्पद ही नाव नि करि तो दय रूप ही है। तथापि अष्ट त आरं न परियह के योग
 ते दय ना ही प है। अर अणु बुती नि के अल आरं न अल परियह के योग ते अल ही है। उस की तो सर्वथा हिंसा ना ही
 था वर जीव नि कहिं सा है। ता ते सर्वथा हिंसा न कहिं। सर्वथा अहिंसा मुनि ही कि है। मुनि महा दया वां न है। अर मुनि
 नि की बुद्धि सदा कांत वा द रूप अंध कार हर ने कूं सूर्य की प्रताप माने है। और नि की बुद्धि ऐसी प्रकाश रूप ना ही। य
 द्यपि सम्पद ही आवक नि की बुद्धि कांत वा द रूप नि मर ते रहित सदा दय अदान कूं परिणई है। तथापि मुनों की मि

व्यावृत्तनीहै। एषाद्विद्याकेपुरमुनिहीहै। अर अंतकालमुमेंकैअनसनतपकरिसरीरकात्यजनाहैउतक
 एआराधनांमुमेंहीकैहै। अणुवतीआवककेमध्यआराधनाहै। अतसम्पादहीकैजन्मआराधनाहै। और
 जगदीशजीवआराधनारहितविराजकहै। इहमुमेंकीअलोकिकवृत्तिकहीसोअनयतयकीविधिकाफलनाहै
 पूर्णतयकाफलहै। ॥ आगेकोउपलक्षकरैहैकितपकरतेंकायकेराहेयसोअथुक्तहैशरीरधर्मकासाधनसोय।
 तनयकीराधनांताकासाधनकरैहै। ॥ अथकोटिहरकेस्वतस्ततईतोमतःसर्वतःयतनप्रायेर्कय कोयंतवा
 ग्रहः॥५७॥ अवतपनश्रुरैरेनिग्रयुःकायादिनिर्बन्दिमाश्रुतंपदमायातिमुधायानमवैरिते॥५८॥ अथहोएगीते।
 गयासरीरविधेकोनआग्रहहै। जमियाकीरकाकरुंइहोकोटिउपायकरिराधानरहै। सर्वथापरवेहीऊंसनसु
 षहै। जैसेमानकीअणीपरिउसकीबुंदपरिवेसयहै। आपथकीतथाअमथकीयासरीरकीरकानहोय। आयु
 कायादिकअवशविनासीकहै। अरइतकेममनतजिवेकरिजोअविनासीपदतेरैहाथिआवेतोसहजआयाजा
 ना। नाबाधी। आयुऊविनश्रुअरकायऊविनस्वरुत्कहै। आयुदेवनारकीनिकीसागरतेतीससोऊविनस्वरतेम
 नुष्पतिर्यंचनिकैअसआयुकीकहावाता। अरदेवनिकानिरोगमनोहरसरीरसोउकालकेवसतीर्थकरादियुग

३४

एपुरधनिकसरीरसोउविनासीकती। औरनिकेसरीरकीकहावाता। सातेंयहनिग्रयुअथ आयुकेअंतजगंसरीर
 नरहै। अरअसुषमांरतेअधिकनारी। तातेंआयुकासमस्ततजिअपतेंअविनासीस्वरूपकाध्यानकरै। काय।
 कृतयसंयममेंजगायआयुधर्मसंपूर्णकरैतोअविनासीपदकायावहोय। अथअसुअरबलकायकेवहै
 सास्वतापदमिलेतोफुटीकोडीसटैचित्तमणिरतनआयागिनि। ॥ आगेदेयहो। कनिकरिआयुऊविना
 सीकदिवावैहै। ॥ अतमुमुक्षुसनिःश्रमेरअस्पतेमसंततंजोकाष्टिगतोयंउत्तात्मानमजराभरं॥५९॥ गल
 सायुधायःप्रकटितधर्षयंत्रसलिलं। खलःकायोपायुर्गतमनुपतसेयसततं। किमस्यातेरमेर्दयमयमिदंजीव
 तमिह। स्थितोज्ञानाविस्मयमनुतेस्याधुमयधः॥६०॥ अथइहआयुजोहिसोउभ्रासनिआसनिकरिभिं
 तरगमनकरनेकाअभासकरैहै। अरएअहानीनोकरैसीआयुतेंआपकेंअजरअमरवांवेहै। बाऊलता।
 करिइहइहआयुआगदही। अरइहकीधरीकेजलकीनईही। किमविनालै। अरइहकायजआयुकेतारहीनि
 रंतरपतनहोयहै। कायुहैसोआयुकीसहचरीकहिएअरनगहै। आयुहीकायुहीकीइहवाततोगाजीवकेपुत्र
 कलवधनधायादिअप्यप्येनिकरिक्हावैतोअगदही। जीवनेकेमूलसोइहहीकरणनंपुरहै। बुद्धिरहित

वहिरात्मा अंतिकरि आपकौ थिर मानै है। जैसं भाव विषे तिष्ठा अंतिकरि आपकं थिर मानै ॥ भावार्थ भाव विषे तिष्ठ
 ता पुरुष चला जाय है। परंतु अंतिकरि आपकं चालतां न जानै। तैसं मूढ़ बुद्धी स्वासनिश्वास कर निरंतर आयु जाय
 है। अरु आयु कै लार काय जीर्ण होय है सो उ जानै है। मैं श्री साहीर हों। भा जीव के कारण आयु काय सो ही चंचल तो
 जीवै कि कहा आसा। जैसं निवाण कानीर अरु हट की धरी करि निरंतर निकसे। तैसं स्वासनिश्वास करि आयु
 को थिति पूर्ण होय है। अरु काय जीर्ण होय है। आयु पूर्ण न हो काय मर है। तातें आयु काय दोन मिळुं विन स्वरजं निवि
 वे की ममत्व तजै। आयु काय ही संममत्व तजानव। और जे पुत्र कलत्रादि निनि संममत्व के से करे। वं तो प्राट ही निज है।
 ॥ आगे कहै है जो ल गि उद्यास तो लग जीवना सो उद्यास ही दुष रूप है तो शरीर मिळुं कहा सुष होय ॥ का उद्यास रे
 द जन्मत्वा दुःख मेषो ज जीवितं तद्विगमे न वे न सुखं न जल कुतः सुखं ॥ अर्थ ॥ इह उद्यास मषेद करि उपजै तातें दुष ही
 है। अरु याही के होतें जीवनां है। वरु उद्यास के अभाव विषे मरना है। कहो जु प्राणी के सुष कहतें होय ॥ भावार्थ जहां
 दनां ही सो सुष सो उद्यास तो घेद ही करि उद्यम है। अरु उद्यास है तो लाही जीवनां। तातें जीव में जी सुष ना ही। अरु स्वास
 गं मरनां सो मरि वे में जीव ही ना ही तो सुष को न के होई। तातें कहो जु जीवनि के सुष कहतें होई। या सरीर का संबंध तो दुष ही



३५

का कारण है। देह संभेद तजि वीतराग भाव में सुष होइ है सो ही आंगीकार करना ॥ ४ ॥ आगे कहै है कि जन्म मरण के
 मध्यवर्तण जं गति न के के ता का न जीवने का विश्वास ॥ ५ ॥ जन्म ताल पुमा जुं तु फलानि प्रयुता मधः ॥ अथाप्य म
 तु नृणां मनरे सुः कियच्चिरं ॥ अर्थ ॥ जन्म रूप ताल के रहते जीव रूप फल परे सो म तु नृ मिही कुं प्राप्ति होहि। अं
 म गल में जो राही रहे वरु त मर है। भावार्थ संसार में जीवनां दोय जे संतान वरु फल दुया सो पृथ्वी ही में पौ जीव में कोल
 गर है तैसं जन्म भा सो भौ आयु में को ज गर है। पोषा ही है। तातें होइ कि विना गुण अंति आत्म गाम के धन द करि
 अविनाम के पद साधन योग्य है। ॥ आगे कहै है कं अंनु निर्विकार है अविनाम विनाम तें विधितें यत न कीया तो
 उर स्वा करि त मर ॥ ६ ॥ किति जल धिनिः संख्यातीति वीहिः पश्यन्ते त्विनिः परिवृत पतः सेना ॥ सा तस्वना सुर नार
 काना ॥ उपरि विधि ज्ञान भवे कृतान रा विधि मं विणा पतिरपि मृणां ज्ञानि के वचनं अत मोति क ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ विधि र
 य मंडी में म सुष नि की अमे कनु पाय करि हा करी तो उर करि स कर ॥ जीतार सो अ संघा त ही प स सुष नि के तोट में र
 न जुं सो पौ ॥ अरु अ संघा त ही प स सुष नि के वाहिनी ज वा स वानि के कोट करि र हा करि ॥ अरु जे नार की उर परि मी
 ऊते ते अ भी नो कं मे य पि अरु उर तो क वि मे व नि कं धा यो म ध मे म नु य नि कुं रा ये तो उ म नु य मरण तें न ब चे तातें

॥

इह निश्चय भवति। जीवितिका को भुरक्षक ना ही एक काल अत्यंत लक्षणं ध्ये। जावय अनेक उपाय करि तो एक
 लक्षणं वधि। मनुष्य निज ही मवली जानि विधि सुध मंडी में रक्षा के अनेक उपाय करि उपरि की रक्षा तो देवनिक
 रिकरी अथ भो लोक विम ना म की धर्म अरती न कान घला ते का वर ला कोट अर अ संघात दीय स मुद्र नि काम
 हिना कोट दत्ता दिस्सामे उपाय की ए परं सुरक्षान नई कान रोक्का न जाय काल अलं ध्ये। ताते मरीर रक्षा को ना
 ज धर रक्षा करनी। आत्मा तो अविनश्य है परंतु देह ते ते करि मवेन वे देह धर है। ताते जन्म तो मरता कहिए नि
 के नय करि मने न मरे ऐसा अपना स्वरूप जानि देह दिक्ते मेह न जिए तो न वे देह न धरिए। इह ही मुक्ति होने
 का उपाय है। आगे कहें हे। भायु की धिति धर्ण हो ते काल क्षण ले वे का सुध म करे ना हि निवारि वे के न समर्थ।
 अविज्ञात स्थानो वां य गतनु पापम लिमः। स्वलो राक्षसो भूतस मत्त कर कां स मुचन। स्फुरंत ना स तं किल ग
 तितिकं कष्ट म परः पर प्राप्ते का जे विल सत विधो की दि व ल धाम ॥१३॥ अथ हे इह धमा कष्ट हे निधे से ती आयु
 कर्म के पूर्ण हो ते काल आयु प्राप्ते हो थै तव असा और को न वल वं न जोर हा करे। कोई ही रक्षान करि स के जे में
 न व प्र मे उ उ जो र क्ष सो य हण का सम य सह अ किरा जो स र्य अप नी किरा नि करि उद्योत की था हे मुचन विषे।

३५

जाने न दिखे हे सो को उटारि वे समर्थ ना ही जिते य हण का ओ सार पाया उ सुयं कं उ हे हे नि में आयु के मं स का स
 मय यय काल स ग र ड जी व स पु सु र्ग मं र्ग हे नि अर जी व म न त जी ति म न त प्र का स हे के स हिा क अर कि सी हे का
 ल ना ही जानि रहे स म ज क सो का र क्षी ती ध ग र ड सा म य ही जाने हे मर ग ड का को री वा मं सी ध र ति नो क था।
 कुं के सान ही न कहें हे। अर काल तो मरीर र हि स है हे। अर ग ड के भी जो क अ म नु क कहें हे। अर अ स लो क नि।
 कुं र्ग नि हे तो का ड कुं र्ग से सो ही य पी सी का म कुं र्ग पी कहें हे। सो य पी सी पी म जी न अर ग ड कुं र्ग या प प ह कहें हे। अ
 र स म हे। जामे माल का र ड स म दी या। प ड अ नि मे काल ड है सो तो अप नी अ म र्त ज म म ता करि वि
 र ड म न हे। का ज का र र ता ना ही परं सुरक्ष क वि म र स म य म य म य प क र दि हे। मर की धिति आ स मे र
 र्ग हो ई ता ही स मे देह मुं र्ग उ म रा म न करे इ ह का र हे नि नो क कहें हे काल मा र हे। आगे कहें हे कि का ल क य
 क नि के न स्थान विषे धर्ण नि कुं र्ग मे हे। उता म मो ह म द वि ध र मि व मि थ वे। ध यं स द धा। का य य मे र
 स स र नी कर ध र म म न र ले ध र नि ध र मि ध र म र हि क। म म र्ग ॥१४॥ अथ वे ध र दि र र्ग की ध र ति न क र्ग सो य।
 वे ध र ना की ना ई नि र र्ग मो ह उ प न य वि म जो र्ग नि के ता कं वि क ल करि सं सार रू प न धा न क य न वि वे र्ग हे ॥

तहां ताहि को न निवारि वे समर्थ ॥ नाच ॥ विगनिरवई हे अरमूद लो गनि कुं अमल की वस्तु दे मद्र उपजाय विह
 ल करि मंजीर वन में मारि है ॥ सोई महानिरदई अरमूद रूप वग मोह मद्र उपजाय समस्त अज्ञानी जीवनि कुं संसा
 र वन विषे होई को न वचाय सके ॥ १॥ काल का कारण कर्म है ॥ जिन के कर्म हैं ते काल वसि है ॥ सिद्धन के क
 र्म नाहीं ॥ ताते काल वसि नाहीं ॥ २॥ आगे कहै है कि कोउ देस को न काल विषे काल में वचने का उपाय नाहीं ॥ सर्व दे
 स सर्व का न विषे काल वसि है ॥ काल का यत्न न कर्म नि का परिहार ही है ॥ कर्म नि का परिहार सोई काल का परिहार
 ॥ कंद कथं कुतः कस्मिन्ने मत्तव्यः ॥ रत्नोत्पत्तिः ॥ प्राप्तिः ॥ विमलः ॥ अथ यत्नः ॥ १५॥ ॥ पंक्ति जन
 जेस मगहृष्टी आत्मक आया के निमित्त यत्न करु काल आया म होय तन की रंग भर है ॥ कोन समें कोन प्रकार ॥
 कोन देस विषे कहां ते काल आवै है ॥ ऐसा विचार संन आवै काल अगची त्याही आवै ताते आत्म भान करि अ
 विना सी हीने काय तन करु ॥ नाच ॥ आत्म स्वरूप में ममान न रं काल का निवारण होई ॥ गमादिक के परिहार
 दिनां ओर का ऊय न करि काल का निवारण नाहीं ॥ मंत्र यंत्र तंत्र औषध दिकरि काल कुं दुर्निवार जां निमोन गी
 हति है ॥ ॥ आगे कहै है ॥ मवही देस काला दि विषे मरण होय है ॥ कोउ देस काल मृत्यु ते अगोचर है ॥ ऐसा प्रसक्त

३७

देष करि निश्चय होय है ॥ ॥ असामवायकं मृत्योरेकमात्रोक्तं च ॥ देस काल विधि हे तु निश्चिता संतु जंतवः ॥
 ॥ १५५॥ ॥ कोउ देस को न काल को न विधि को न कारण मृत्यु ते अगोचर देष करि एषां एी निश्चित ति है ॥ नाच ॥ जग
 त विषे ऐसा कोउ देस नाहीं ॥ जामें मरण न होय ॥ बहुरि ऐसा को न काल नाहीं ॥ जामें एषां एी न मरे ॥ अरु ऐसी को
 न विधि नाहीं ॥ जा करि मरण मिटे ॥ अरु कोउ ऐसा औषध मंत्रादि उपाय नाहीं ॥ जा करि काय बचे ॥ ताते सर्वथा सर्व
 कुं काल वसि जां नि आत्म क साण विषे अवश्य पठ्य मी हो नां योग्य है ॥ एक आत्म ज्ञान ही काल ते वचि वे का उपा
 य है ॥ मवही देष विषे सदा काल सर्वथा प्रकार को न ही कारण करि कोउ ही एषां एी काल ते न वचे ॥ ऐसा प्रसक्त दे
 ष एषां एी ॥ शरीर के शेषि वे कचित्त त नि निश्चित हो ॥ ॥ आगे काय को विन स्वर वताय स्त्री की निंदा करते स
 ते ता के तन को अक साण का कारण दिखौ है ॥ ॥ अथ हित महा द्यौ र दार न किं नर का पदा मुप कृत वतो नृत्यः
 किं ते न चेद मपा करोतु ॥ कुशल विल ज्वाला जाले कलत्र कलेवरे ॥ कथ मि वन वान उषीत ॥ घण्टा जन डुबने ॥ १५॥
 ॥ अथ ॥ तं या स्त्री के कलेवर विषे को न कारण धी सि करे है ॥ इह स्त्री का कलेवर क साण के न सम करने कुं अग्रि का
 ला का सम हं है ॥ अरु तं क हा प्रसक्त न देष है ॥ ए स्त्री का शरीर नरक की आयदा का उघड़ा दार है ॥ अरु तं तो स्त्री के स

शीरसंवाचवार अनुगाग करि उपगार करै है अस्वहसदा विधनकारी ही है ताते तंतु मणी के तन ते धीति सजिया कं
 अणानी जन कुल न माने है अरु हक वस्तु ही मांही ॥ ना वा यही ही संसार का मूल कारण है जा करि पुत्र पौत्र दि
 संतान का प्रवर्ति होय है ॥ अरु नाना रूप आरंभ परिग्रह दि चिंता रूप कलेश तिन की वटावन हारी है जो निर्वृति वध
 टिका के वर जग ते इत सीमिके त्याग ही ते नये ॥ अरु इत ही के संबंध ते एवोली वस्तु गति विषे भ्रमे है ॥ ऐसा जा नि संस
 रीत जना ॥ ॥ अगे तहां सी विषे धीति को रि सर्व प्रकार असार भु है मनुष्य पण ता कं तं उत्कृष्ट धर्म उप जा वने क
 रि सफल करु ॥ ऐसी सिद्धा देत संता मरु कहै है ॥ ॥ व्याप्य सर्व मयं विराम विरसं ले प्य नो गो चितं विष ककु
 त रूत पात कुष्ट कथिता बुधामये ॥ विदितं मानुषं पुण नुस्ति ते रुसदृशांता मे कर मं युन ॥ निःसारं परलोक वी
 जम गच्छत्वेह सारी कुम् ॥ १० ॥ अथ यद्मनुष्य पणो हे सो धुलानि करि धाया कां लां सांता ता के समं महे के साहि
 आपदा रूपी गां विन सों त मय है ॥ वडूरि अंत विषे विरस है वडूरि मूल विषे जी जोग वने यो ग्य नां ही है ॥ वडूरि
 सर्वा गपने कुधा गमडा को द कुथित आदि नयान करौ गति न करि बिदु सहित प्रया हो ॥ वडूरि एक नो ममात्र ही
 रमणी कहै ॥ ओर सर्व प्रकार असार है ॥ इहां या को तं जी धर्म साधन ते पर लोक का वी ज करि के सार सफल करु

३८

ना वा यही ही संसार का मूल कारण है जा करि पुत्र पौत्र दि संतान का प्रवर्ति होय है ॥ अरु नाना रूप आरंभ परिग्रह दि चिंता रूप कलेश तिन की वटावन हारी है जो निर्वृति वध
 टिका के वर जग ते इत सीमिके त्याग ही ते नये ॥ अरु इत ही के संबंध ते एवोली वस्तु गति विषे भ्रमे है ॥ ऐसा जा नि संस
 रीत जना ॥ ॥ अगे तहां सी विषे धीति को रि सर्व प्रकार असार भु है मनुष्य पण ता कं तं उत्कृष्ट धर्म उप जा वने क
 रि सफल करु ॥ ऐसी सिद्धा देत संता मरु कहै है ॥ ॥ व्याप्य सर्व मयं विराम विरसं ले प्य नो गो चितं विष ककु
 त रूत पात कुष्ट कथिता बुधामये ॥ विदितं मानुषं पुण नुस्ति ते रुसदृशांता मे कर मं युन ॥ निःसारं परलोक वी
 जम गच्छत्वेह सारी कुम् ॥ १० ॥ अथ यद्मनुष्य पणो हे सो धुलानि करि धाया कां लां सांता ता के समं महे के साहि
 आपदा रूपी गां विन सों त मय है ॥ वडूरि अंत विषे विरस है वडूरि मूल विषे जी जोग वने यो ग्य नां ही है ॥ वडूरि
 सर्वा गपने कुधा गमडा को द कुथित आदि नयान करौ गति न करि बिदु सहित प्रया हो ॥ वडूरि एक नो ममात्र ही
 रमणी कहै ॥ ओर सर्व प्रकार असार है ॥ इहां या को तं जी धर्म साधन ते पर लोक का वी ज करि के सार सफल करु

नेकाउत्तवकुंउपजविहे। ऐसीजाकीदसासोथकुंजीवसरीरविषेकितनेकचिरकालपर्यंततिहे। अपितुन
 तिहे। **॥ १ ॥** यहुजीवसेवेनवतोमृतकसदृशहोय। अरजागेतवजीवताहोय। ऐसेयाकीप्रतिदिनदसाह
 वकरे। तोजेसेजोनितविपेताकेभागेनेकाजरोसानाही। तेसेयापकारशरीरविषेरहनेकाजरोसानाही। तेसेयास
 धरीसरिउंजमिगा। ऐसानिश्चयकरिनाहोय। सोकार्यकरिलेना। **॥ २ ॥** आगेऐसेमरीरकेआत्माकाउपकार
 करनेकाअनावकहिकरि। अचकुटवनिकेआत्मउपकारकरनेकाअनावकहतासुत्रकहेहे। **॥ ३ ॥** संपदाअ
 दिजमनिबंधुकसमाप्तय। किमपिवंधुजनार्दितार्थ। एतावदेवपरमसिमतस्यपश्चात्तनयकायमहितंतव
 नसमंति। **॥ ४ ॥** तंसांचकरि। जोतेसंसारविषेबंधुजनतेबंधुनिकरि। करनेयोगहितसंघप्रयोजनकिबुनीपा
 गहे। सोतेकिबुनीकुटवतेहितनयाहीसतनाही। केवलइतनाहीअमकाउपकारनासिहे। जोतेमृगधीबेंगकवेहोय
 करितेरावेरीसरीरताकोनसमकरहे। **॥ ५ ॥** नाईबंधुतोअनकानामहे। जोअपनाहितकरेतौन। जानिकेनाईवं
 धुमानेहे। सोईननेकिबुहितकीथाहोयतेधताय। जातेतेसमाननासांचहोय। वहरिहमकोतोकेवलइतकाइत
 नाहीहितकरनाजसिहे। जोवेरीकावेरीहोयताकुंअपनाहितकहिएहे। सोतेरावेरीसरीरथा। सोतेमृगधीबेंगि

३९

निकरिइतनेशरीरकुंइधकीया। तेरावेरकावसलालीया। ऐसेइहायुक्तिकरि। कुटवतेहितहोतानजोनिरागन
 करना। ऐसीविषादहे। **॥ ६ ॥** आगेतर्ककरहे। जोविवाहदिककार्यबंधुजनमेंहोहे। ऐसीप्रतीतिहे। तातेतिसबंधु
 जनतेहितरूपकार्यकेसोनहोहे। ऐसीआसंककरिउत्तरकहेहे। **॥ ७ ॥** जन्मसंतानसंपादि। विवाहादिविधाय
 न। स्वापरेस्वसहत्याणहारिगोनपरेपरे। **॥ ८ ॥** संसारपरिपत्तीकेनिपजावनहरे। विवाहादिककार्यतिनकेक
 रनहरेजेसकीयकुंउंकरे। तेईइसजीवकेवेरीहे। वहरिजोएकवारप्राणहरे। ऐसेपरकरिएवेरीतेवेरीनाही। **॥ ९ ॥**
॥ १० ॥ जोएकवारप्राणहरे। ताकेंसंपरवेरीमानेहे। सोप्राणनाशवाकाकीयाहोतानाही। आयुकाअंतआयेहोहे। तातेपर
 मार्यतेप्राणहरनहारावेरीमांरीहे। वहरिविवाहादिकार्यनिषिदे। जीवकुंउजजाग्रगादिककेनिमनचनावेहे। ऐ
 सेबंधुजनतेअनेकजन्ममरणकाकारणकर्मबंधकरायथाकाबुराकरहे। तातेपरमार्यतेबंधुजनवेरीहे। जेसेदं
 नादिवाधेसेवेरीमांरी। जोनबीनहंन। करावेसोवेरीहे। तेसेप्राणहरनहारातोपूर्वकर्मकीनिर्जराकरावे। तातेवेरीना
 हीबंधुजननएकर्मबंधकराणनिपजावेहे। तातेईवेरीहे। ऐसाजानिइतकोहितनमानिरागकरना। **॥ ११ ॥** आ
 गेबंधुजनहेतेविवाहादिविधानकरिधनधान्यस्त्रीआदिदृष्टवस्तुकेनिपजावनेकरिविवाहितप्रयोजनकीप्रा

DR. BHADDAJI
SINGH

[illegible]

संसार का असाहे जिसे समुद्र विषे वरदान नहे सो जल कुं सो वै असात प्राय मान है तेसे संसार विषे मान सी कडु घ
 है सो विषय समुद्र कुं न जोग न दे असा संता पसु पहे घडरि मरण जन्म जग रूपी तरंग तिन करि चपल है जेसे समुद्र
 विषे तरंग तिन की घल टनि हो है तेसे संसार विषे जन्म मरण जरादि आदि अवस्था न की पलटनि हो है असा स
 मुद्र विषे मोह रूपी आह जल चर जीव वसे हे सो अपुनां मुष फटि रह्य है उदय कुं वक्त करि रह्य है तिस ते जे हरि वि
 चरे हे या के उदय विषे तप होई विकारी न हो है ते जीव दुर्लभ हे छोरे हे जो संसार विषे असे घने होई तो संसार के
 सेवसे असे छोरे हे या ही ते संसार पारि हो ॥ अगिं माह के मुष ते हरि विचर ता दुर्धर आधर न आचर्य असे मो
 जो तो सो तेरे न ले प्रकार पाया कुवा जीवारी जो असे मरि रणी निकरि विषे तो संध्यु न हे असा कह हे ॥ अमु
 छने सुख परिकरै लीजिता जो लर मेः असां गि मां न यन कर्म जे र्विता यो घनां ते धनो सितं ग्रदि मनु प्रियं लघ
 मो धर्म गीतिः दधारण स्थान कमल नीलां कया लोकां ते ॥ १५ ॥ जिन विषे विषे दन होई असे समुद्र के सम
 जति न करि सो पाता कुवा है अरम नो हर अग्युक्त र्विति निचय लर मली कजे नेव ते ईन एक न जति न करि ४१
 र्वजित रुमानि त असा य ह मरी र था घडरि यो घन अवस्था का म ध विषे या थ है इत न जाने असा जो तं सो तेरा

वेसा सारित सम जया घन की स्थल कमल नीलां कया लोकां करि हरिणीति करि अरु जो कि तो संध्यु न हे ॥ १५ ॥
 जेसा असा घन होई तेसे प्रवर्त असी घन हे ता ते उदरि तो महे परं सुखें पुम उदय करि सुख समाज सी आदिकारण
 नितं परम सुविषय हेय रेये घडरि पां प्रपा यो धर्म असा विषे ही काधारित य करि असे मर जिन कुं हरिणी
 सारि यो वं घन जीव प्रपुन वा पुं सारि या असा लोके हे ते जीव धर्म असे प्रकार मृति योग पहे दे को आसु पां न क १
 कोई असे ही मरि मरि य म सुविषय तीर्ष कर वक्त र्विति नो दया धर्मी मेरु वत मिश्र लन ए घडरि लि आदि अ
 सा धनिये पासी व जालं वेजिल पटि गई मुकु मर जीव असा सो पुं असी सो सा लनी धा मे न गीति नी निश्र तर हे
 ई कया दि पुरुष मरि मरि ॥ १६ ॥ अने से ही तेरा म म फल होय अम प्रकार मो ही असे दि या व ता संजा
 स पक है ॥ १७ ॥ अने से मित कि विदुष्य परि पूर्णा मो हित बाहित काम धर कनु अमिनी दुम धने धाम न ने
 यो घते म अघुष व घा जि सं व सुव सुः किला मि आदि निः दार्दे ई ई म नः अज न म निति धर्म अवे निर्मल
 ॥ १८ ॥ अने असा विषे तो सं पूर्ण आर हित ही न संता कि घुनी हित बाहित को ता ही जाने हे घडरि यो
 व म विषे ली म पी घुनी की स घन ता स प घन मा विषे प्र म ता संता काम करि अंध भण घडरि म ध य विषे व

धीवृक्षाताकरिपशुसमाननारनिर्वाहकरनहो तसंताधनउपजावनेकुंघेतीआदिकर्मनिकरिक्लेशावैहे व
 ऊरिदृष्टअवस्थाविषेआधामनकप्रय ओसेतेरामनुष्यजमोहोफलवांचकहोइनिर्मलधर्मकहांहोई
 सर्वयथीयनिविषेमनुष्यपर्यायधर्मसाधनकोकारणहै वऊरिधर्मसाधनहीतेमनुष्यपर्यायफलहोहे
 सोतेरामनुष्यपर्यायकाकाजतोओसेंवीतेहै बालकयनेतोकिछुहितअहितकापांनहीहोइसकेनोही योव
 नविषेतेंछानिकारिसिमाहोईकामंधनया मध्यअवस्थाविषेऊतवादिक्कीवृद्धिजई तहांमोऊंसर्वकानि
 बौहकीयाजहिय ओसाविचारधनउपजावनेकेअधिषेदधिभरहे वृद्धअवस्थाआएंइंद्रियमनमिथलहोने
 तेंअंधामनकसमानहोहे ओसेंकासर्वनिधर्मकहांसंधंमनुष्यमनकेसेफलहोईतातेबालवृद्धअवस्था
 विषेतोवधनाही योवनअवस्थावामध्यअवस्थाविषेस्त्रीऊतवादिक्सोरागवोरिधरिधर्मसाधनकरो ओ
 सेहीतुमहाराजमसफलहोहे ॥ आगेतीनोअवस्थाविषेबुझकरमहाराजोर्मनाकावरावर्तिहोनाअवतो
 कोयोगपनाही ओसीसीधेतासुत्रकहेहै ॥ बालेस्मिन्मयदनेमतेविरचितंस्मर्तुंयतनोचितं मध्येवापिधना
 र्जमवतिकरेस्तंतास्तियन्नापितः वार्तिकेपुनर्नूयदंतदलनाद्यावेष्टिमंनिष्ठुरं पश्याद्यापिदिधेवसिनच

निबुंवांचसहोदुर्मते ॥ इसपर्यायविषेइसकर्मनेबालअवस्थाविषेतेराकिबुबुगकीयासोयादिकर
 नेयोगपनीनोही वऊरिमध्यअवस्थाविषेधनउपजावनेकाप्रकारनिकरिसोकोईदुःस्वरह्यानाहीजातोकोनही
 या वऊवृद्धअवस्थाविषेजीतेराअपमानकरिदंततोउनांआकवोरवेष्टाकरी सोमंदेविहेदुबुद्धिअवजरीइम
 कर्मकावराकरिहीवलनेकुंघोहेहै ॥ जोकविषेकोईएकवारअपमानबुगकरे ताकोअपनावैरीजा
 निबोकेआधीनरहाचाहैनाही वाकानाशकरनाहीविचारै सोईसकर्मनेअनादिसंसारतेंजोतेराबुगकीया
 ताकाताकोस्मरणनाही परंतुइसपर्यायविषेबालअवस्थाविषेतोगर्जन्मशरीरवृद्धिआदिदशानिकरि
 अरमध्यअवस्थाविषेधनउपार्जनआदिक्रियानिकरिअरवृद्धअवस्थाविषेदांततोउनांआदिअपमानक
 र्यकरनेकरिजोबुगकीयासोतोतंदेवहै सोयजने ओसेंजीप्रत्यक्षदेविअवनीतंकर्महीकेआधीनरहाचाहै
 याकानासकाउपायनाहीकरेहै सोयजनेरीपुरुषार्थताकीहीनतातोहीकुंडुषदायकहोसी ॥ आगेवृद्ध
 अवस्थाविषेइंदीयादिकनिकीओसीप्रवृत्तिदेवतासोऊरुकोनिश्चितरहनांयोगपनाहीओसेंकहेहै ॥ अथ
 वनिरक्ततापरतरस्कारश्रुतीनांश्रुतिः वक्रुवीहिनुमकमंतवदशं हृष्यामिदंध्यगतं नीतोवाणिमुषांतका

ਖੜ

निवेद्य ज्योतिःकोक्तिः वद्धरि संज्ञे संगादि शेष निविद्ये आसक्त होत संता अरसम्पादनी नावि विषे इति न
करत संता विमलो कोक्तिः मिथ्या के संज्ञे है । जो मविषे ने संज्ञे सिद्ध है । आकावद्ध तसे वमन भण्यो
इति मविषे अनादर बोध । आश्रमो अथर्वान्न होइ निमविषे इति होइ जो तेरे गणविषय के वन तो अना दिते
अथ निमविषे ही तेरे आसक्तता पाई है । अरसम्पादनी नावि विमल अथर्वान्न है निमविषे तेरी इति मां ही सोच
होय कर्म सिद्ध वन नं दुःखे संज्ञे है । यद्ध वमन भण्यो है । आश्रमो अथर्वान्न विमल आसक्त अमनी हित अहित की ज
वतां कपता ज्योतिः संज्ञे संता संसार विषे अरसम्पादितः । वद्धाश्रमो सादृशत महिन दिवा वता संता मरु कहे । हंसे
मनुष्य मति कर्ष अमंनसापि । नो संग संति मदि क सिमरो जमि सं । आतो कि सं मधु मये वा घृतं वधे म । वायुः क
सोम सवितां सविते विवेक । नो के मय है सो रं मनि करि जो बा जो ही है । अति वनो रहे जल करि नीय ।
कर्म सनां ही की या हे दिन ही विषे कहे । ज्योतिः संज्ञे संता संसार विषे अरसम्पादितः । वद्धाश्रमो सादृशत महिन दिवा वता संता मरु कहे । हंसे
मनुष्य मति कर्ष अमंनसापि । नो संग संति मदि क सिमरो जमि सं । आतो कि सं मधु मये वा घृतं वधे म । वायुः क
सोम सवितां सविते विवेक । नो के मय है सो रं मनि करि जो बा जो ही है । अति वनो रहे जल करि नीय ।
आश्रमो अथर्वान्न विमल आसक्त अमनी हित अहित की ज

੪੪

कदाचित्कोईकेबुद्धिकीधामिहोयतोपरलोककेअर्थिधर्मरूपविचारहोनाकठिनहैअनंतरारमनसहित।
होइतोनीधर्मबुद्धिकीसीहीजीवकेहोहैवज्ररि कोईनापकरिधर्मबुद्धिकुंभीपायकरिजेसावधाननाहीरहे
हैधर्मसाधनविषेजिअलरहेहैतिनकीचित्तबुद्धिबानकेहोहैजोअसाअवसरपायबुकेहैइनकाकहाहोनह
रहेमातेधर्मबुद्धिपापमादीहोनाशेअपनाहीहै॥१॥आगेपाईगहैबुद्धिजिनमेंअरअदुतपराक्रमकेधरहिं
वज्रमिलनीकेविलासकाअभिनायकरिराजानिकेसेवाकरैहैतिनकापयातायकरतसतासप्रकहैहै॥२॥लो
काधिपतिजिनजोनुविद्येनजातातस्मिन्विद्येसतिहिसर्वजनप्रसिद्धहोअनुतदेवदमीसहृदयिबीर्मास्तेयां
बुधध्यावनकिंकरताप्रयाति॥३॥जिसधर्मविधानकरिलोककेस्वामीराजाप्रहैतिसमस्तलोकविषेप्रसि
द्धधर्मविधानकुंहोनसतेजोबानेयोगपहैपराक्रमजितिकाअसंखंडनीतिनिराजानिकाकिंकरयनांकोप्राप्त
होहैमोईहोचनेयोगपहैअसाकाहेकोकरैहैइसविचारतेहमकाहेकुंकरैहैइसविचारतेहमकुंमेदहोहै
॥४॥राजपदहैमोधर्मकाफलहैअसंखंडविषेप्रसिद्धहैवज्ररिधर्मसाधनिकीसर्वेषासामग्रीमिलनेतेंधर्म
साधनहोयसकेअरआपवज्रतपराक्रमीधर्मसाधनेकुंसमर्थवज्ररिआपपानीधर्मधर्मकाफलकुंपहिला

नैऋतसे होतसे नैऋतधर्म तो न सोधे अरधनदिक काले न लिखे राजनि कुंसे वे तो तिनकी चिंता हम कुं हो हे जोरा
 जाता का की या नया ता का सेवन करे एराजा का सेवन को हे कुं करे हे इहां ना वरुं हे धर्म का सेवन करे अमक
 र्य कर ना योग ना ही ॥ ओं पड है और निका मस्त कजा के असा कोई कछनो मरा जाता का धरा कुं वा निधा
 न का जो कोई स्थान कता का निरूपण का मिस करि धर्म काल कण विराधना का स्वरूप मार्ग ता कुं दिवा वता सं
 ता सव कहै हे ॥ यमि नस्तिस नृत तो धर्म महा वंशः प्रवेशः परः प्रजा परिमिता धतो नति धना मूर्धा धियते
 धिये ॥ नृणां सप्तजुगं दुर्गम तमो मा गो निराशस्त तो अकं वक्तु मयुक्त मार्य महतां सर्वार्य साक्षात्तः ॥ १५३ ॥
 ॥ १५४ ॥ इहां से धाल कार की यहै सहां एक आर्थ विषे तो कोई सर्वार्य ना माह सग मंजी राजा का न यहै वा नें दुर्ग
 म स्थान जहां कोई कछराजा का निधान था जहां जाय वा कुं प्रगट की यहै ता का वर्णन हे वरुं रिह सरे अर्थ विषे
 धर्म के लक्षण दिक का वर्णन हे तहां यह जे यह ला अर्थ की जिए हे सो प्रदेस कहिए स्थान क सो पर कहिए उत
 रुष्ट हे सो कोन जिम देस विषे यवत तिष्ठे हे के से हे पर्वत धारे हे वंश जिम ने वरुं रिह के से हे बुद्धि करि वेह
 उपाई एहे जिन का असे वडे हे वरुं रिह के से हे शिखर करि जो ना के अर्थ धरा हे उचाई रूप धन जिम ने असे



पर्वत नि करि संवृत प्रदेस हे वरुं रिह निस प्रदेस का मार्ग हे सो वडा हि सम्य नि करि अतिसयपने और नि कुं दुर्गम हे
 आसा जे दिमा तिन करि नि कुं मां हे जहां दिमा नि की बुद्धि ना हे हे हे असा जा के मार्ग हे सो वरुं प्रदेस जे से अस्त
 मव नि करि जा मां जाई ते से कह नां अयुक्त हे कछा जाता ना ही हे आर्थ निस प्रदेस का अजान मारा असा विष
 म प्रदेस हे सो सर्वार्य ना मां कोई राजा का हसग मंजी ही साक्षात्त की यहै जाय करि प्रत्यक्ष देव्या हे असे एक अ
 र्थ विषे सर्वार्य मंजी की प्रसंसा करी अव्याही का द्वितीय अर्थ कहिए हे अदि प्रते कहिए पर को उच दे सि ए असा
 जो प्रदेस कहिए धर्म सो वरुं उत कछ हे सो कोन जा को हे ते मंजी राजा हे ते लोक नि करि लकी के अर्थ मस्त
 क करि धरि एहे लोक लकी के अर्थ राजा नि कुं मस्त क न मावे हे सो राजा नि के यदु धर्म ही का फल हे के से हे
 जा धरा हे इवा कु आदि वंश जिम ने वरुं रिह के से हे बुद्धि के पार को धा मय हे वरुं रिह के से हे धर्म हे उत मत्ता
 अरधन न मार जिम ने असे राजा जिम धर्म हे ते प्रधान हे वरुं रिह निस धर्म सय प्रदेस का मार्ग हे सो हं मस्त
 आदि ने वनि ते प्रचुर हे अमे क प्रकार हे वरुं रिह आसा जे या ता करि रिह हे वरुं रिह जुग मजे का मीति न
 करि दुर्गम हे अगा वरुं जा ते असे हे ता ते अर्थ जो लेति न विषे वडे मुहे दमति न के सो मार्ग प्रगट करने के अयु

कहें। हमारी इतनी शक्ति नाहीं। प्रगट कहें। वज्रविमलसंज्ञे आर्य कहिए। गणधरादि सत्पुरुष वा सवनि करि सेवने योग्य
 ऐसा सर्वार्थ कहिए। सर्वज्ञ देवनि करि प्रगट कीया है। उनका प्रगट किया हुआ धर्म का मार्ग सर्व के प्रतीति करने योग्य
 है। नावा प्रगट को ईश्वर संगाय सर्वार्थ मंडी की तो प्रसंसा करि अरु याही का हसरा अर्थ विषे धर्म का फल वा धर्म का मार्ग प्र
 गट करन हारा तिनका स्वरूप कहा है। ॥ आगे सररीरादिक ते वैराग्य उपजाय जीव कुं धर्म अरु धर्म का मार्ग दिषावता।
 जो मुनि तां के किबुनी फल की। इहाना ही है परनुभार ही के अर्थि न की प्रवृत्ति है। जाते परोपकाराय सताहि दे
 छितं ऐसी नीति का वचन है। सोई दिषावता सता सुक है। ॥ शरीरे सिन सर्व श्रुति न वज्र दुःखे पिनि वसना। अ
 रंसी ने निवृत्त यति जनः। नीति मधिक। इमं दृष्ट्वा प्रसादिर मयि तु मे न वचन ते। यति र्गता रयानेः परहित र्गते पश्य
 महतः ॥ १०८ ॥ सर्व प्रकार अपवित्र अरु शरीर का मान सीक वज्र न दुष जा विषे पाई। ऐसा ईश्वर विषे निष्ठा
 यका जन है सो विरक्त ना हो हो। वज्रिय जन ईश्वर शरीर कुं दे वि अधिक प्रीति कुं ना ही विस्तार है। कहा अपितु वि
 स्तार ही है। वज्रकार्यान है सो यजु जन तो ऐसा है। वज्रिय मुनि है सो यजु न्या ऊ वा शर उपदे सतिन करि ईश्वर शरीर
 ते विरक्त करन को यजु करे है सो महंत मुनि के ऐसी परहित करने विषे अमरा गहे ता कुं ते दे वि। नावा प्रजा से पर

४६

जीव न आ माने। अपमोक्ष नि साय संधे ते से तो सी पदे ते जाते वज्र न हें। परनुमुनि नि के ऐसी परहित विषे अनु
 भव है। जीव तो शरीर। अपवित्र दुष का वचन इहाना है। ते नी वा के विरक्त न हो है। वाही विषे अनिधीति करे
 है। अपवित्र है तो जे से विरक्त विषे अमरा गहे ता कुं ते दे वि। अपवित्र है तो जे से विरक्त विषे अमरा गहे ता कुं ते दे वि।
 यिका कुं उपदे स वज्र जीव नि विरक्त मुनि न है। वज्रिय न उपदे सी साते वज्रिय उपदे सी गरी करे है।
 उम मुनि नि के अपम विरक्त विरक्त न हो है। सो महंत मुनि न है। ॥ आगे नी वा शरीर ते विरक्त न
 हो है। अपवित्र है तो जे से विरक्त विषे अमरा गहे ता कुं ते दे वि। अपवित्र है तो जे से विरक्त विषे अमरा गहे ता कुं ते दे वि।
 वज्रिय न उपदे सी साते वज्रिय उपदे सी गरी करे है। ॥ १०९ ॥ इहाना ही है परनुभार ही के अर्थि न की प्रवृत्ति है।
 जाते परोपकाराय सताहि दे छितं ऐसी नीति का वचन है। सोई दिषावता सता सुक है। ॥ शरीरे सिन सर्व श्रुति न वज्र दुःखे पिनि वसना। अ
 रंसी ने निवृत्त यति जनः। नीति मधिक। इमं दृष्ट्वा प्रसादिर मयि तु मे न वचन ते। यति र्गता रयानेः परहित र्गते पश्य
 महतः ॥ ११० ॥ सर्व प्रकार अपवित्र अरु शरीर का मान सीक वज्र न दुष जा विषे पाई। ऐसा ईश्वर विषे निष्ठा
 यका जन है सो विरक्त ना हो हो। वज्रिय जन ईश्वर शरीर कुं दे वि अधिक प्रीति कुं ना ही विस्तार है। कहा अपितु वि
 स्तार ही है। वज्रकार्यान है सो यजु जन तो ऐसा है। वज्रिय मुनि है सो यजु न्या ऊ वा शर उपदे सतिन करि ईश्वर शरीर
 ते विरक्त करन को यजु करे है सो महंत मुनि के ऐसी परहित करने विषे अमरा गहे ता कुं ते दे वि। नावा प्रजा से पर

नाही कहै है। यहु शरीर ही जन्म मरण पुष्प तट पारो ग-आदि सर्व दुःख निवास स्थान कहै। ताते शरीर ते विरक्त
 होई। जे से शरीर के संबंध का अभाव होय ते से उपाय करना योग्य है। ॥ आगेति स शरीर को ग्रहण करता संत १
 गर्ज अवस्था विषे कहै। २ करत संता के सा हो है। ॥ अंतर्गत वद न विवरे छुटवार्तः प्रतीक्षन् कम्पयत
 सुखिर मुद्रा वस्तु रेख पद्मा निषण्ण आकृमि सह चरो जन्म निक्षेप नीतो ममेज निमिषि चरमणा तन्निमि
 तादि नेषि ॥ ५५ ॥ हे प्राणी तं मा क उदर रूपी विषा स्थान विषे कर्म के आधीन कवा वज्र त काल ता ई व
 धने कालो न करि अंतर्गत जो माता का चोपा का अन्तर्गत अपने मुख रूप विषे वाह त नया के ई बुद
 मेरे मुख मे परे असे मुख फोर है है। के सा हे वद धांशी रुधा वृथा करि पीडित हो। बद्ध रिउदर का स्तो कये वहे ता
 ते त हां ह न तां चल नां रहत है स्वरूप जा का असा है। बद्ध रिउदर विषे निप जा है जव आदि जीव निमिका सह च
 रा सा धी है असे गर्ज विषे अवस्था हो है। सो हे प्राणी मे असे मा नो ले असा जन्म अवस्था विषे के शो है ताते न ह १
 कुवा जन्म का कारण जु हे मरण ति स ते मरे है। ना वा शरीर संवंध ते नर का दि विषे ह ५५ हो है सो तो धरि ही ति हो ५७
 ते यहु उत म मनुष्य पर्याय पाय है। ता का ग्रहण करता गर्ज विषे ता कं के सा दुःख जया ता का तो चितवन करे

ह म तो यहु माने है जो तं मरण ते मरे है सो मरण न प्य विं म वी न जन्म धर नां हो गा। जन्म विषे दुःख पाई या है। असा
 शरीर की उत्पत्ति विषे दुःख जन्म जन्म का दुःख न होय इसो उपाय करना ॥ ५५ ॥ आगे स मर्दि शीन का जन्म ते पहले
 ज जे य र्या य ति नि विषे ते सर्व कार्य अय नां धात है के अर्थ आचरन की या असा कहै है। ॥ अजा क या एी य म
 मुष्टितं त्वय विकल मुग्धे न न वा दितः पुरा यदि च किंचित् सुष रूप माय ते म दार्प्य विषे ध क वर्त की ध कं ॥ ५६ ॥
 हे आर्य जो ला जीव ते इस य र्या य ते पहले अजा क या एी य कार्य की या ॥ मे से अजा जो छे नीता को भार ने के अर्थ
 के ई बुरी वाहता था। बद्ध रिउदर से ली नं पुर ते वं दि बुरी का ही ति स ते वा का मरण जया ते से जा कारण करि ने रा
 धात होई सो कार्य की या के सा है। त्व विकल जो हे य उपा देय का विचार ता विषे मूर्ख है। बद्ध रिउदर संसार विषे जो क
 बु सुष रूप विषे या दि क का से च न या ई है ता को त्व अंध क वर्त की य क जो नि। जे से आधा ता नी दे ते वटेर को पक
 डै ता का वक्रा आश्चर्य है। ते से संसार विषे यो शनी मुषी होने का धन आश्चर्य जानना ॥ ना वा हि जीव ते वं ली की बुरी
 वत अय नां वुरा होने का कार्य की या। बद्ध रिउदर पर्याय विषे तो कं कि बू विषय से वन ते कि बू सुष सा जया ता करि
 वं जाने है मेरी असी ही दि मार है गी। असे जानि निश्चित न था है। सा असी नी अवस्था ई स संसार विषे आंधे की व

देसमान होयाई है तलें बाके नरो में निश्चिंत रहना योग्य नाही ॥ आगे सुध उपजावन हारे वस्तु तिन के अति
 लब्धी जीविका कांम है सो यहु अवस्था करे है ऐसा कांम है ॥ हाक धर्मि वृत्ति नाजिर कांम एव ॥ चंडो दि
 खं यति पंडित मानि नो पिय ॥ पशु पातु तं दपि धीर तथा सहंते ॥ वंधुत यो मित्रि सुन समुत्सहेन ॥ १७ ॥ ३५ ॥ हा
 यहु वृत्ति कहे है ॥ जे आयकुं पंडित को नीमाने है तिन को नीय कुचंद्र कांम है सो विनाही अवसर इष्ट स्त्री
 निकानि मत करि खंडित करे है ॥ कोनी पना कांम मयं करि महा दुष उपजावे है ॥ वज्रि नृय कुआय्य देधि
 तस अपना खंड होना को नो धीर वीर पना करि सहै है ॥ अरइस कांम कुंतय सपी अग्रिकरि जलाय ने कुं नाही
 उताह करे है ॥ नावा कांम है सो देवता नियत सर्व जीवित कुं मतावे है ॥ वज्रि जे आयकुं पानी माने है तिन कुं
 नीय नि कानि मत ते छु करि दुष उपजावे है ॥ सो विवे जे से कोई बुद्धि वांन दुवार है है ॥ अर आयकुं कोई वागनि
 करि देवे है तहां माहस करि वागनिकी तो मारवा यो करे ॥ अर वागवाचने वाचे कुं मित्र जांनि वा के ना सका उपा
 यन करे वाकी पुष्टता ही कीया जाहे तहां वना आय्य मानिया ते से कोई आयकुं पानी माने है ॥ अर आयकुं कांम
 है सो स्त्री रूपी वांनि करि धीरे है सो उन की तो पीडा सहा करे ॥ अर कांम कुं हित जांनि तय सपी अग्रिकरि ता कुं न स्प

४८

करने का उपाय नाही करे है ॥ अने क सामग्री निकरि वाकुं पुष्टता ही कीया जाहे है सो यहु वना आय्य है ॥ सु ॥ आगे
 कांम जलावने कुं उताह रूप नर ऐसे कोई जीविते कहा करत नरा सो कहै है ॥ ३६ ॥ अर्थ मस्त एव दिवंस विष
 यान् कष्टि छिंदन याम् ॥ या पाताम वितर्पणी विगणयन्ना वात्सरस्तक्त वा ॥ यो वक्तुं सतां विमशु सुमो यमो
 मपर्यग्रहं देते विदितो मरणा सर्वोत्तमा सा गिता ॥ १७ ॥ ३७ ॥ ॥ कोई सागी तो विषय सि कुं ति तां समान अ
 कार्यकारी चितवन करि जे पुवदिक वाया च कल किके अर्थि तिन कुं लक्ष्मी देत नया ॥ वज्रि कोई अम सागी
 तम लक्ष्मी कुं पाय रूप छुटिकी करण हारी ॥ ऐसी मांमता संता का कुं न देत नया ॥ ऐसे आय बोड ता नया ॥ वज्रि
 अम कोई सागी सो जापद सा कुं धास नया सो तिस लक्ष्मी कुं यहै है ॥ क आणकारी विचारि नय हण करत नया
 ऐसे ते तीनों सर्वोत्कृष्ट सागी उत्तर २ उत्कृष्ट सुम जांन ॥ नावा सर्व धनादि सामग्री निकासाग करि तो सर्वो
 उत्कृष्ट सागी कहि राति न विषे जे पुत्रादिका कौंधनादि कहे ॥ साग करे है ते नी उक्त सागी है ॥ वज्रि जे ते वन के वो कबु कबायां सते का
 कुं देने का पविता मन नया ॥ इन के ऐसी विरागता नई जो को उग्र है ॥ इन का कि सु प्रयोजन नाही ॥ वज्रि जो यह

४९

नीहीधनादिककं प्रवेमांही॥ ऊमादिश्रवणाविषेहीसागकरेतेउमतेनीगुत्कृष्टत्वाभीहे। जातेउमतोमोग
 करितागकीयाइतूकेऐसीबिरागताजइजोपहलेहीमोगवनेकेपरिणामहीनाही। नगऐसेएसर्वदत्तकेदा
 तामुअमुकमतेउत्कृष्टतेउत्कृष्टजाने। ॥ आगेउत्कृष्टसंपदानिकं पाईकरिबोरेहेजेसत्पुरुषतिनकाकिबू
 नीआश्चर्यनाही। ऐसादिषावतासंतासूत्रकहेहे। ॥ विरजसंपदः संतः स्तुजंतिकिमहाकुसंभावभीत्किं
 तुमुसाशनसुमुक्तमयि नोजन॥ १५॥ सत्पुरुषहेतेविरक्तहोयकरिसंपदानिकंबोरेहे। सोइहांकहाअष्ट
 र्यहे। सामिसहि नपुसयहेसोमलेनकृपाकीयाऊवाजीनोजनकोंकहावमेनाही। अपितुवमेहीवमे॥ जावार्थगाज
 बहेतेतोत्यागकीएउपहोहे। हरसहनाकृतिनहेसातेरागीपुसपत्यागकरेतोतहो। आश्चर्यमंनि। वज्ररिदीतराग
 ताजराग्यागकरनेमेंकबुधेनाही। सुबहोहे। अरमुमुक्तकोननवहो। तातेदीतरागीपुसपत्यागकरेतहांकिबूनी
 आश्चर्यनाही। जेसेकाहनेनोजनकीयाया। अरबाकेऐसीजामिनईसमोजनतेमेरेखाएजाहिगेतवधुहपुरष
 उमतेजनकाउपायकरिजीवमनकरे। तेसेमिलेहएनीविषयनिविषेइनकेसेधनतेमेराबुराहोभाऐसीउदासी
 नताआणउपायकरिजीतिमकात्यागकरिहोइहांकिबूआश्चर्यनाही। ॥ आगेउत्कृष्टनीकुंबोरितासंताकेईक

४९

हाकरहेसोकहेहे। ॥ अथयजनजउः सोकं विस्मयंसात्विकः सतां करोति तत्तद्विचित्रं न शोकं न च विस्मयं॥ १५॥
 ॥ मूर्धपरकमरहितपुरषहेसोतोलह्नीकुंत्यागकरतासंताशोककरेहे। वज्ररिसत्पराक्रमकाधारीपुसपहोसोग
 वकरेहे। वज्ररितत्पराणीपुसपतिसलह्नीकुंत्यागतासंतानबोककरेहे। अरनगर्वकरेहे। सोयजनवकाआश्चर्य
 हे। जावार्थसंतारीजीवनिकेधनादिककात्यागहेतेदोयप्रकारजावहोय। जोयराक्रमरहितहे। अरबाकेकोईका
 रणपाईधनदिककात्यागहेतेतहांवकेतोशोकहोये। यऊकार्यकोनया। ऐसेअंतरंगविषेउपजेहे। वज्ररि
 जोपराक्रमकाधारकहे। अरबाकेकोईकारणतेवाअपनेउत्ताहतेधनादिककात्यागहोहे। तादावाकेगर्वहेहे
 मनेऐसाकार्यकीया। ऐसेअंतरंगविषेअहमेवहोहे। वज्ररिदोआश्चर्यजोतत्पराणीपुसपहोकाकेधनादिकका।
 त्यागहोतेसोकअरावदीउनाहीहोहे। जातेपानीधनादिककोपरद्वयजामेहे। वज्ररिपरद्वयकात्यागहेतेखेद
 अरगर्वहीउनाहीकीजिएहे। तातेपानीशोकगर्वरहितरूपापर ध्यकुंत्यागहे। ॥ आगेविवेकीपुसपतिक
 रिजेसंलह्नीनजिएहे। जेसेशरीरजीतजिएहे। ऐसेदिषावतासंतासूत्रकहेहे। ॥ विमज्जोपेदेर्माप्रीत्यनृतिमृतपय
 तमखिलंमुष्णपेतकेत्राशुविजयनिकराववज्रं बुधेस्सांसागाद्यदिजवतिमुक्तिश्चजउधीः सकस्यहं।

नामं बलजन्ममायोगसहस्रं ॥ १॥ अथ ॥ यजुःसरीरादिकहे सोमस्तद्दीर्घमतेन गायमरापर्यंतं वृषाः केचन ॥
 पवित्रं यथा राजवयाय जाविषे वज्रतया ईश्वरस्य हे सोमस्य यजुःसरीरादिकनी के विचारि ज्ञानी नि करि तज ॥
 नेयोपपत्ते ॥ यजुरि जाय के तागतं मुक्ति होय तो ऐसो मूर्ख बुद्धी कौन हे जाय के तागा करने को समर्थ न हो ॥ ३ के म
 देउरी रादिक दुष्ट जन्म का मिताय समान है ॥ नावार्थ ॥ सु ॥ अथ विवृणोम्यथा ॥ अयमं मया एव जहं एक नी यो
 नी कवज्जनी होइ तो ताको विवेकी जानै सो सरीरादिविवेक सब ही वज्रतयनें सदा काल पाई एहे ॥ ताते ए विवेकी नि
 करि बोधने योग्य ही हो ॥ यजुरि अमल जन्म होइ तो ग्रीष्म काल बोधने ॥ अरु इन के बोधने तें मोह होय तो ॥ ऐसो मूर्ख
 कौन जो इन कं न जानै ॥ जे सें दुष्ट कामि जाय दुष्ट दायक से सें इन कं सर्व प्रकार दुष्ट दायक ते सें इन कं सर्व प्रकार
 दुष्ट दायक जानि बोधने ही योग्य है ॥ ४ ॥ आगे जे सें लक्ष्मी अरु सरीरा अने क अर्थ कारक पनां करि वारं सें सें
 गागादिक ग्रीष्म ने ऐसा कहै है ॥ ५ ॥ कृतो धरागादि विविष्टैः कलं तथापि भूयो जननं दिलक्षणां प्रतीहज ॥
 वायु प्रिये मवृत्ति नि ॥ कुतश्च संस्थाप्य सित दिलक्षणां ॥ १॥ ५ ॥ हे मय ते ही ॥ अनां मरागादि न्यविमल प्रेष्टा नि ॥
 करि वारं वार जन्म मरणादि हे लक्षणा जाका ऐसा फल पाया है तो अवश्य ऐसी प्रतीति करि जो प्रसन्न विपरीत प्र

भक्ति नी करि सि सफल ते विपरीत लक्षणा लिपि जो फल न लखे न निवे करि न्याये गा ॥ नावा यो नो क वि ये नी जि
 सकारण ते जो कर्म निपति लिखे ते नु जग कर्म एते उ मर दी फल नि यते ॥ असे गार सीने जी रोग होई तिस ते उ वटा सीत
 लव सु ते नि स रोग का मा स होई ॥ ता ते हे कर्म ने भ्रां न भ्रां न म करि ज भ म र पा रि दु य म पु फ ल या यो छि म करि
 जि म कर वा ते ए क ही वार क र्थ नि य जे त हां तो उ म भ वि स होई ॥ जो जो त ही वार ए ति य उ क र्थ न या हो ॥ सो सं स
 री जी व नि के वार वार भ म्भान भ म्भान ही का ले क र्थ नि यो वार न ये न म वि दु ल हो स क र्थि हे ता ते र हां उ म न
 भं व छि ॥ असे जि स नो ज न या य त व री ग व भे तो जां नि वे द्य भ रोग का क र्णो व य ज रि ओ को र न ही के ज या
 हो इ तो मी उ म होई सो त ही वि वारि ये के से व रि से एं के का क र्णो व य हे ॥ ता ते जे तो के म उ म म पु र जा गो से जे से
 भ म्भान वि रु प रि हा मे हे ते ते परि ण म नं डो मि रु डि भ म्भान उ म म पु र से उ म म म म्भान ध रि त हे ता
 क त से व न कि ए ति स ज न्मा दि क र्म ने उ म म म वि रु डि भ म्भान उ म म पु र से उ म म म म्भान ध रि त हे ता
 ते स म ग हां न धा वि व से से व न हारे को रे एं भ म्भान से स म म म्भान ध रि त हे ता ते स म ग हां न धा वि व से से व न
 ते कि सु सु य हो हे ॥ भ म्भान वि रु डि भ म्भान से व न ते उ म म म म्भान ध रि त हे ता ते स म ग हां न धा वि व से से व न

ता नासे तो तहां जंनि एइस के सेवन ते सर्व रोग काजी नास हो गा। ते से इहां जी निश्चय करनां सम्पत्तां मचारित्रके
 सेवन ते सर्व दुःख का नास हो गा ता ते इन का सेवन कर मायो पड़े। ॥ आगे प्रेसा फल कुं वाहता संतां तंति स।
 मार्ग विवेग मन कर डो प्रेसा कहै है। ॥ दया दम त्याग समाधि संततेः अष्टि धिया ही धुगुणं प्रयत्नवान् नय
 सव रं पद सामगो चरं विकल सूर्य परमं किमप्यसौ ॥ ॥ स्वपर जीव की कस ए सो दया अर इंदिय मन का
 वस कर नां सो दम अर वस्तु निविधै राग को न नां सो त्याग अर वति राग वसा रूप सुधी हो नां सो समाधि इन की जो पर
 पाटी ता का मार्ग विवेकं न सहित हो त संता सधा कय टर हिन ग मन करि यह मार्ग है सो तो कं वचन ते अगो चर
 अर विकल निते र हित अ सो को ई परम पद है ता को अर वर पने व सास करै हो। न ॥ जै से को ई इष्ट नगर का संचाम ७
 र विधे सधा च जाय सो चहति स मगर को पोहं वे ही पोहं वे। ते से जो मोरु का सांवा मार्ग समाज्ञा मचारित्र विधे
 गर्हित दया दम आदि विधे पदन विधे कय टर हिन प्रवर्ते तो मोरु को पोहं वे ही पावे में साधन करे अर सिधन होई अ।
 मा उम ते जि थल मति हो उइ स साधन ते सिध अर वर होई ॥ ॥ आगे विवेकी पूर्व कपरि यह का त्याग रूप मार्ग है मे ७ ५१
 जीव को मोरु पद का प्राप्ति का राहा अ से इष्ट करन संता सधु कहै है। ॥ विष्णो न निहत मोहं कभी प्रवे गो विष्णु

इका यमिव त्यागः यद्यिह त्वात्मा भवत्यमजमरमं ऊरुते ॥ ॥ जै से यतन साधन विधे कटि प्रवेश किया है
 सो विमल शरीर को करे। ते से नेद विज्ञा म करि मर की पा है मोह जाने अ से जी को परिग्रह नि का त्याग है सो अर
 अमेव अजर अमर करै है। ॥ ज ॥ जे व विष्णो न करि मोह का नास कर नां सो सम्पत्तां न सहित सम्पत्तां न हे
 व ऊरि वाह अमं तर परिग्रह का त्याग कर नां सो सम्पत्तां चरि उहै। तहां सम्पत्तां न सहित सम्पत्तां न ही जीव नया
 अर वर सम्पत्तां चरि उहै। कार करे तो साक्षात् मोरु मार्ग हुं वा मोरु कं पावे ही पावे या में कि बू संदेह नां। ता ते
 सर्व कारण मिले कार्य का हो नां दुर्निधरि हो। ता ते अर उय विधे को ई हीन हो यो मोरु हो ने विधे संदेह होई सर्व तीनों मो
 रु के कारण मिले त व मोरु ही ई ही हो यो अमानि अर कर नां ॥ ॥ आगे विवेक पूर्व क त्यागी पुरुष निविधे सर्वोत्तम।
 त्याग को करता जो पुरुष ना के प्रसं सतां संतां सधु कहै है। ॥ ॥ अनुक्त पिपरित्यागात्त्वोच्छिष्टं विश्वमास्ति येन वि
 त्तं नमस्तस्मात्को भारवत्सुचारिणो ॥ ॥ यइ आध्याय करी कार्ये हे जी ह जीव न जो गि करि ही विषय नि का त्याग
 ते ममत्त विषय आपनी उगि संधान की या तिस ऊपर उरु म चरी के अर्थि हमार मम स्कार होइ ॥ ॥ ज ॥ पूर्व ती न
 प्रकार त्यागी कहै है। तिनि विधे जा के नोग सामर्थी का निमन आनि बभां है अर विरपा तां नुन को विनां नोग क ?

एही बांटे है। ऊमार अवस्था विधेह दिक्षा धारै है। तेसर्वोक्त एसागी है जो नोग करि बांटे तो नी आश्रय मां है। इन्हें
 सामग्री मिलतें नी विना नोग की संताग की या सो इनका वना आश्रय है। जेमें का ऊं के आगे जो नन धसा अर वह वि
 नां या ए बां के बांटे तो बाका नां मं उं वि है तेसें नं नं सर्व विषय विना नोग की ए बांटे ता ते सर्व विषय इन्हें नं विम मां
 न की रंतिन को ह मन मस्कार करै है। ॥ आगे जेमें साग करि ता जीव के परम उदासीनता है त कृण जा का ऐसा च।
 र उं पति पावन करत संता स उं कहै है। ॥ किं च नो ह मि ता स्व वे ता का धि पति न वे त योगि ग मं त व प्रो सं र।
 स म्प र मा त्म न ॥ ५॥ ॥ मे अ किं च न हं किं च नी मे र नं ॥ ॥ ऐ में ना व नं करि तं ति रि ॥ ऐ में ना व नं की रं ती न
 जो क का स्वा मी हो है य ऊं योगी श्व र नि कै ग म्प ऐ सा ध र मा त्मा का र ह स तो ऊं क ह्य है। ॥ ना व ॥ प्र कान ता ते पर वि मे
 म म त्व है पर अ य नं हो रं नां ॥ ॥ धा री ते ही न द शा के धा म हो य र ह्य है। ॥ व ऊं नि ज य ऊं ना व नं हो य जो को र पर इ य
 मे र नं ॥ ॥ त व य ऊं पर म उ दा सी न ता रु प हो य ता के फ ल ते ती न जो क जा के अ व नं स्वा मी मा ने ऐ सा प द ऊं पा वे य
 ऊं र ह स्य योगी श्व र ज ने है सो ह म तो को क ह्य है। ॥ तं जी ऐ सी ह ना व नं करि ऐ सी ह म शि का द र है। ॥ ॥ आगे अ
 व त प आ भा ध न का स ह प का अ मु क म के अ धि दु र्ज न इ या दि स उं कहै है। ॥ ॥ दु र्ज न म शु द्ध म य सु ध म वि दि त म

५२

तिस समय मज परमासु मनुष्य मिहै वतयो मुक्ति सप सै वत ल पः कार्य ॥ ५॥ ॥ मनुष्य पर्याय है सो दु र्ज न है अ
 प वि त्र है म रण मं जे का न जा नि ऐ सा हो उ त्कृ ष्ट आ सु जी जा का अ ल है ऐ सा है। व ऊं रि त य है सो र म नु ष्य प।
 री य वि धे हं हो हं व ऊं नि मु क्ति है सो त य ही क रि हो ले त ते म नु ष्य प नो पा र्इ ता को त य क र णं यो ग्य है। ॥ ना व र्य आ।
 मां का हित मो क हं ता की धा मि त य वि नं ॥ ॥ आ ते स म्प ग द र्ज नि गं म च रि त र्च क म य आ रा ध नां के अ रा धे
 तो सा का त मो रु मा मी हो रं व ऊं रि त य म नु ष्य प री य वि धे हं है। ॥ सो अ म र्जी क ह्य है। ॥ म ॥ दे व वि ष य प सा
 ता ए ग र्इ या ति वः ॥ ५ सं त ता नि रि य वि दे य वि क्ता म नु ष्य गं ध म सं य ती ॥ ॥ अ य दे व तो वि ष य आ स क अ र म
 र की ती व ऊं र ॥ क रि ते धा य मां न अ र ति यं वि दे क र हित ता ते म नु ष्य नि री कै ध र्म की धा मि है व ऊं रि म नु ष्य प री
 य वारं वार हो रं तो य म प री य वि ले त य न की म ॥ ॥ आगे क रै सो अ नंत का र न एं नी म नु ष्य प री य पा व नं दु र्ज न हो व
 ऊं रि दे व व त इ हं म हो य तो मु ष कं चो रि त य र रं क वि म हो रं सो इ हं म री क मां न सी क ॥ ॥ दु र्ज न की म नु ष्य ता
 हो ॥ ॥ म ऊं चो दि त य क र नं वि धे म द क ह्य व ऊं रि जो म नु ष्य क सुं द र म री र हो रं तो ता के वि गार नं का म य हो य सो धा तु
 उप धा तु नि क रि ति य न म ॥ ॥ अ य वि त्र कां त य वि ले न गा व नं का न य क ह ॥ व ऊं रि दे व व त म र ण का नि ष्य य हो य।

तो कितने काल तो निश्चित रहिए ही तय करिए सो मनुष्य के मरने का निश्चय तो ही कब मरे धुंकारे लक्ष्मण ।
नी आयु बहुत होई तो मेरा लक्ष्मण । आयु हो गा । ऐसा धर्म कर ही तन करिए उल्लेख आयु जी बोरा ताते तुज कं
धुमा दीन हो ना । सावधान होय तय ही कर ना योग्य है । ॥ आगे तहां बार ह्युकार तय विषे मुक्ति का निकट साध
न ध्यान रखे सा काये ध्यान आदि विधा वसंतों सख कहै है । ॥ आराध्या नम वानुजा गद्य मुकुर्वति सतां
समस्त लोक श्रेष्ठ भूषण सति । हितिरयिषु लक्ष्य । कर्म लोकाध्य सिद्धि सुखं कियान् परिमितः कालो मनः सा
धनं । मम कवेन सिद्धिं तयं नु विदुरं किं वा समो बुधा ॥ ॥ अथ समाधि विषे तीन जगत का गुरु भगवान् सो
तो आराधना । अथ भक्तिकरि मराही । ऐसी प्रवृत्ति करनी । अथ तिस भगवान् का चरण का स्मरण करना । इतन
लेश बहुरि कर्म निष्ठा प्रवर्धने भाग्य हो नाय ऊपर च । अर का लक्षित नाइ कपरिमाण ली एं थोरा अर मन
का साधन करना । ऐतान् ही तुम के मन विषे विचार करो समाधि विषे कलक हहे । नावार कोउ जानें गात मवि
बें क हहे क ह ह ह । जाना ना ही ताऊं कहि हें सर्व तय निविषे उल्लेख एत ध्यान है तिस ही विषे कहा क ह है सो लं क
हि । अथ म तो भी चे का से वन करे लं जादि क का वे वन होई सो तो ध्यान विषे तीन लोक कानाथ अर हंतादि क वा

[illegible]

[illegible][illegible]

ययः सधनः सन्नासाकुतिमुजिमसाधिनवरमं ॥ २१ ॥ अथ जाकासरीरहेसोतयसपीवेतिविषेनियमायाहेपु
 ल्पसुपीवत्कृष्णकलजानेअसाहोतसंताजेसेकावाकलकाअप्रभागविषेकृष्णजरियरेतेसेकाजयायक
 रिगताहेविनष्टमयाहेवज्जरिजाकाअयुहेसोसमाधिरूपनयाहेअतप्रवस्थाजाकीअसाहोतसंतासं
 माससपीअभिषेराधिनीयाहेहृदयजानेअसाजलकीमीनायोसुसताजयसोजीवधमहेनावायजेसेवेति
 विषेकृष्णकोमेसोकावाकलजियजायआपजरियरेतेसेजिनकातयविषेजरियवसाहोयसोपुण्यकोनिय
 जायकाजयायआपमहहोहेवज्जरिजेसेअपिसंजोगहेतेअसहेसोधधुंराधिआयसुमेतेसेसमासहो
 तेजिमिकाआयुहेसोधर्मकोयविआपसोमिहोहेअसेसरिरअरआयुजिमकासफलहोहेतेपुरुषधनहे
 ॥ २२ ॥ अगोवाहेहोपरमयेगापजरिसयुजजीवअपविउअरउवधायकजोसरिरतिसविषेवाकायालतावाके
 मंगोरहमांअसेकरियकरीहेनिमकेजोकायाहेजाकुदोयसोककविकहेहो ॥ २३ ॥ अमीप्रसद्वेरापस्तनुम
 यतुपलभयतातयपतिविनंदिज्ञातंज्ञानस्यवेनव ॥ २४ ॥ अथ एतत्कृष्टवेरापजिनकेवाइएअसेजीवजोश
 रिकुंजीवातिधिरकालयंतितयकरिहेसोहमयकुहांजकंपुत्तजामोहेनावायजिमतेउदमसजेताकाया ॥



५५

जनातिरुद्धपदं सुखांताहेइसोवकेपावेहेअपनांधयेजमसाधताजामेनोअपतांधयेजमजेसेसंधैमेसेवाडुं
 यावेअसुरागकरियाकुंअधिकपेयेमांदीसोतहासुनिसरिरमेनुहासप्रयेहोपंहुइनुकेअसापांतहोजोम
 सुषसरिरहेमयहोहेनामेअहासदिकदेइयाकुंअपनांधयेजमकेअधिरायेहेअसुरागकरियाकुंवज्जततां
 हीपेविहेअसेसरिरकुंतायिधुनकायपयंतिअपकतांतेअहापंअहीकासहात्यहेइहांअनहोइनोअतिउ
 गताकरिआरीकभावाकरीधीकेयेअजिअययेयायेमहंमंयसकाअत्रावहोईसोहांमीअसेनांहीकरेहे
 ॥ २५ ॥ अथ अयमिदं देवमहर्षिः सहेतुकः ॥ अविद्वेत्तुसाधुममसाधोधोनिरोधक ॥ २६ ॥ अथ जोज्ञानहाथकापे २
 चायकडिसेकमहमहोयनाकुंसुनिआधुनिकाअमीसरिरमहितसाधिरहमांकोअहेकोईनमहेनावाय
 जेसेकाऊहेकहासोविप्रतापीसेवाकोपुपनेआसुंतवरातेधडिअरिवाकासायकुंतकाजलोम्याचलेमहा
 कोईसांताधुममहाकासायकापेचायकडिसमअधेअमेतोअडेअहामीपुषदायकहोगातातेकोईदिन
 भाकोसाथसाधिमिर्वनकरिआकजेसेसंताममसहोइसेवेकार्यकरतांयोपयेसेसेआत्माकेसरिरसेअसुराग
 अजयकाकेडुःखकाकारणजामांतवराकुंअधुआचरनंतेनासवीथवाहेजिमवांजीजनिनगंनतेथरुविवा

रभाया जैसे कि ये तो बहुत दिवस दिए गए थे पावन होना ताहें उधुपय जैगा ताते कितने काल या अंसा धि राधि
निर्वल करि ऐसे व ऊरि मरीर धरना न होय ते से कार्य करना सो ग्यहो जैसे ग्या नरो कन हारा न होय तो को न मु
नि मरीर का काय संवे जो वृग जानि करि नी प्रथो जन के अर्थि धारी का साधन धि रहै सोय ऊ ग्या नही की महि
मांहे सो अमो इस अर्थ अं दृष्ट संधार करि दृष्ट वस्तु संता समस्त इत्ता दि होय लोक करि कहै छे ॥ समस्त स
भा संवृ प मिष प रि स म न्ना वा न्ना स प स मिष ता सु धि ता र व सी न पर य ह न वि ता द्दि का र्थ स य म ल न मा
नो पि सु किं न शो क्यं किं वा प मि ह परै कार्य व स न ॥ १॥ अम ता न श्री आ वि ना य सो स प स्त व डे रा अ कं त्रि
तां की सी न यो क रि त य क म्ता मां न ए हि म न्ना वी व व स मे ज म का अ र्थी ऊ वा व ऊ स का ल त र्द मो ज न कं न वा
व ता स म श्री प प ध र नि ति प्र सि प्र म त न ॥ तो इहां के व ल अ प ने कार्य के व स ते मो र न करि वा सु पारि व ह न सह
नां अ पि तु कार्य के अ र्थि स ह मां जो पं से धा वा ॥ जो कार्य का अ र्थी होय सो यो ग व ज न क ह म ह नो से य तो कष्ट
जी स है परंतु अ प मां कार्य की सि दि करे भा का पु दा ह र ए वि यो वृ थ न ता य स र्व स अ कं तो रि जो ज न का अं त रा य
अ य की य तो जी जो ज न के अ र्थि जैसे न्ना दी न पर ध र जा य ते से पर ध र कि र ता ऊ वा जो जैसे म हं न पु स वों ॥

[illegible]

रिसंसारविधे तो कर्म ही बलवान है। ताते संसार अवस्था अनाद सोई अपनो हित कार्य हे ऐसे निश्चय करि साध
 न करे। ॥ १ ॥ आगे इस प्रकार समग्र दर्शन दिक्तीन आराधना हे सो शास्त्र पानादिक की प्रधानता करि प्रवर्त्ता
 क्तवा जना प्रयोजन का साधक हो हे। ॥ २ ॥ अन्वधाना ही यत्ने ताके अन्तराज्ञा आराधना के दिवा वने का अनुक्रमक
 रता संतां प्राकट्यादिसुत्र कहै हे। ॥ ३ ॥ प्राकट्याज्ञा प्रधानः स्यात्पदीय इव संघर्षी पद्मनाभ प्रकाशा मां प्राप्त्वा
 नवहि जासतां ॥ ४ ॥ संघर्ष ही सो पद जे सोही पद वत् प्रकाश है प्रधान जाके ऐसा हो श्री पी वैताप अरघ।
 कथा इति स्मृति प्रन दे दीप मान हो ॥ ५ ॥ मोक्ष का साधक हो सो घर्षम अवस्था विधे तो दीपक समान हो हे
 जे से दीपक ते जाहि मा मयी के बल ते वल्य वारि क का प्रकाश म हा ॥ ६ ॥ ते से वा स्रविक के व ज ते जी वादिक पदार्थ
 निक ज्ञान न हार हो हे। ॥ ७ ॥ अरि पी विना कुं सूर्य समान हो ना योग्य है जे से सूर्य स्वभाव ही ते घने पदार्थ नि का प्रकाशन
 हो हे। ॥ ८ ॥ अर प्रतापक धरन हार हो ते से स मा व ही ते पदार्थ नि का विशेष ज्ञान न हार हो हे। ॥ ९ ॥ अर त व धारणादिक का
 साधन हार। ॥ १० ॥ ऐसा अनुक्रम जानतां ॥ ११ ॥ आगे ज्ञान आराधना का आराधक जीव हे सो ऐ सा हो त संताई स कार्य कुं।
 करे हे। ॥ १२ ॥ ऐसे कहै हे। ॥ १३ ॥ अत्वा दीपो य मो धीमान् ज्ञानधारि उभास्वः स्वमम प्राप इत्येव श्रद्धमन् कर्मक जलं ॥ १४ ॥

५९

॥ १५ ॥ अज्ञानवान जीव हे सो ही पद समान हो हे। ॥ १६ ॥ अज्ञानवान धारि व मिते दे दीप मान हो त संतां कार्य सूर्य का जल कुं
 द म ता संता आपा पार को ध का हो हे। ॥ १७ ॥ ज्ञान आराधना का आराधक हो सो दीपक समान हो जे से दीपक दीप्ति सिद्धि
 न भास्व हो हे। ॥ १८ ॥ अज्ञान जल जो व है। ॥ १९ ॥ ऐसा हो त आपा कुं अर प स्रवट पट्टादिक कुं प्रकाश हो ते से ज्ञाना जीवां धारि
 व स हित दे दीप मान हो हे। ॥ २० ॥ अज्ञान कर्म की निज रा करे हे। ॥ २१ ॥ ऐसा हो ता आपा आत्मा कुं अर पर सारि रादिक कुं यथाव
 त जाने हो। ॥ २२ ॥ आगे निमग्न हो त प्रकाश मान आराधना का आराधक जीव हे सो शास्त्र ज्ञान से अज्ञानो विधे कति स।
 पूर्व क कर्म ते अनुभवरिण म बो रि सुद परिणाम कुं आश्रय व सि पु न हो हे। ॥ २३ ॥ ऐसा विचार ता स्रवट है हे। ॥ २४ ॥ अ
 मुना व मुन मायातः शुद्ध स्य व मुन मायात र वे रा स सं अ स त म सो न म मु द स ॥ २५ ॥ अमुना व मुन मायातः शुद्ध स्य व मुन मायात
 ते अनुभते वृद्धि व कुं श म हो ता शुद्ध हो हे। ॥ २६ ॥ अज्ञान ज्ञान के अर्थ जो सूर्य ता के अंध का
 र का पराट पना न हो हे। ॥ २७ ॥ जे से संघर्ष संघर्षी नाली कुं त श श हो ता सूर्य ता के अंध का र का पराट पना न हो हे। ते
 से अनुभ र गा र हित आभा हे सो कर्म ते पुन रा ग स पु र ई शुद्ध के न द स कुं श श हो हे। ता के अज्ञानादिक का उपज
 ना न हो हे। ॥ २८ ॥ आगे इस प्रकार ज्ञान आराधना सम परिणाम जीव के त प शास्त्र विधि अनुक्रम अनुशासन स र गी प

नां हो हे तांतं मुक्त पनो कै से होई ऐसी आसंका करि उत्तर करे हे ॥ विद्युत तम सो रागस्तपः श्रुत निबंधनः संध्या
रागः शार्ङ्गः स्याजंतोरमुद्ययायममरागः ॥ हरिकी बाहे अण्णान्प्रंधकार जानें ऐसा जीवता के तय शास्त्रादिक
संधी राग नाव है सो कला राका उद्यही के अर्थि है ऐसे सूर्य के प्रजात संध्या संधी रक्त ना है सो उद्य के अर्थि
है ते से जान ना ॥ नवा ॥ ऐसे सूर्य के ऐसी अस्त समय संध्या विषे आली हो हे ते सी ही प्रजात समय संध्या विषे आ
ली हो हे ॥ परंतु प्रजात समय विषे राग संधी अंधकार का ना सकरि संध्या विषे नो आली नई हे सो आगामी सूर्य
का उद्य उद्य कुं कारण है ते से जीव ऐसा विषयादिक विषे राग हो हे ते से ही तप शास्त्रादि विषे राग हो हे ॥ परंतु तप
शादि विषे मिथ्या संधी अण्णान्का ना सकरि संधि विषे जो राग नया है सो आगामी जीव का उद्य के वलद सा रूप
उद्य कुं कारण है ॥ अगोरे सने विपरिति जो राग विषे हो कुं दिखत भूत सो है ॥ विहाय मास मा नो कंपुर
क सद्युनस्तमः श्विः ॥ प्रागमाग न्याता नतल मिळति ॥ जीव है सो सूर्य वत व्यास नया प्रकास कुं बो रिव कुं
रि अंधकार कुं अण्णान्पी करि राग नाव कुं प्राप्त होत संतापता नतल कुं प्राप्त हो हे ॥ नवा ॥ ऐसे अस्त होत सूर्य है
सो अस्त पत के तिरहा प्रकास कुं तो तां है ॥ अस्त अंधकार आगामी हो महार मया है तिस संध्या समय विषे जो रक्त रंग

[illegible]

नारदीगमनयेसाजहंसमाजमितेसोममाजतिसमुनिंउंउपदवितांअनिष्टस्यानककुंघामकरेहे॥नारदी
 कोइपुसयकाऊनगरकुंघालेतहंआगुंआदितामयीमितेतोनिरुपदवमगरकुंघकुंघे॥इहोकोइअमोह
 कुंघाहेतहंआमदिहसामयीमितेतोनिरुपदवमोहकुंघामहोइमहंजेसेंआगुंमार्गवतावेसेंमंघानतो
 मोहमार्गविषेहेयोपादेयमत्तनिकानिधयकरहेहे॥वज्ररिजेसेंसाधिलीहोयतोमार्गविषेसुखस्योगमनक
 रेनेसेंसाधियमसंवंधीतआहेताकरिमोहमार्गविषेसुखस्योषवहेहे॥वज्ररिजेसेंमरवीवटमारीपासिहोइतो
 सिधिलतामहोइतेसेंतपकासाधनकरिजिअलतामहेहे॥वज्ररिजेसेंचटनेकुंघालीहोयतोचनतेवेदन
 होइतेसेंनिकषायरूपवारिअभावकरिमोहमार्गविषेप्रवर्ततावेमहोहे॥वज्ररिजेसेंमार्गविषेयमनेकेस्या
 मकवोषहोयतोतहंविश्रामहोइतेसेंमोहमार्गविषेयमनेकेस्यानस्वर्गहेतहंविश्रामहोहे॥वज्ररिजेसेंर
 मयालेसाधहोयतोकोइअलूटे॥तेसेंकुमादिकगुणरमयालेहे॥तातेकोधादिकनोहीलूटेहे॥वज्ररिजेसेंमार्ग
 मलहोयतोसुखसुगमनहोय॥तेसेंमोहमार्गसरनकपटरहितहे॥तातेसुखस्योतहंअवर्तहोहे॥वज्ररिजेमार्गवि
 षेअलधमहोइतोइधकाडुधनहोइतेसेंमोहमार्गविषेउपसमभावहेभाकरिइहाकाडुधनहोहे॥वज्ररिजे

५९

सेमार्गविषेहायहोइतोआतायनहोय॥तेसेंमोहमार्गविषेस्वदयापरदयाहे॥मतेसंतायनहोहे॥वज्ररिजेसेंगम
 नकरहेतोमगरकुंघाहे॥तेसेंइहंअधुनायमांजावेहे॥ताकरिमोहकुंघावेहे॥तेसेंसामयीमितेजेसेंपरिकअनिष्ट
 नगरकुंघाहे॥तेसेंमोहमार्गीअनिष्टमोहपदयावेहे॥आगेतेतिसचलनेविषेउपदवकोनहे॥असीआसं
 काकरितिनउपदवनिकुंघकुंघावेहे॥मिथ्याहृदिविमानवदंतियणिनोहंतदासःस्फुटंया
 मामर्दविलोकमेरपिआरुंधरातेसर्वत॥तास्वदेवविजोमधर्तनीअसंधुमंतिबद्धकुंधलीरूपेणविषहिके
 वलमतस्तोचरंमासमा॥सर्पनिकुंजोदुखिविआतिकेवतावेहेतोतोऊठेहे॥हमइतलीनिविषेमोह
 हिविषयनोदेनोहे॥केहीहेहीजिनिककलकलआवाअवलोकातनिकररीजोससर्वापनेंहासक्यहोहे॥व
 ज्ररिजिनकातागतेप्रतिहलीनकाजोतंसोहउज्जिमेकोपहंसुइतेलीमोहकुंघकरमेकेअधिअतिसयकरि
 नुमिहो॥सोईकयकरिमेवउपदविषेहे॥तेतंतिमकेमोचरमतिधातहंमु॥नोवविषेकोइसम्यअसेंसु
 निवेहंजिनकुंघे॥हीविषचहेसोअतोअलंकारकरिकेउपदवमया॥वज्ररिजिनिकेकनरुकरितकाअविष
 ममांसआपयकारीकांमविकारहोइतातेहीनिकेहृदिविषयनोकहो॥वज्ररिइहंमुनिंउंउसीधदइजोअ

रतो सर्वही स्त्री निके किं वर है अरत्नं ति नि का सा गी जया है सो ते रै नु क र ने कं तो स्त्री का रण हो य र ही है सो तं उन
का विषय गो ध र म ति हो क मो क मा र्ग विषे स्त्री निके व शी नू त हें ना सो ध मा उ प द व है ॥ कु द्रा बा ण ह रा न वं ति नु
ज ग द वै व क्रा ण क वि त्ते वा मो ध ध य द्य मं ति व ह व म द्यो ति म न्यु नि दः ॥ द सु स्त्री नु गी जा णः पु र ह व मु द्रः कु दः ध म
ना स्त व यो गें द्रा य ति नि दे म ध वि द्या दृ षा व दृ ष्टा यि च ॥ २ ॥ अ र्थ है ते तो जो ध वं त न ए को र्द का ल विषे ड
मि क रि स्त्री बा रानि के ह व न सारे हो है ॥ व क रि न त्का ल विष कं ध रि करे औ से ति नि के उ ध ध व क्त त पा ई ए है व क्त
रि ए स्त्री रू पी स र्व है ते जो ध वं त न ए नी अ र ध स न न ए ग्री प र लो क विषे अ र द स लो क विषे च रं वा र ति नि यो गी
स्व र नि धं नी रं वे क्त रं ग्री वा वे वि क रि कं नी ह ने हो या ते तो कै स है स्त्री स य स र्प उ प ध र ह स है विष जि न का औ सें है
सा र्थ ॥ जो क विषे स र्प कं अ ति अ निष्ट ज्ञा नि ति स तें म रि ए हें अ र स्त्री नि कं अ ति इ ष्ट ज्ञा नि इ त का वि द्या सक
रि ए है सो र्द हं स्त्री नि ते रा ग द्रु ता र्थ सें अ र्थि स र्प ते नं स्त्री निके अ धि क ता दि धा र्द है ॥ स र्प ॥ तो जो ध वं त क्त्वा ही मा
ये ॥ स्त्री जो ध वं त क्त्वा तो को र्द उ पा य करि अ र ध स न न क र्द आ क ल ना व धा य करि जी व कं ह ने हें व क्त रि स र्प तो को र्द

एककालविधेभारै स्त्रीसलो कपरलो
 रुखिवेवारवारमरणकराके वज्ररिसर्यतोउसकरिहीवाणनि कुंहरै स्त्रीविधीजईहीवाआपदेभिकरिजीजीव
 काधानकरै वज्ररिसर्यकेविषहरकरनेकुंतोअमेकनुषधिहै स्त्रीनितैजयाकांभसंतापताकाकोईनुषधही
 नाहै ॥ असेंस्त्रीरूपीसर्यमांरुमार्गीकोजीअष्टकरैहोतासंदनकाविद्यासकरनानांही ॥ ६॥ एतामुत्तमनायि
 कामजिजनावजांजगत्प्रेयसी मुक्तिप्रीत्यमागुणधनयिनीगंतुतवेवायदितांत्वंसंस्तुतवर्जयाभवनितावा
 तामयिप्रपुतंसमामेवरतितनुपनिनरांधामेणसिर्ष्याः स्त्रियः ॥ ७॥ अथमुक्तिवस्त्रीरूपीमनोहरस्त्रीउत्तम
 नाथकोहोसोतामाजमनिकरिबर्जितहै जिसतिसकैयाकीधामिहोयसकैहै वज्ररिजगतीवधैप्यारीहोयाकास्व
 रूपजानेंयाकुंमर्यबाहैअसहैवज्ररिगुणनिधिसेहवर्तीहैजाविषेगुणहोयतिसहीकांयाकीप्राप्तिहोहै ॥ असी
 यज्जिनाकुंधाप्तिहोमैंकैअर्थिजोनेरेइबापाईएहै तोहंतिसमोकलस्त्रीहीकोरनउयादिकनितेंआनृषितकरि
 वज्ररिषगटयने अमलोकिकस्त्रीनिकायतोकुंजीवारि वज्ररितिसमोकलस्त्रीहीविषेअमुगाकुंविस्तार
 दयाय ॥ असेंरुजकुंमोकलस्त्रीकीप्राप्तिहोसी जानेंस्त्रीहैनेवाकुलयमेंइयांसहितहोहै ॥ ८॥ अलंकारक

रिमोहलकीकुंसीकही। सो जेमें कोई पुरुष कोई स्त्री को अपने वंश की या चाहेत वह और श्रीमि की वातो न
 न करे वाही विषे अनुगम वधावे। आचूषण दिक नि करि वा को प्रमन करे तैमें मोहलकी कुं वाहे तो लो
 की कस्ती नि की वातो नीमति करे। वाही विषे धीति वधाई रत्न वधा दिक ते वा का साधन करिय जु उपाय है। वज्र
 रि जेमें स्त्री नि के परस्पर ईर्ष्या ईर्ष्य है। ताते विरोध लीं जे दोय स्त्री नि विषे एक ही का साधन वने। तैमें मोह।
 लकी के अर लो की कस्ती नि के परस्पर विपरीत है ताते विरोध लीं जे मोहलकी अर लो की कस्ती नि नि
 विषे एक ही का साधन होमा। ताते लो की कस्ती नि कुं तो रि मुक्ति लकी का साधन करन॥ ७॥ वचन मलिनै हास।
 सचे स्तरा सुषोदने र्वदन कमलै को रूपाः स्थितः सरसी समाः इह हि वदः वसत प्रसूत ते पिपासवो विषय विषम।
 ग्रह प्रसाः पुनर्न समुद्रता॥ ८॥ ॥ श्री गुरु वरी समान है तेहा स्वरूपी स्वस्वता लीं अर व को नि आदि तरंग सुयकारि।
 जन के गति पाई। जैसे वचन रूपी जननि नि करि वज्र रि मुष रूपी कमल नि नि करि वा विषे मणी यहे। सो इन।
 स्त्री रूपी सरोवरी नि विषे वज्र तनि बुद्धी जीवन दही विषे दृष्टा वंत होत संतें विषय रूपी विषम गोहता करि से ऊए व
 डरि नाही नि कसे। जा वाय जेमें कोई सरोवरी नि विषे निर्मल तरंग लीं जल अर कमल पाई हे नि न करि वा दार।

६१

मने यो मना से हो वज्र रि तिस के मध्य गोहनां मा जल चर ली वसे हो। तहं कोई नि वि वि की दवा वंत न या तहं जायत
 दही विषे वदर वा सोय जु तो पृथा हरि कर ने कुं ग या था अर व हं का को गोहनां म जल चर अपने तं त नि सो धी
 चि करि गिलाया। वज्र रि नि कस्ती मां ही मर वाही कुं ग या जन गति से र स्त्री हे इन विषे हास्य वा बुक्ति ली ए वचन अ
 र मुष की सो जा पाई हे नि नि करि वा दार मने यो मना से हो वज्र रि इन के विषे कां म से वन रूप विषय का कारण पने
 पाई हे तहं कोई अयां नी वेद जनि म दृष्टा वंत म या तहं जाय दार ही अर नो कन कर ने जागा। सोय जु तो अपमी
 वा हि मिटा वने को मया अर व हं कां म है सो अपने विषय रूप सामगी निने विफल करि वृष्ट की या वज्र रि वे ते ना ही
 स्वावरा दि पृथी को धाम हो हे ताते इन स्त्री नि का चि वा सम करन॥ ९॥ वापि हे जगती विधी तम नि तः प्रवाल
 रागान लं कुं हे रि दय लु सु के र्न य पदेः संवा सितः सर्वतः हं ते त दार ए पि ए ज न म माः स्त्री वचना निमित्तं धात
 स्थान पुपा अयं नि म वन बा धा पि प या जु लाः ॥ १० ॥ अर्थ। वापी को धी जे इंदिय रू स अहे जी ति नि सि कार का र्था
 न क के वो गिर द ग रा रूपी अग्रि कुं ज लाई करि सर्व तर फ ते न या स्थान नि करि न य वां न न ए जैसे जे ए मनु रूपी
 हिरण्ये अकुल ता वंत न ए दार का को वाह ता संता हाय हाय कां म रूपी अहे जी ति के स्वांमी का जो स्त्री रूपी कय।

टकरि नियजायाभारनेंकास्थानकताकंशासहोहे॥आवायजेमेंकोईप्रधानअहेमीकेकिंकरसिकारकरावनें
 कैअर्थिजहांहिराहोईतहांवोगिरदअग्रिलगावे॥अरकसिकारकरमेंकास्थानवतावे॥तहांहिराहोते॥
 अग्रिकेअर्थतेंजाजितिसंस्थानककंशासहोईइहांहमवधेगोसोउहांप्रधानअहेमीतिथेसोउमकंशास्त्रदि
 कतेंभगोतेमेंप्रधानविकाररूपकामताकैइंदियस्तीकिंकरतेजीवकुंअष्टकरनेंकुंवतादिकविषया
 नविषेरागादिउपजायाअरकस्त्रीस्त्रीपदार्थलोकविषेपाईएहे॥तहांजीवहेतेरागनावजनितआकुल
 तातेपीदितहोईतिसस्त्रीकंशासहोईइहांहमनिराकुलकेंगोसोइहांप्रधानकामविकारवसेसोउमजीवनि।
 कुंअर्थनेकुंवेष्टासुखंशानिकरिबुद्धकरेहे॥तहांपरमआकुलताकुंयावेहे॥तातेस्त्रीनिकंजलास्थानजानित
 हांविद्यामकरनांयोगनाहो॥आगेअसेंवाद्युपपदवकेकारणनिविषेधुतिकुंनिषेधरूपकरिअवअं
 तरंगउपपदवकेकारणनिविषेतिमप्रवृत्तिकोनिषेधतासंतासूत्रकहेहे॥अथउपपत्तयोपिनामययुगुप्ता।
 योगस्यदेशरीरमिदमर्द्धाध्यावन्नकिंप्रपतिवृथावृजसिकिरतिमनुनजीवयस्याचुरोनिमार्गतरलाःस्त्रि
 यस्त्वदिहताःस्फुटंविमति॥३॥इहेनिर्लकुतपरुपीअग्रिकरितेरागकुंशरीरअर्द्धवामामउमरिषानया-

६२

अरजुगुप्ताकास्थानकहोथरहाहे॥ताकोंकहातंतदेवेहेचुवाही॥आशक्तताकुंकोंशासहोहे॥हेअर्थतोआ
 तरवंतकुवास्त्रीनिकंमाहीमशवेहसंगकीयाकोहे॥परंतुइमलोकविषेनेस्त्रीमहजहीचंदनकाथरहे॥तेतुज
 तेंधगाटपनेंभरेहेतेरीनयानकसूतिवेधेजजेहे॥नकाचकोईदिकाधरिकांमविकारतेस्त्रीनिविषेअनुरागी
 हेहे॥तकुंइहांशिष्याइहे॥जोतेरासरीरतोतपकरिअयकारीअरविनावनांमैसानयाजैसाआधावामाम
 उहोईअवतंस्त्रीनिकासंगथाहेअरउमकायकस्वभावजोजाकाशरीरसवास्थानदेवेतिसकीहास्यकरे॥तिस
 गंतरीगोसोहेनिर्लकुतेरेउमकासंगहोनांमाहीवृथाही॥आयोकाहेकुंविगारहे॥इसपदवीकुंयाईतुकुंअपुनां
 अजाहीकरनांयोगहे॥आगेनिजस्थानविषेतरतिकरेहे॥असेदिषावतासंताउतमइसादितीनश्लोककहे
 हे॥उतंगसंगतकुवाचलउगईर॥माराइजिउयसरिषमावतार॥रोमावलीकुंस्त्रिमागमनंगमूढाःकोंताक।
 टीविधरमेसनकेप्रवि॥३॥अप्रकामविकारनेंमूर्खनअसेंकोनअवस्त्रीकाकटिबिडजोथेतिस्थान
 ताकुंशासहोयपेदधिअहोहे॥अपितुसर्वहीतकालबाआगामीमहाधेवकुंयावेहीहे॥कैसाहेसोस्थानउंचे
 अथपरस्परनिडाएअसेजेदोयउचतेईनपर्वतरूपगदतिनकरिउःवाप्यहे॥वज्रिअतिसयकरिब्रिब

टक विनिययायाभारनेकास्थानकताकंशासहोहे॥ जायायेसेकोईप्रधानअहेमीकेकिंकरसिकारकरावने
 केअर्थिजहांहिराहोईतहांवोगिरदअग्रिलगावे॥ अरकसिकारकरनेकास्थानवनावे॥ तहांहिराहोते॥
 अग्रिकेभयतेजाजितिसंस्थानककुंशासहोईइहांहमवधेगोसोउहांप्रधानअहेमीतिथेसोउमकुंशास्त्रदि
 कतेमगोतेसंप्रधानविकाररूपकांमताकेइंदियस्पीकिंकरतेजीवकुंअष्टकरनेकुंवर्णादिकविषया
 नविषेगादिउपजायाअरकस्वीस्पीपदार्थनोकविषेपाईएहे॥ तहांजीवहेतेरागाभावजनितआकुल
 तातेपीदितहोईतिसस्वीकुंशासहोईइहांहमनिराकुलकेगोसोइहांप्रधानकांमविकारवसेसोउमजीवनि।
 कुंअयनेकुंवेष्टारूपवागनिकरिउत्पदरेहे॥ तहांपरमआकुलताकुंयावेहे॥ तातेस्त्रीनिकुंजलास्थानजानित
 हांविद्यामकरनांयोगनाहो॥ आगेअसेंवाद्यउपध्वकेकारणनिविषेध्वतिकुंनिषेधरूपकरिअवअं
 तरंगउपध्वकेकारणनिविषेतिमध्वतिकोनिषेधतासंतासुउकहेहे॥ अथउपतयोप्रिनातययुगुसा।
 योगस्यदेशरीमिदमर्द्धवधवावदन्किंप्रपतिवृथावृजसिकिरतिननुमनीययस्यादुरोमिसर्गतरलाःस्त्रि
 यस्तदिहताःस्फुटंविभति॥ ३॥ ॥ हेनितकुंतपहपीअग्रिकरितेरागुशरीरअर्द्धवलापडापरिधानया-

६२

अरजुगुसाकास्थानकहोथरहाहे॥ ताकेकहातंतदेवेहोचवाहो॥ आशक्तताकुंकोंशासहोहे॥ हेनृत्ततोआ
 तरवतकुवास्त्रीनिकुंमाहीमशवेहसंगकीयाकाहेहे॥ परंतुईमलोकविषेतेस्त्रीसहजहीचंचलकाथरहे॥ तसुज
 तेंप्राटयनेभरेहोतेरीनयानकसूतिदेखिजाजेहे॥ नाकचकोईदिकाधरिकांमविकारतेस्त्रीनिविषेअनुगामी
 होहे॥ तकुंइहांशिव्याहहे॥ जोतेरासरीरतोतपकरिनयकारीअरवितावतांमैसाजयाजैसाआधावलाप
 डाहोईअवतस्त्रीनिकसंगबाहेअरउमकायकस्वभावजोनाकाशरीरमवास्थानदेवेतिसकीहास्यकरे॥ तिस
 गंतहरीगोसोहेनितकुंतरेउनकासांहांनांहीवथाही॥ आयोकाहेकुंविगारहे॥ इमपववीकुंयाईतुकुंअपुनां
 मलाहीकरनांयोगहे॥ आगंनिजस्थानविषेतरुतिकरेहे॥ मैसेदिवावतासंताउतंमइसादितीनश्लोककहे
 हे॥ उतंगसंगतकुवाचलउगहिरा॥ मराहनिप्रयसरिधमावतार॥ गोभावलीकुंस्ततिमार्गमनंगमहा॥ कांसाक।
 दीविचरमेसनकेप्रविश॥ ३॥ ॥ कांमविकारतेमर्षजएअसेंकोनअवस्तीकाकटिबिंदुजोथोतिस्थान
 ताकुंशासहोईमदधिअहोहे॥ अपितुसर्वहीतकालवाआगमीमहुअधकुंयावेहीहे॥ केसाहेसोस्थानउंचे
 अथपरस्परअनुगएअसेजेदोयउचतेईजपर्वतसुपगदतिनकरिउ॥ वाप्यहे॥ वक्ररिअतिसयकरिप्रिब

नीरूपनदीतिनकरिविषमहेपारुतरनां जहां ऐसी है वज्ररिरोमनिकी वज्रपंक्तिता करि बोटागमनकरने।
 कहिमागजिका ऐसी है ॥ ३४ ॥ जिसें जिनस्थानक के मा गविषे उंचे मिले डार पर्वत होई अरजाते कविना
 पारुतर रि ऐसी नदी होय अर वृत्तिकी सधनताते हुमा मता होई तिसस्थानक के पोहने विषे वेद होय ही
 होय तेसें यो निस्यंनकर मणों के पहलें उंचे मिले डार तो अर वज्ररि जाते वेद करि वृत्तां होई ऐसी विवनी
 है वज्ररिरोमनिकरि हुमा मता पाई है ऐसी स्थानक कुं प्राप्ति होने विषे वेद होय ही होय यज्जो प्रत्यक्ष वेद
 कुं सुधमाने हो मंजिसें दुमिया मुंन को डने विषे सुधमाने तेसें काम करि पीति कुं वेद होने विषे सुधमाने है
 ताते काम विकार मिटावना योग्य है ॥ ३५ ॥ वर्तमान विषय लो मरना युधम भाउी ब्रह्म विषम निरुति यवत्तस्य प्र
 क्षम पाइ कमने गमहा दिरंध मा कुर्वध अघन रंध मर सुदत्ता ॥ ३६ ॥ पांती है ते सुदती जो स्त्री ताका जघ
 न रंध जो निरुति विषम कुं ऐसा कहें है के सा है यज्ज विषयी पुरम निका विष्टा का धर हो वा काम का मुशस्त्र
 ताका धार है व विषम मोरु सय पर्वत का आधा दित बा डी वा काम सय वने सय ताका विन है ऐसा वतावे
 है ॥ ३७ ॥ यज्जो नि विष्ट है सो जेसें विष्टा पयने का धर होई तेसें कामी पुरुष निका वीर्य पयने का स्थान कहें ॥

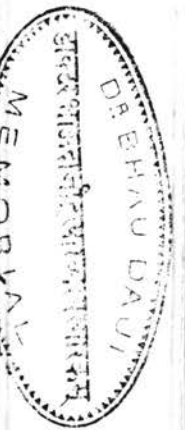
६३

अथ वा जेसें सस्त्र का धार होई तेसें यज्ज काम का शस्त्र जो लिंगता का धार है अथ वा जेसें पर्वत के आठ बिपाऊ
 वाषा डत हान जाने का कारण होय तेसें यह मोरु के आठ अक्षनी जाको बुरा न जानें ॥ ३८ ॥ ऐसा तहां न जाने
 का कारण है अथ वा जेसें विन वि ल विषे सपर्य हुता होई तहां जो जाय ता कुं बर सपर्य से तेसें य विषे काम क
 वाम है इहां रति माने ता कुं काम मोहित करे ॥ ३९ ॥ असें अने कर्तु पमा करिय यज्जो नि विष्ट अनिष्ट है ताते इहां रा
 गन करना ॥ ४० ॥ अध्यापित पोवन वन परे नारी करी कोटरे आरुष्टा विषये पतंति करिणाः कूटा
 वपते यथा ॥ ४१ ॥ अवेष्टाति करी जिन स्य जननी आगुज न नृभिश्च यो अकंत स्य पुरात्मनो हुरुदितेर्ममे जगद्वितं
 ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ हाहा घरते मारे न ऐसे के ईजी वन पकरने का स्थान क ता कुं प्राप्ति होय करि नी विषय निकरि घेरे
 ऊर जेसें हाथी क पर करि वना या बा डी विषे पड़े तेसें स्त्री का कटि विष्ट विषे पड़े है सो मंजिसें मानो हं यज्जो नि
 है सो याम नुष्य की पहलें जन्म नृमिका है ताते माता है अर यज्जो नि करन हारी जो कुं कविक हता जया ॥ तिस
 दुष्ट आत्मा के दुष्ट वचन निकरिय यज्जो नि विगात्रा है ॥ ४४ ॥ नावाय जेसें हाथी वन विषे स्वाधीन रहे हो उन के पकडने
 कुं ई कपट का धावना वेत हं विषय से वन का नो न ते ते हाथी तिस बा डी विषे पडि करि नाता कह सहे ते

संभुनिवनविषेसाधीनहै। इनके उपकरणें कुंकारण स्त्री का योनि स्थान है। तहां विषय सेवन का जो भोजन है तिस।
योनि विषय भोजन संतें इस पर लोक के घने कष्ट है। इहां आचार्य कहै है जीव के काम विकार तौ था। परं
तुकोई विधा दे नें वाला मिले तो काम विकार धटे। सो बोटे कबी स्वर अने कथुक्ति करि स्त्री के अंग नि कुंर म
णी कदिषाय विकार धावै है। सो उन के वचन निकरि विगाय। ऊ भ जीव वेतौ नां। वरु रि देखे ऊ कविन की
धीवता जिस योनि स्थान विषे अय भां जन्म नया ता ही कुंर म रों का स्थान बतावै है। तातें ऊ कबी निके वह का
स्त्री की योनि विषे रागी मति ही उ रागी नएं महा कष्ट पावेंगे ऐसी इहां सीष दई है। ॥ आगे विष विषे अमृत।
बुद्धि करि धृति करे वै सो विग कहिए इहां तौ ए स्त्री महंत पुरुष निके जी संता पादिक दुष का कारण हो है ता
तें वम विष है। ऐसा कहै है। ॥ कं वस्य काल कूटोपि संनो कि मणि ना करो त सोपि दं द्यते स्त्री निः स्त्रियो हि
विषमं विषं ॥ ३५ ॥ ॥ इ के कं व विषे ति थु। ऊ वा काल कूट विष है सो नी नून करता मया। वरु रि ऐसा निरु
हे सो स्त्री निकरि संता पित की जिए है। तातें स्त्री है ते अम विष नितें जी विषम विष है। लोक विषे काल कूट विष
समां न और निरुपाय अनिष्ट नां। ऐसा कहिए है सो ए स्त्री है ते तिस तें जी विषम है। अतं त निरुपाय अनिष्ट
ना बाध्य

दे। ये शेष देव कान कट विषुं कं व विषय यत्न नया तके वह कि दु श्री अनिए न करत नया। वरु रिखी हे ते तिसुं
भी कां पपी उत्तरु विषा का प्रप अशा ताते का ज रु द ते नी सी का विषम पनां जंति से विषुं अमृत व तां वै है। असे वि गी
नो मी जे विषे अनुसा ग कर वि दे से ए वि जां न ते पुन के व रु द न ते नी नि विषे अनुसा ग न कर नां। ॥ ॥ आगे असा
सी का सरी ए विषे वं मा दिक का स्वभाव प्रपने ते बां ती नि विषे आश्रम का हे है सो अ व हे असा कहै है। ॥ ॥ नव युवति।
शरी रे सर्व दोषे क प जे रति र मृत म प्रसा ध र्थ साध मे त के सा न तु अ विषु न पु धी ति रे के व सा धी। मदन म धु म दं धे
प्रयुक्त को वि वि क न। ॥ ॥ दे वां नी म र्थ दोष नि का प्रप असा सी का सरी ति स विषे वं मां आदि प र्थ नि के
म मां न स्वभाव प्रपने ते जो ते रे नी ति स र्थो सं तो ए वं प्रसा दि प र्थ गु वि हं अरु न हं इ न ही विषे धी ति क र ती ज उ
है। परंतु कां म रु पी म रि स र्थ म द र्शि तो नं धा नु सा ति स विषे वं मां वि वि क न। ॥ ॥ मोटे क वि स्त्री के मं ग नि विषे
वं मां क म ल आदि प र्थ नि की प्रप मां दे इ म्भु रा य क री वै है। ॥ ॥ मं म दि रा क रि आं ध न या ता कं कि दू री मि नो ह
ए व म मं य के दू ले अं ग ति म कं वं मां दि क का म मां न य नां के से बां वरु रि जे ते नी नु दि विषे वं मां दि क का ठ प म
व र्द है ते तो ई से त कि नु म ने हे हि गो वरु रि खी नि के मं ग ते आ वि उ रे अरु रे हं। ॥ ॥ वं मां दि क प वि नु है म ल है। ता

तेंचंद्रमादिकनिविधेही अनुगाकोनकरे। परंतु जेसें कीडा विष्टा विष्टे रतिमानें तैसें संकापी। स्त्री निके अंगनि
 विष्टे ही रतिमानें हे कां मांधऊं न जेवुरे का विवेक हेता मांड। तातें का मांधपण मेठि विवेकी हो नां योग्य हो। आ-
 गे स्त्री का शरीर विष्टे पीति हे मो मन पर्व के हे व करि मन न पुंसक हे। ज्ञानी पुरुष हे सो तिस न पुंसक करि तिन पु-
 रषनिका जीत नां के सेवनें प्रेसा कहै हे। प्रियामनुभव स्वयं भवतिका तरं के वलें परे धव नु न वत्सु ता विव-
 यिषु स्फुटं ला दते मनो न न पुंसकं स्त्रितिन शृष्टया ये तः सुधी कथमनेन स नु जयया पुमान् जी यते। ३७
 अर्थ॥ मन हे सो स्त्री कुं नो गवता आर तो के वन काय रहे हे कि वृत्ता को नो गि स के नां ही। व करि अम जे विष्टे स्पृश-
 ना दि इंदिय तिन कुं तिस स्त्री कुं नो गवतें संतें प्र गट हर्ष करे। तातें प्रक्रमन हे सो के वन सष्ट ही तें न पुंसक नां ही हे अ-
 र्थ तें नी न पुंसक ही हे। व करि न नी बुद्धि का धनी ज्ञानी हे सो दो उपकार शृष्टे अर अर्थ तें पुरुष लिंगी हे मो इ।
 समन करि के से जीति एहें अपितुं न जीति एहे। अर्थ की उर के हे गमन विकारी होय जाय त व विवेकी क हा करे ता-
 कुं यत्कि करि सम जाई एहे। मन प्रेसा शृष्टा करण विष्टे न पुंसक लिंगी क हा हे सो मन शृष्ट ही तें न पुंसक लिंगी
 नां ही हे अर्थ तें नी न पुंसक ही हे जेसें न पुंसक स्त्री नो गवनें वा हे। परंतु आय नो गि स के नां ही अम पुरुष नो गवेति



नकी कीडा दे पि आप हर्ष करे तैसें प्रक्रमन स्त्री नो गवनें कुं चाहे परंतु आय नो गि स के नां ही स्पृश ना दि इंदिय
 नो ग करे तिस की। कीडा ही दे पि आप हर्ष करे हे। जेसें मन तो शृष्टे अर अर्थ तें नो उपकार न पुंसक हे। अर
 सुबुद्धि हे सो सुधी प्रेसा सष्टा करण विष्टे पुरुष लिंगी हे तातें शृष्टे नी पुरुष हे। अर सुबुद्धि जा के पाई ए।
 प्रेसा या का अर्थ हे सो स्त्री का धनी पुरुष ही हे। स्त्री के लिंगे नां ही तातें अर्थ तें नी पुरुषार्थ कुं नी न संभारें तो मन न
 पुंसक करि हरे नां ही। मन न पुंसक प्रस सुधी पुरुष कुं के से जीति तातें मन को वन वान मानि आय कुं पुरुषार्थ न बो।
 मनां पुरुषार्थ करि मन विकार का अजावली कर नां योग्य हे। अ। आयो तिस स्त्री का प्रकार तें मन कुं जीति विवेकी
 पुरुषनिक रिजलात वही कर नां योग्य हे। तिस तप कुं कर ता जीव के परम पुण्य पनां की सिद्धि हो हे प्रेसा कहै हे।
 अ॥ रा अंज नयुं तं सुस वद रुतयः पूज मा वा वि यत्मा तः सत्तार अंत प स्य अल धुर सि लघुः स्या तपः प्रे स्या जं
 रा आस्त सप्त सप्त अंत यः सि मन सालो अधी प्राम ह्यः ऊर्ध्वार्थः सम प्रं प्र न व न य ह रं स न यः पाप नी रुः ॥ ३८ ॥
 जातें मुज मता जो नी तिसा करि सहित तो रा अ अर शा स ज्ञान सहित त पर ये य पु अ हे अर जो तप कुं तो रिजक
 रे हे सो अत्यंत लघु हो हे नी चय नो पावे हो। तातें ज्ञान जे जीत ये हे सो प्रकर्ष पनें प्रम हे जेसें मन करि विचारि पाप

तेनयनीतिवुद्धिर्दानआर्थपुरुषहेसोसर्वप्रकारसंसारनयकाहरकरनहारजोतयतिसक्योंकरेहै॥नकारधनो
 कविषेदेयप्रधानहैएकतोनीतिसहितराजश्रमकणानसहिततयवज्ररिजोराजबोरितयकरेसोतोबंध
 होहोअरतयबोरिराजकरेसोअतिनिंद्यहोहैतानेयकुनिअर्थहैराजतेजीतपविशेषप्रधानहैसोअतहृदयि
 गहोराजातयस्वीकुंवदेअरतयस्वीराजाकुंवदेनाहोभोअसेविचारिजोपानीजनसंसारतेहस्तुहैसोराज।
 कौतोयापरूपसंसारकाकारणजानिअरतयकुंसंसारइधहरनहाराजनिनयहीकुंअंगीकारकरेहै॥च॥आ
 गेतयहेलक्षणजाकाअसागुणकानामतेलघुपनाहैहैइसहीअर्थकुंचुष्टातधारकरिदिवावतासंतासुचकहे
 है॥च॥पुराशिरमिधायतेपुष्पलिविबुधैरपियथातपादोपिताषाहीतकिंनकुर्याहुणकिति॥३॥अथहलेन
 वसुगंधादिकगुणहोयतवतोफूलहेतेदेवनिकरिजीमस्तगविषेधारिगहोवज्ररिपीठेगुणजातेरहेतवतिनफू
 लनिकुंचरगहैसोनीनाहोजेहैसोमायहीहैगुणकानामहैसोकहलघुतानकरेअपितुंसर्वहीकरो॥नकार्यलोक
 विषेगुणहीकरिमहिमाहैसोदेवोजिसफलकुंसुगंधादिकगुणहोतेमहंतपुरषनीअपनेमस्तगविषेतिमही
 फूलकुंगुणगणपीठेकोईपगकीठोकरजोदेतानाहीभोरहानीयकुअर्थसमऊनाजोग्यानसहिततयतेनेजाकुं

देवजीपूजेति सहीकुं उष्ट्रनयणी वें कोई ताका संग मनी नाही करे सो गुण काना जल धुपनां करे ही करे ताते
गुण की रक्षा ही करनी योग्य है। वज्ररिति सही सा जा वं मानना। जो जल का वापद स्थ का वा नेषादिक का संबंध
करि वंशायनो मानिये है सो उष्ट्रम है। एक ही जी व गुण हो ते जो वंश था सोई गुण मर्णनं यतौ पूर्व अर्नत जी व
गुण वा न भए थे आय अष्ट न यत व वन के गुण निते य उ के संबंध होय। अपने वर्तमान गुण निही ते वंश पनां हो
है। ऐसी निश्चय करना। जा आगे वंश गुण हो ते नी ही पके जा कानी रहनां न जाना ही। वज्ररिति स दोष के अस।
ऊं रहं संतेति स दोष मय नो ही। जो है सो सा असोक्ति अलंकार करि स्वरूप दिष्टावता संता स उक्त है। जो है।
चंद्रमः किमिति लाव मय म नू त्वं सदा अवे किमिति स मय एव ना नः किं जो लाव मल मलंत व दोष यं ता
सुर्ता वृक्ष न पुत थ सति का सि न रू ग मय नः हे वं मां सं कालि मां ह पु ल व न सहित सो सा को न भ वज्ररि जो।
लाव न सहित ही न था य तो सं स ही कालि मां मई सो सा को न भ गारे अति स य वरि ते रे म ल कुं वती सो सी जी आ
वसे मर ही जो तिता करि अ हा सि द हे फ हं वि श्व करि जो ए उ व त ते से ही सर्व का सा होई तो तं का हू करि ल व ने यो
ग्य ठो क ने यो ग्य न हो है। जा वा य इ हं अ मो कि अ मं कार करि चंद्र मां ऊं उ ला ह नां दि मा है सो कोई उ ची मु नि प द रः

धारितिसविषे होषलगावेहे ताकंयुज्जुआहमांजामनो। जैसेचंद्रमांजलपदवीकाधारकअरवाकेकिंचित
 कालिमाईसिहेताकरिवाकोंकलकीकहिकरि सर्वदोषकेहे। अरजेमांजुसर्वहीकालहेतोवाकाअसाहीपदजा
 निकोउठेकेनाही। तेसंतंमिमंनउंचीमुनिपदवीकाधारकनथाहे। अरतेरेकोईकिबुदोषनासेहेताकरिता।
 कंकलंकीमांनिसर्वदोषकेहे। अरजेमिचेंकीगृहस्थपदवीकाधारकसरवमलयुक्तहेतोवाकाअसाहीपद
 जांमिकोउठेकेनाही। तातेंचंद्रमांकाभिसकरियाकुंसीपदईहेसंदोषसहितहोसाथातोसर्वदोषयुक्त
 कोननयाउंचीमुनिपदवीकोमिनीचनीगृहस्थपदवीही। आगीकाधकरनीशीरेतंकेईउंचीमुनिपदवीकीक्रि
 यानिकुंभाईहेसोभिकरि कहासाभहे। एतरेदोषकुंपादकरहे। जोतंजीगृहस्थहोयतोअसगृहस्थवतक
 १
 ऊकरिदोकेनेयोगनहोईतातेंहमारीयऊक्रिहाहे। जोउंचामुनिपदकुंधारेहेतोदोषकुंमतिधरि। अरदोषकुं
 धारेहेतोमुनिपदकुंमतिधारे। आदिपुण्यविषेअभिधाकथनहे। आरहजारमुनिआदिनायस्वामीकीमा
 थदीकालेयमुहमपसवतिनकुंदेवताकहतेन। इसपदवीविषेअसाअष्टआचरनकरोगेतोहमदेंदेंगेहस
 पदवीकुंबोरिजैसेरुचेतेसेकरो। इहांकोउकहे। लोकतेजैसेकहेतेसेकहेपरंतुफलतोजितागुणदोषहोईते

६७

ताहीलागो। ताकाउतर। वाट्याऊडविषेअसाकसुहे। जयजायद्वसरिसोतिनसुसमितंणगहदिअचमु
 नईनेईअप्यवज्जुयं। तजोपुणजायिणीगोयं। अथ। यथाजातरूपसरसनप्रमुनिहेसोपराथेनिविषेतित
 कानुसमाउजीनग्रहणकरे। जोशोरावज्जुतग्रहणकरेतोतिसंतंनिगोदजाय। सोईहांदेवोगृहस्थतोवज्जुतप
 रिग्रहकाधारी। योरासाधर्मसाधेतोमुनगतिपावे। अरमुनिशोरसाजीवतनगकरेतोनिगोदजाय। वज्जरिमा
 थनीअसेहीहो। अनशनतपधारिअन्नकाकुषाजीग्रहेतोपापीहोईवज्जरिअनसनचतधारेअरअवमोदर्थ
 विषेतिसंतंघनांजीजननकरेतोधर्मात्माहोई। असेंयज्जुवातसिद्धिजईदोषसहितउंचीपदवीतेंमीचेंकीपदवीन
 लीहे। तातेंदोषनगाउंचीपदवीकुंचीगारनीयोगनाही। आ। आगेंधोषकुंविषुमांनहोतेताकंपकासनंवात
 १
 अरआबादनंवालाअसाउजेनअरआचार्यतिनकेहितकारीअहितकारीपनातेंआराधनेनआराधनेकाये
 अपयतांकोदिपावतासंतासुचकहेहे। २॥ दोषानकाधनतामप्रवर्तकनथाप्रबाधगबत्पयं। साधतैः सहसा
 प्रियंयदिगुमः पश्चात्करोत्येधकिं। तस्मान्मेनगुरुर्गुहतरानकत्वालघुअस्फुटं। धृतेयः सततंसमीकनिपु
 णंसायंरवतुसदुःखं। ३॥ अ० कोईगुरुप्रवृत्तिराधनेकाजावकरिशिष्यकेपाईएअसेनेकेईदोषतिनकुंवि

नो१

पायकरि प्रवर्तै है वरुन जो यहु सिध्दति न करि सहित श्री धर्मराज कंठा होय तो पी बेंय कुगुन कहा करे
 ताते औसामे रागुर नाही ॥ वरुन जो दोष देखे ने विषे जे से प्रदी रा होय ते से निरंतर नी के अवलोकि मेरे थोरो
 दोष नि कुं वरुन तव ने वधाय करि प्रगट करे है औसा दुर्जन हे सो मेरा न नागुर है ॥ नावा य पूर्व मूत्र विषे दोष वान
 की निंदा करी थी तहां को उ कहै के अवगुण ग्राही हो नायुक्त ना हो अप को तो गुण ही का ग्रहण करना तां ऊं का
 हार है जो आप दोष कुं नी धरे है अरु अप नां उवाप नां नी रा व्यावा है है तां ऊं दोष प्रगट करन हारा घुरा न सि है व
 रुरि जो धर्मात्मा अप नी अवस्था ते उं वाप नां प्रगट कीया न चाहै है और कोई आप विषे दोष है तां ऊं बोझा चाहै
 है तां ऊं दोष प्रगट करन हारा घुरा नां ही न सै है सोई हां धर्मात्मा औ से विचारि है जो गुण दोष का ग्यान तो गुरु उपदे
 सते हो है वरुन जो गुरु प्रवर्ति कराने का लो न ते जे से अप नां सं प्रसाय वधे ते से कीया चाहै अरु दोष नि कुं न
 कहै तो शिष्य कुं अप ने दोष का धी कन होय तव वरु दोष कुं बोधे नां हो ॥ वरुन जो औ से विचारै पी बेंया का दोष
 बुझावे मो अरु वरु श्री धृष्ट दोष सहित मेरे कुमति कुं प्रसि होई तव गुरु कहा करे ताते दोष कुं विषा वि सो गुरु न १ ९६
 ही वरुन दुर्जन हे सो धारे दोष नि कुं नी अवलोकि तिन को धन कहि करि प्रगट करे तव धर्मात्मा अप नां दोष न १

मिता के अनाव कर ने कुं उद्यम वं त होई औ से दोष का कहना उपदे स समां न गुण कर्ता हो है ताते दोष कहम
 हाहा दुर्जन है सोई स अपे रा गुरु समां न कर्य करी है ॥ पाय कर धर्मात्मा है सो दोष विषा वने वा ना गुरु ते नी अ
 य नां दोष कहन हारा दुर्जन कुं न लजा मे है ॥ हं प्रम जो विष कहै म म वेद कर ने तें पाप नी तो हो है ॥ तर्क सि मा धा
 ना जोई दोष करि बुझा कर ने के अर्थ दोष प्रगट करे है तां ऊं तो पाप ही हो है वरुन जो कस ला वं त होई दोष बु
 भाव ने के अर्थ दोष प्रगट करे है तां ऊं पुण ही हो है वरुन प्रम जो दुर्जन कुं तो पाप ही हो है ॥ तां ऊं पुन के से कहा
 ता का उत्तर दुर्जन तो पापी है शिष्य सुं हं दोष विषा वने वा ना गुरु दुर्जन ते नी बुझा है ॥ औसा प्रम जो नी एं अ सं स्कार
 करि गुरु कहा है पर मा र्थ ते गुरु नां ही ॥ औ से धर्मात्मा विष कहने वा के ऊं प्रदी नां ते है ॥ तां ऊं तर्क करे है शिष्य के
 दोष कहै चिंता उये ता का निषेध के अर्थ आव र्ण है ते दोष कुं विषा य करि प्रवर्तै है ॥ औ से कहै है ॥ वि का श
 यं सि न म स म मो सु कु ल मं श व म वे र कार विं ध म का दो र ध गुरु त व म म म म म म क वोर जे गुरु की बाणी ते न म
 जीव काम न कुं प्रफुलित करे है ॥ ते से क वोर जे स र्ग के किरण ते क म ल की क म ली कुं प्रफुलित करे ॥ नावा र्थ श्री
 गुरु दोष बुझावने कुं वा गुण ग्रहण कराने कुं कदाचित् अभु हा वने क वोर प्रम जो नी कहै स एं न म जीव काम न

निमज्जन्नि कवि आनंदित ही हो हो के चित्त निवेदन है। जिसे मर्य का किरण और कुं आता पत्र आये नही रे
 कबोर है। तथा पिक मल की कली कुं फुलित ही करे है। ते में गुरु के वचन पायी कुं अपनी ही न ता हो ने करि ड
 पत्र पत्रावन हारे कबोर है। तथा पिध मोला के मन कुं आनंद ही उप आये है। धर्मो मा कुं श्रीगुरु दवाई उप दे म
 दे वेत वचन आप को धर्म माने हो। इहां को उ कहे कबोर उप दे सते पायी तो डूष पावे। ताका उतर जा को तीव्र कषा
 धी पायी जाने ता कुं कबोर उप दे सवे मो ही तहां मध्य खजाव नो जावे हो। इहां तो शिष्य को थ डूषा है। श्रीगुरु
 रमला हो ने कै अर्थ कबोर वचन कहें हो। कि वृत्त के डूषा प्रयोजन है मो ही। ता तें तिन कुं इष्ट जानित हें आदर हो
 करना। ॥ आगे ते सी बाणी नि करि धर्म के कहें कुं अर अमी कार करने कुं सावधान भै से ड सका ल विषे पाणी
 थोरे हो। ऐसा कहें हो। ॥ लो क द्य हित वक्तुं प्रो तुं व सुलभा। पुरा दुर्लभा कर्तुं पद्य ते वक्तुं प्रो तुं व दुर्लभा ॥ ॥
 अर्थ ॥ पूर्व तो दो लो क विषे हित कारी ऐसा धर्म ता कहें कुं अर सुमने कुं तो सुलभ थे व करि करने कुं दुर्ल
 भ थे। व डूषा अर्थात् सका ल विषे कहें कुं अर सुमने कुं नी दुर्लभ न रहे ॥ भावा जो धर्म ड सका लो क पर लो क विषे जी
 व कुं लो क रे ऐसे धर्म के कहें वाले अर सुमने वाले पूर्व दोषा काल विषे वम थे अर अमी कार करने वाले त व

६५

जी थोरे ही थे। आते संसार विषे धर्मो त मा थोरे ही रहे हो। व डूषा रिय डूष वचन काल ऐसा निकुष्ट हो। जिस विषे सां
 वे धर्म के कहें कुं जी थोरे ही आदर हो। कहें कुं विषे अपमानो जमा नादिक के अर्थो जगता तें यथार्थ कहें
 मो ही। अर सुमने व अड वक्तुं आते पसी कालि न डूषा ही त में व थोरे सुने मो ही। व डूषा क ए मा सुमनां
 ही दुर्लभ न मा जो अमी कार करने की कहें अर असे ड सका ल विषे धर्म ड मे न न बा है सो मा ब ही हो। य डूषा
 वम काल ऐसा निकुष्ट हो। अविषे स वे ही उत म व सुनि की ही म ता ही ती आवे सो धर्म भी तो उत म हे थ की ट
 विषे से लो क ता तें ऐसे नि डूषा विषे जे को धर्म की धर्म हो य सो धर्म हो। भावा अगे को उ स वे डूषा करे कि दो उ
 लो क विषे हित कारी धर्म ता के कहें म चरे श्रीगुरु ति विकरि जोर नि कालि व कुं क हित स दोष से नि वृत्तिक
 राव न। सो ते से कि शिष्य के अपमानो डूषा हो ने तें अनिष्ट का संशय न य मा ते व डूषा नी से य कि उ
 नी जमा मा गी विषे न डूषा मो ऐसा स वे डूषा कर ता संता स डूषा है हो। ॥ गुण गुण विवेकी नि विह त मा
 ध्यं डूषां न वे डूषा उप दे स वम नि म म म म ति डी ल ये क न कि म पि धा धृतिः स वम म प सी पो धिते न
 तो य त तित मा मो ति स लु क डूषा जता ॥ ॥ गुण अर वे विवेक स हि स जे स पुर यति नि करि अपन

हृषा-अतिमयकरिधृगटकीयाऊवाजीबुद्धिवांनजीवनिकेजेमेंनजाउपदेसधीतिउपजावेसेमेंअत्यंत
धीतिकेअर्थहोहे॥ वरुणधर्मतीर्थकेनसेवसहारेमेंजीवनिनकरिधीवपममेंकिबकीयाऊवागुणा।
नुवादहैसोनीतिनबुद्धिवांनकेमननिऊंनोसंतोषउपजावेहै॥ इहांअन्यापनोंनासेहैसोयऊअग्या।
नतारेदकारीहै॥ जावाथ। जोजाकाहितवाहैसोतैजेमेंवाकाअलाहोईतेमेंहोकरेतातेंउसजीवकेबुरा।
होनेकाकारणजोदोषताकेबुद्धावनिकेअर्थिससुरुषदोषनीधृगटकरैहैं। जोएदोषधृगटनकरैतो। पां
नीजीवअपनांशोषऊंकेमेंजानेंदोषऊंकेमेंवांमै॥ वरुणजोजिसंतेंअपनांजोनादिकय्योजनसाध्यावा
हैसोजेमेंवाऊंपसभहोताजानेंतैमेंहोकरेतातेंउसजीवकेदोषनिऊंनीधीवपनांतेगुणवहसयबनाई
करैहै। जोएवनाईनकरैतोअग्यानीजीवनिकामानकेमेंवधि॥ वरुणसाकामाननवधावेतोयऊननकाध
योजनकाहिकुंसाधै॥ जैमेंससुरुषदोषनीधृगटकरैहैं। अरअधर्मबिनाईजीकरैहैंतहांमूर्खऊंतोदोषकह
नांअनिष्टजैसेहैअरगुणकहनाइष्टजैसेहै॥ वरुणजेविदेकीहिनैजैमेंजानेंहैजोमेरा नवाहिनैकेअ
र्थदोषधृगटकरैहैसोयऊदोषकाधृगटकरनाहैसोहीमुऊऊंनजीबिध्याहैअसीबिचारितहांइष्टपनों

मर्महे वक्रि जो एअपनां प्रयोजन अर्थि दोषकों गुणवहगवेहेते एविगिह जो यहुव दार्दे सोई मेरे बुराहों में काक १
 रणहे अं स विचारितहं अनिष्टपनां मानेहे नते दोषकहे विवेकीनिके आर्त ध्यान का प्रम करना ही ॥ आ
 में दोष प्रगट की पंदोष देखने ते तो दोष का त्याग करना ॥ अर गुण दोष निते गुण ग्रहण करना सोई बुद्धि बानों के फर
 नेयो पकार्य हे असा कहै हे ॥ ॥ ॥ तत्त हे संययं के गुण दोष निवंधनो ॥ असादा न परित्यागो मएद विदुषां वर ॥ ५
 ॥ ५ ॥ बोई हे अमकारण की अये स्वनि निधि मे वक्रि गुण दोष की कहै करण अहं ॥ असे ग्रहण अर त्याग निति
 मजीय के पाई सोई अं नी निधि मे प्रधान जाननां ॥ ॥ ॥ काक का ग्रहण करना ॥ काक का तज न करना ॥ असे
 जीव निते प्रवर्ति पाई ॥ ॥ ॥ ॥ सहां सहाद की नाहिक गुण निनिकरि निपते निन का तो ग्रहण करना ॥ अर मिथ्या
 स्वादिक दोष निनिकरि नियजे निन का तज न करना ॥ असे गुण दोष की अये फासी एं निन के ग्रहण त्याग पाई ए
 हे ॥ अर अम केई विषय कथायदिक का प्रयोजन अहं सहाई एहे तई जी वर कृता नी जाने ॥ जाते एअपनां हि
 तसाहे ॥ वक्रि इ हित साधनां सोई बुद्धि बानों के करनेयो पकार्य हे ॥ ॥ ॥ आगे अन्तर्या ग्रहण त्याग विषे दृष
 ण कहै ॥ ॥ ॥ हिते हसा हि तो स्ति त्वा इधी दोषाय से नसे विपर्यय तयो रेधि त्वं सुखाय से सुधी ॥ ॥ ॥ हे जीव

तद्विहतां चो रि अहित विधेति श्रिकरि दुर्वुधी होत संता आय के दुष कुं करे हे ताते तं सुवुधि होत संता तिन का
 उलटा नाव जो अहित कुं चो रि हित विधेति श्रि नांति स विधेति कुं धा म हो न असे तं आय के सुष कुं धा म करे ग
 ॥ नावा र्थ ॥ हे जीवनें सम्पादनी नादिक हित कारी गुण रूप कार्य ता का साग की या अर मिथ्या दर्शनादिक
 अहित कारी दोष रूप कार्य ता का ग्रहण की या असे ता ग ग्रहण ते तं अनादि ही ते दुषी नया हो सो तं अय
 नी अवस्था कुं विचारि देखि में के सं परण मां अर ता का फल मां कुं कह नया ॥ वरि जो संति स ते उलटा पा
 रण में गुण का ग्रहण करे दोष कुं त जे तं अवस्था सुधी होई जाते कारण नलटा नं कार्य नी उलटा होय ही होय
 जे सं जल चो रि अमिक सेवन की ए आता प हो हे ॥ वरि जो अमि चो रि जल का सेवन करे तो शीत लता होई
 ही होई ते में इहां नी जिस अनादि परिणाम नि ते दुषी नया हो ति स ते उलटा परिणाम तो सुधी होय ही होय सो
 अनादि ते तो गुण चो रि दोष सेवन की या अवतो कुं दोष चो रि गुण का ग्रहण कर नं योग्य हो ॥ अगे कारण स
 हित गुण अर दोष जाने हैं असा दिषा वता संता सज्ज कहै हे ॥ ॥ इमे दोषा से बांध नव भ ममी मो नियम तो गु
 ण से ता से बांध पिय नवन मे ते म ॥ इति यस्त जं स्या जान हे तं इम टि टि हित हे तं प्रति मज न स विद्वान् ॥

७१

सहजः सहि सहि निधि सौख्य यशसौ ॥ ५१ ॥ ५१ ॥ दोष दो अरति न दोष निका इ न कारण नि ते उपज नां हो हे
 वरि ए गुण हे अरति न गुण निका इ निका र नि ते उपज नां हो हे असे निश्चय कर नहार जो जीव सजने यो
 भजे कारण तिन कुं तो शी छ वेर तां हो अहित के कारण तिन कुं सेव ता हे सोई जीव पांनी हे अर सोई सम्प क चारि
 ॥ हे अर सोई सुष अर यश का निधान हो ॥ नावा र्थ ॥ विवेकी पुरुष हो सो पहलें तो दोष कुं अर गुण कुं पहचानें तहां
 विचार किं मिथ्या त्वदि क तो दोष भ से जाते ई आता कुं दुषी करे हे वरि सम्प का दि गुण भ से जाते ए आ
 ता कुं सुधी करे हे वरि दोष के अर गुण के जे कारण हे तिन कुं पहि चानें तहां विचार की एं रु दे व कुं रु कुं सा
 स्त्रादिक बा विषय दि क सा म ग्री तो दोष के कारण भ से ॥ अर दे व सु गु म सु सा स्त्रादिक बा जत स य मादिक गु
 ण के कारण ना से निश्चय ज एं स जने यो भजे दोष के कारण तिन कुं तो से जे अर ग्रहण जो भजे गुण कारण ति
 न कुं ग्रो तहां दोष गुण अरति नि के कारण तिन कुं निश्चय करि जान नां नया सो तो सम्पादनी न सहित सम्प
 ग कां म हे ॥ अर सर्व दोष का कारण चो दि गुण का कारण ग्रहण कर नं सो सम्प क चारि ॥ असे ए ती नो मि ने
 मो रू मां नया ता का फल मो रू हो हे तहां अनंत सुष कुं अनु न वे हे अर वा का सर्व प्रकार महि मां हो हे ताते प

हलं कारण सहित गुण दोष कुं जा न भोग्य है ॥ अग्रे विवेकी जीव करि हिन की वृद्धि अहित कामासा दोष का
 र्य करने योग्य है ॥ जाते तिस विना अमधनादिक विषये जे वृद्धि नाशति नि का तो सर्व प्राणी निके सभान पना पा
 द है ॥ ऐसा कहै है ॥ साधारणो सकल जे तुष्ट वृद्धाशौ ॥ जन्मांतर जित भुजा छन कर्म योगात् ॥ धीमान्मयः
 सुगति साधन वृद्धि नाश ॥ सद्यसादिगत धार परे मधायि ॥ ५८ ॥ अम पूर्व जन्म विषे निष ज्ञा ए असे पु
 ण्य पाप कर्म तिन के मध्य रूप संयोगाते शरीर धमादिक का वधना वना स हो ना सो तो सर्व प्राणी नि विषे स
 मान पाई है ॥ वृद्धि बुद्धि वान मोई है जो सुगति कुं कारण नृत्त वृद्धि नास जा के पाई है ॥ ऐसा होई ॥ वृद्धि रिस
 जीवते अम जीव है सो तिस ते उलटा उर्गति का साधन वृद्धि नाश है ते ते निबुद्धी है असे श्रीगुरु ने कहा है
 ॥ ५९ ॥ लोक विषे धनादिक की वृद्धि नर अमर हरि डादिक नास न ॥ जीव कुं बुद्धि वान मानि ए है वृद्धि
 हरि डादिक की वृद्धि नर अमर धनादिक का नास न ॥ निबुद्धी मानि ए है ॥ सोय कुं मो मिथ्या है ॥ जाते ऐसा वृद्धि
 नास विषे जीव का कि बुद्धि कर्त व्यना है ॥ जे सा पुण्य नृत्त जित पुण्य पाप का उदय हो है ॥ ते सा कार्य स्वयं मेव सर्व जी
 व निके है ॥ सो प्रत्यक्ष को उतो धना बुद्धि वान होई ॥ सो नीदर दी दे वि ए है ॥ को उ सर्व प्रकार मर्ष होय सो जीव

७२

नयान दे वि ए है ॥ वृद्धि रिस ही जीव जित बुद्धि ते धर्म साधन कर नृत्त होई सो ही जीव तिस ही बुद्धि ते वि ई न से
 ता दे वि ए है ॥ जाते असे वृद्धि नास विषे जो बुद्धि का कि बुद्धि जो जम है ना होई ॥ वृद्धि पुण्य धर्म मान ता निरर्थक है ॥ वृद्धि
 रिस मजादिक धर्म रूप जवन की बुद्धि ना ॥ अर मिथ्या त्व अध मे स प जा व नि क ना रा न उ बुद्धि वान मानि
 ए अर मिथ्या स्व रिक की वृद्धि रिस प्य त्र दि क का नास न ॥ निबुद्धी मानि ए सोय कुं सत्य है ॥ जाते ऐसा वृद्धि
 नास विषे जीव का कर्त व्यना है ॥ जे सा अय नी बुद्धि का विचार होई ते सा कार्य जीव का की या पुया कोई जीव के है
 है ॥ सो प्रत्यक्ष को उतो निर्य वादिक जीव अय नी बुद्धि ते धर्म साधन करि सुगति को प्राप्त हो है ॥ को उ रा जादिक नी
 निबुद्धि होई ॥ अध मे साधन करि मर कादिक कुं प्राप्त होई ॥ जाते असे वृद्धि नास विषे ही बुद्धि का प्रयोग जम जा नि
 कुं हो ॥ पुण्य धर्म कर ना योग्य है ॥ ६० ॥ अगे जे सुगति का साधन धर्म रूप ना वसित की वृद्धि के करण रार जीव
 है ते थोरे है ॥ ऐसा दिवा धमा संता स कुं है ॥ साक मोद मो नीतिः सच वृत्ति निस्ते वृत्त योगे नयं तर्का धन च
 धन म दो स्था अम वजा नता ममावर्ण म हिन निरता सा पुष्ट रिता फल स्थे पुत्री म मलय इव जाताः ॥ अचिर ज
 ॥ ६१ ॥ कति काल विषे नीति तो दं होई ॥ वृद्धि ए मा म माग जाते ॥ वृद्धि सो दं रा जानि करि हो है ॥ राजा वि

नां और दंड देने कुं समर्थी नाहीं। वज्ररिते राजा धन के अर्थ माय करे है। जामें धन आवे न का प्रयोजन न सधे सो
 अमाय राजा करते नां। वज्ररियुद्ध धन है सो आश्रमी जे मुनितिन के पाई नां। तिन का ने धरि धन दिकरहि
 तले असे सो इ न वृष्ट प्रामुनितिकं राजा माय मार्ग विषे चलवते नां। वज्ररि आचार्य हे ते आप कुं विद्य न म
 स्कारादिक करवने के लो जी न एते नवी नृतन ए जे मुनितिन कुं नां। माय विषे प्रवर्तवै है। असे इ सका ल वि
 ये स पस्वी जे मुनितिन विषे मुनिका जला आचरन जिन के पाई असे मुनिते जे से सो जाय मान उत्कृष्ट रजयो
 रे पाई एते थोर विर ले पाई है। जवाय इ समय म काल विषे जी वज्र न वक्र उपजै है ते दम कान य विनां माय वि
 ये प्रवर्त नां। वज्ररि दंड देने वाले लोक पदति विषे तो राजा है अर्थ धर्म पदति विषे आचार्य है। तहां राजा तो ध
 न का जहां प्रयोजन सधे तहां माय करे मुनितिन के धन नां। ताते राजा मुनितिन कुं माय चलवै नां। जे से प्रवर्तते
 संधवर्त। वज्ररि आचार्य हे ते विनय के लो जी न ए सो दंड देने नां। असे जय विनां मुनि स्वदं प्रह है को ड विरले मुनिय
 शार्थ धर्म के साधन द्वारे है। सा आगे जे मुनि आचार्य नि कुं नां ही न में है उन की आज्ञा में नां। र है अर स सुंद
 प्रवर्त है तिन सहित संगति करनी योग्य नां। असा है। एते मुनि मानिनः कवलिनां कदा है कृणो रंगाल प्रजरा

स्त्रीणां

93

वस अहरिण प्रत्याग्रमंसा कुलाः संधर्तु विषया टवी स्थल तले स्नान्का प्य हो न कमाः। मावा जी मरुदा हता उच
 पलेः संसर्ग मे जिर्णवान्। पभा ५४ एते प्रत्यक्ष मुनि नां। अर आप कुं मुनि माने ते स्त्री निके नुकदा क्लीएं अवलो
 कन तिन करिया सी नृतन ए उन करि प्रहं ऊर अंग विषे लागे है बा एति न करिया डित जे हिरण तिन के सहया
 कुल होत सते प्रमाण करे है। वज्ररि विषय मूर्खी धन जा को स्थल जागता विषे कही आप न कुं स्थिर राखे कुं सम
 र्थ न हो है। सो पवन करि बंधित की बा दल जे से चप न हो है ते से चंचल जे वृष्ट मुनितिन सहित न भय संसर्ग ति कुं जी
 मति प्राप्त होउ। जवाय जे से हिरण के अंग विषे बा एना गा है सो वह न सकी पीडा ते बा कुल कुवा कुद ता फिरे
 कही धन नृमिका विषे स्थिर रहने को समर्थ न होय। ते से ए वृष्ट मुनि प्रथा आप कुं मुनि माने तिन के अनरंग विषे सी
 निका कदा कुरुप अवलोकन सोई काम का बा एला गा है सो ए उ सकी पीडा से बा कुल कु ए प्रमत्त होय रहे है। कं
 रं विषय निविषे मन लगावने कुं समर्थ न हो है। काम की तीव्रता करि धर्म साधन करना तो हर हर हो परंतु देय नां
 संघ नां मुन नां इ सा दि विषय निविषे जी मन कुं स्थिर नां। कर सकै है सो जे से पवन करि विषयि ए कृण बा दले वंच
 ल हो है। ते से विकार जाव करि वृष्ट की ए ड ए ए वृष्ट मुनि चंचल हो है। सो उन का

तोहोणहारऐसाहीपरंतुहेनयतेरेकबुधर्मबुझीहोतातेंतोऊंसीषदेवैहै। ऐसैंउरुनिकीसंगतिकरैगातोत्तंजीउ
नकासाथीहोयडर्गतिऊंआसिहोगा॥इहांजावयऊजोउरुमुनिसंगतियोपनीनाह॥अगैइनसहितसंग
तिऊंनवाप्तहोताजोतंसोऐसैंसामग्रीयायचाचनांहितऊवातिहिऐसीमाघिदेतासूचकहैहै॥मोहंगुहा
परिदधासिदिशोविहाय॥संधानमिश्रमज्ञानंतयत्रोनिरुद्धि॥आत्मामार्थतवसंतिगुणाः कलत्रमाप्रभुव
निरसियासिवृष्टेवयं॥५२॥३॥पाथाहैआगमकाअर्थजिहैऐसैंजीवकुंसंबोधैहै॥आत्मामार्थतेरेगु
फातोमंदिरहैअरुदिआनिऊंनपहरैहैआकासअश्ववारीहैतपकीवधवारीसोइएनोजनहैगुणहैनेहरी
हैं। ऐसैंनाहीपाईएहैकाऊंपाशिआचनेयोग्यवृतिजाकी। ऐसातंत्र्याहै। अवतंवृथाहैआचनांकुंधासहो
है। तोकोदीनहोनायोग्यनाही॥जावर्थलोकरविषेइतनीवस्तुकीचाहिनएंआचनांकरिएहै। प्रथमतोधनऊं
जावेसोतेंआगमकाअर्थसोईअट्टसर्वमनोरथकासाधनहाराधनपाया। बजरिमंदिरऊंजावेसोपुकार
दिस्वयमेववनिरहेतेरेमंदिरपाईएहै। वजरिबस्तुऊंजावेसोतंडिसाम्पूर्णवस्तुऊंपहरेहै। दिगंबरनमाहोवऊ
रिअश्ववारीजावेसोआकासरूपीअश्ववारीतेरेपाईएहैं। जहांईबाहोईतहंममनकरि। वजरिजोजनऊंजा

ये सोना का वपुः सोने के अति ऊपर जायना राख जो सोने के वपुः रिखी कं माचै सो कं आरि गुण तेरे तो ऊँर मा
 वपुः पाई सि ये सोने के सोम पी पाई है सो अपवो कं करुण दिखं सो जा करे तेरी तेरी न ता रहि ससर्वो कृष्ट
 रहि नई है तने न राखन रहि न रिखि ये सो निभुन ते वपुः है ॥ अये जो भक्त न करै सो सोना दाहे अरु न करै है
 सो वपुः है सो सो निभुन न करै है ॥ ॥ यमा सो भक्त न सो न तनु मं ॥ इति वपुः किम वदी निमो दीन
 निमो निमो ॥ ॥ यमा सो भक्त न सो न तनु मं ॥ इति वपुः किम वदी निमो दीन
 हे सो दीन मं ॥ ॥ यमा सो भक्त न सो न तनु मं ॥ इति वपुः किम वदी निमो दीन
 कोर करै ननु जाय है सोने दीन न सो निभुन ते वपुः है ॥ जो दीन करै सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे
 रता ॥ अजि सोनी क दे म सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे
 दीन पुर सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे
 निमो न के सो सो निभुन ते वपुः है ॥ यमा सो भक्त न सो न तनु मं ॥ इति वपुः किम वदी निमो दीन
 क सो यदीन सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे
 अर जाव सो न करै सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे सो सोना दाहे

यकै धर्म नो हो पाय हो उर जे हे वरुन सर्व कथा यष्ट ने ते प्रम करि कोई अवस्था कथा थी की सी नी भासे ते हो धर्म
 ही हे सोइ हा मोन कथा यष्ट ले काना म अति मां नी नां हो हे लेन ते कजा का जे नां हो हा काना म अति मां नी हे सो
 यकै सर्व कथा मर वे नि ते नी प्र करि पायी जीव नि कुं न मी नूतन हे हे ताते प्रम करि मां नी सा भासे परंतु मां नी
 हे नां हो ताते यकै धर्म ही हे ओं से जा नि दी न ता कर मी ओं से धर्म जे अधिक को गो र ध क हां गये जा करि तिस
 वाचक के लघु पनां होइ ओं से धर्म उर कर हे हे यचितु मे रिवं दा तु मे से कां त म मथा तद व स्यो क थं मा ता
 मे तो गुल लघु त द मे ओं से भा मो हो जो या धि क का तो र व हे सो वा नार वि ये स अ म रा स प न या जो ओं से न
 होय अ म रा होय तो तिस या च क ता के का ल वि वे या च नां र व अर दे ने र प हे अवस्था तिन की ओं से ए दो उ व र
 अर हो र के र हो हे उ ले हा अ ल का र करि आ वा र कर हे स क ओं से न से मो घ ह ले ती के उ व र व
 म मां म वे वरुन जि स म म य या च नां करे अर दा ता र दे वे तिस म म य या च क का द हा प नां थ मो नि क सि स ता र वि
 ये या म हो य या ता ते त का ल या च क तो ह ल व हो हे अर दा ता र म ह त हो हे जो ओं से म हो हे तो तिस म म य या च क
 तो स ओ वा र ह र प करि द न के से न सि हे अर दा ता र प्र कु खि ता दि स प करि म ह त के से न सि हे ता ते दी न य नां नि व



७५

धर्म को उर के ओं से हे तो पु नि नी तो दं म ने वे हे उन को नी ही म क हो सा क उ त र मु नि हे ते या च नां क दि दी म हो इ दं म
 नां ही ले वे हे ओं से को ई ज नि की ने र करे ते से प्र क पु स व वि न य सो दं म ने वे हे त रं नी जो न ते आ ज क हो ई प्र ह
 ल नां ही कर हे ता ते ए ही न नां ही हे जो ओं से दी न ता करि ली या चा हे सो ई पु स व र न ता कुं वा प्र हो हे आ ओं से ने वा ले
 क अर दे मे वा ले का ग ति वि शो भ कुं दि वा व ता प्र क हे हे ओं से जि प्र क वां ति यां सु र्द म जि प्र क व इ ति स् प रं
 व रं तो वा भा मो आ मो लु नां म यो नि म के प्र ह ण कर ने की इ वा य ई ए हे ओं से जी व हे ते अधी ग ति कुं वा
 प्र हो हे वरुन जि न के प्र ह ण कर ने की इ वा नां ही ओं से जी व हे ते नु र्द ग ति कुं वा प्र हो हे सो ओं से ता म ही के दो य पा
 स रे तिन क नी की नां उं वा ले न ति मां म स प ग ट य ने क हे हे ता म ही के दो य पा ल उ म मां न हे त हां जो
 अ म व लु का य ह ण करे सो तो नी वा हो इ जा य अर म य ह ण करे सो उं वा हो य जा य सो ओं से हो न से तो मा नां य
 क व ता वे हे जे से ह मारी द हा हो हे ते से जो जो न करि य ह ण करे सो तो न का ल नी नी र हो मा अर आ ग मी न र
 क दि क नी वी ग ति के प्र ह ण अर जो तो न के नि य ह ण करे ता सो न का ल नी उं वा र हे मा अर आ ग मी सु र्द
 मो क उं वा ग ति कुं वा प्र हो मा ओं से यु नि क रि य प्र यो ज न दि वा या ही न ता क दि ही न ता अर उ ग ति हे हे ता ते दी

नतानकरनी इहांकोउध्वे दीनताविषेऐसावापकहाहे ताकाउत्तर दीनपुरषकेलोनकवायऐसातीउहे २
 हे जाकरिअमकवायनीनिवेनहोयजाय लोकजानीमिदिजाय धर्मकुंजीमिनेमोही वज्रसिकहा धर्मस
 वोत्कष्टहेताकिनीअपनाप्रयोजनसाधाचोहे तातेदीनतामहापापहे ॥ आगेयाचकनिकामनोवसिनअर्थ
 कीसिदिनकरैऐसाजुइयुरयनांतिसतेंदरिप्रपनाहीनजाहेदिवायतासंतासुवकहे सस्वमाडासतेमर्वेन
 स्वतत्सर्वसर्पियत अर्थविमुखसंघादिसस्त्वानि स्वतावर सस्वकहिअधनादिकसहितपुस्य
 ताहुंसर्वहीजावे अरऐसाधनादिकहोयनाही जोसर्वकुंछसि करै तातेअर्थीमिहुंविमुषयनेकाकरनहा
 गऐसाजुधमसहितपमांतिसतेंधतरहितयमाहेसोईनजाहे कोउजातेगाकिधनवांननअर्थीनिके
 मनोरथपूर्णकीजाहे तातेधनवांनहोनामजाहे सोऐसातोधनवांनयनांकाहकैमहोईजाकरिसर्वअर्थी
 निकेमनोरथपूर्णकरिसके अरकिंचिधनवांनयनांहोइसवसर्वअर्थीकीआशाकरैसहासर्वकीआशा
 पूर्णहोयनाही तवैअर्थीधनहोयविमुषहोहे तातेऐसाधनवांनयनांमैमिर्दनपनाहीनजाहे निर्दनम ७५
 एकोउयाकीआसाकरै प्रसस्तदेवाधनवांनकरैआमित्रयाचकआदिसर्वलागहोई अरनिर्दनकेकोउजाग

नहोई तातेदातारहोनेकेअर्थीधनवांनहोनेकीचाहिकरिहेतहांलोनअरमानकाआधिक्यजानना जो
 स्वयमेवधनवांनहोई अरसर्वसागनकरिसकेतहांदांनदेनेमैकिबूजोनकासागनयाताकरितितनाही
 नजाहे तातेतिसकुंदांनदेनांकहाहे वज्ररिदांनकाबलकरिधनवांनयनांकुंभजाजाननायोपमाहीहे
 आगेजेधनवांनकुंजचिहेतिनकेआसारूपीधानिकेसीहेऐसाकहेहे आशाखनिरतीवाचूदगाध
 निधिनिश्चया सापियेनसमीचिताततेमामधनधन सारूपीस्वामितिधनतेनीअसंतअथाहोत
 नईसोनीआशास्वामिजिसकरिसमानरूपनईसोतेरेधनांमामरूपीधनजानना धनादिकका
 नीचाहिताकामामआशाहे सोईनईधानिसोनवनिधानतेनीअथाहै निधाननिविधनादिककाहे
 तेनिधानहूटेनाही पंतुहूटवित्तूनकातोथाहआवे वज्ररिइसआशाविषेजोधनादिकीचाहिकहे
 ताकाधननाही मवनिधानमिलेनीआशावनीहीरहै तातेजानिएहेउननिधानमितेनीआकैअथाह
 पनांजीपाईहै ताकाजामईहंमामेहोईताकाप्रमाणऐसावक्तहे जाकरिवेशीआसाधानिसमानरूप
 पहेहे पूर्वोक्तमाननएआशाकेअधिकताकाअनावहोहे तातेनवनिधानमितेनीअनिमानरूपधन

कौवनाजानिमंतोषरूपहोई धनादिकके अर्थिपचनोकरनीयोपनाही जाते आसामेदनेके अर्थिधनादि
कजाधिहै सोनिधानपाएनी आसनमिद्वेतोस्तोकधनादिकतेकेसेयुक्रमितेगी॥ वक्रुरिसंतोषवृत्तिकरि
धनादिकके अर्थीनधीभूतनहोनाऐसेपरिणामनिकरिआशाकाअभावहोतेतातेऐसाहीपरिणाम
नउपायहै॥ आगेसोआशावांनिमानधनकरिकैसेसमाननईऐसेपूजेकहेहै॥ आशार्चनिरुगा
धेयुमधः कृतजगद्व्याउत्सर्प्योत्सर्प्यतदस्थानहोसद्भिः समीक्षिता॥५॥ यज्ञआभारूपीवांनिविद्येति
एतेधनादिकतिमकुंकाटिवहआभारूपीवांनिसत्पुरुषनिकरिसमानकरीहै सोयज्ञवनाआध्यर्मेहै॥
नावाचयाध्यानादिककीकोईवांनिहोईतामेसुपायादिककाटितिसवांनिकाअमभूमिसमानकरना
सोईकविनदेविएहै वक्रुरियुक्तआध्यर्देवोयुक्तआशासपीवांनिऐसीतोअथाहजानेतीनलोकअथ
नेनीचेंकीए तीनलोककीसंपदानीआशाविद्येनीचेंहैं अरआशाअधिकवहीहै सोऐसीआशावांनितामे
तिष्ठतेपदार्थतिनकुंकाटिकाटिकरिसत्पुरुषयाकुंसमानकरैहै नावयुक्तआशाविद्येअनेकपदार्थ
निकीचाहियाईएहै तहंसत्पुरुषहेंतेत्यागनावकरिईसकीचाहिबोरीऐसीसर्ववाहिबोरितिसआशाकुं

[The following text is extremely faint and illegible due to severe fading or damage.]

विधिवर्णनहैं तैसं अहारमिलै तो ग्रहहैं असक्त होई सद्यो अहार न ग्रहण करै है वृद्धि अमग्रहस्य की
 रही या अहार ग्रहहैं आपन वसावै है वा अवनता ही ग्रहहैं वृद्धि भक्ति करि दी या अहार ग्रहहैं याचनां क
 रि दवायनां ही ग्रहहैं वृद्धि असाजी अहार नित्य न ग्रहहैं योग्यता न विषय के ईश्वर सनिके पारणें ग्रह
 है वृद्धि ग्रहहैं तब नी संवर्ण उर रजि अहार ना ही करै है कि वृद्धि गरी जो जन करै है असे अहार ग्रह तो नीम
 हंत मुनि कुंज जा उपजै है जो ह मरत नी राहि करै है सो ह मारी ही न ता है वृद्धि असे नी कार्य विषय के ना ज
 हो असाधन वस्त्रादिक दुष्ट परिग्रह जिन का तीव्र सावितां ग्रहण न होई तिम का ग्रहण कैसे करै सर्वथा न क
 रै जिना गम विषे लंगोट भाव परिग्रह राखै नी आपु उती कटा अधिक परिग्रह होतें मुनियनो कैसे मानिय
 तातें मुनिके वस्त्रादिक परिग्रह मानना मिथ्या है हातारो ग्रह करिण कि म धन देय न द्यमनं पुरुंत स
 शरीर तो विचरता सर्वोपकारे वया लजे ये वमन सिना वनु पुनः कत्वा कष्टं तत्कलं ग्राह्य वशी भवति तदिदं
 वृद्धि परत्वं कले इम मुनि धर्म विषे पुरुष तो दातार अरु तेने मो प नी जन मा अधन अस्त्रा प्रसव उपका
 र की दवा करि तिस जो जन कुं ग्रहण करते अथ मं सरीर ते नी विरक्त के से जय कु क्रिया है सो ईश्वर बुद्धि वा

७८

नों की लाज है वृद्धि यज्ञ वना आश्रय है जो तिस जो जन कुं मुनि निषका फल करि राग द्वेष के वशी नत हो है सो य
 ज्ञ कलिका लको चक्र वर्तियनो है ॥ यह स्य तो अयनी न किते हातार होई अर मुनि पाउ होई त हां एक जो ज
 न मा अधन ही का दां न है अम्य धनादिक का दां न ना ही है वृद्धि तिस कुं नी मुनि ग्रह है सो अयनां वा हातार का
 वा अमजीव नि का जै से सर्व प्रकार न ला होई तै से ग्रह है असे ना ही जो अहार लेई प्रमादी होय अपनां वुरा क
 रै वा हातार कुं कषाय उपजाय वा का वुरा करै वा अमजीव नि कुं दोष का कारन होई ओर नि का वुरा करै व
 र्द्धि अहार लेते नी अयने सरीर ते नी विरक्त रहै जो ने है यज्ञ शरीर मो कुं दृष्ट ना ही परंतु या करित पसाधन
 कलां है तातें जै से यज्ञ न घन होई तै से थोरानिर स अहार करना स्वादिक कालो न ते अहार ना ही करै है
 असे मुनि अहार ग्रहण करै है सो ईश्वर मुनिके लाज उपजावै है अहार लेने तै संकोच उपजै है आय की ही न ता
 मान है वृद्धि यज्ञ वना आश्रय न्या है इस कलिका ल विषे अहार के अर्थ मुनियनो अंगीकार करै है ई सने
 पकरि आजीव का की सिद्धि करै है सो ह म कुं जा से है यज्ञ कलिका चक्र वर्तियने काम हि मां है जै से चक्र वर्त
 अयने वेत्र के वा सी दे वादिक तिन विषे नी आह्वान न वि तै से यज्ञ कलिका ल अयनी मर्षा द विषे उपजे मुनि

आदितिनविषेजीवियरीतयनां प्रवर्तते वै ॥ इहं कोउ कहै नुबुझ काल दोष है तो इस काल विषे असेंही मुनिम १
 नों ताका उत्तर ॥ जैसे कलिकाल विषे अमाय प्रवर्तते है तो ताको माय तो न मानना ॥ यहु ज्ञानना जो अमायक १
 प्रवर्तिका ल दोष ते हैं तेसे कलिकाल विषे नुबुझ प्रवर्तते है तो तिसकुं मुनि तो न मानने ॥ यहु ज्ञानना जो
 असें मेधनि की प्रवर्तिका ल दोष ते हैं वहु रि जैसे कहि यहु कार्य दुष्ट के उदय ते जग है ॥ तहं दुष्ट वत उमका
 र्य की निंदा जाननी तेसे जहां कहि यहु कार्य कलिकाल ते जग है ॥ तहं कलिकाल वत तिस कार्य की व
 हुत निंदा की भी है असा ज्ञानना ॥ ताते जे मुनि ने धारि ने जना विक के अर्थी होय रागी द्वेषी हो है तिन की
 निंदा करने का अर्थ ॥ इहं कलिकाल का महिमा कहा है ॥ ॥ आगे रागी द्वेषी का अधीन यनां कर्म करिक
 रि है तिस कर्म हे जीव तेरा कहा की या है सो कहै है ॥ ॥ आमुं सह जंत वज्र जगती दोषाधिप संतपा सो
 धं चात्म समुद्र व विनिहित निर्मलतः कर्मणा देयात हति ते स्वमे दिव्य सुखे संशुष्यसे निस्त्रयः यत्नं य
 धिरयातना कद्वानैर्द्वैत स्थित सुष्यसि ॥ ॥ देजीव जिन कर्म करिते राख नाव नूतनी मजात का जु
 ज्ञान ताका स्वामित्व यनां सो नष्ट की या ॥ वहु रि तेसे ही आत्मा जनित सुष सो मू जते नाम कुं आसन या सो

७९

कर्म तो ऐसे की या वहु रि निर उक्त का ही तय नां ते तिस कर्म करि नियमाएं दिव्य सुख नि
 न करि निवेदि सो तहं को मजे वत नाष्ट हि उपवास विवका कष्ट नाहि करि भीति मित्रो ॥ अस्तित निरु
 असा भाविषे जं भीति निरु जीविका जने ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥ जैसे कोई मजात १
 कुं कोई मजात ॥ असा जे वहु रि यहु जग मं नुष्ट है ॥ ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥
 होय ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥
 कोई वहु रि तेसे ही आत्मा जनित सुष सो मू जते नाम कुं आसन या सो ॥ ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥
 उदय ते तिस कर्म करि नियमाएं दिव्य सुख नि ॥ ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥
 सो जग मं नुष्ट है ॥ ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥
 नष्ट है ॥ ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥
 रि तेसे ही आत्मा जनित सुष सो मू जते नाम कुं आसन या सो ॥ ॥ असा जे जग मं नुष्ट है ॥ ॥
 उदे ॥ ताते जेसे मरा मरुं मय नं विरी का मरुं मरुं मय नं विरी का मरुं मरुं मय नं विरी का मरुं मरुं मय नं विरी का

रनां यापदे तेमं विषया सक्त होमां योग्यतां ही । आगे जो तेरे इन्द्रिय सुषुका अनिलाये तो हो प्र तथापि ज
 हं विद्रिष्ट इन्द्रिय विषय हे ताकुं दिवावता सूत्र कहै हे । दृष्टा नो गो मुं वेद्रि को मरुत्वा जं सरै वने प्रसक्त ।
 या कं किं पीत्व येयं मुक्ति विनाशये । हे निबुद्ध मुनि तेरे जो विषय जोगति विधे ही । चहि हे योग सास
 ह मही जी ही उते गो मा स्या विधे हे । दे मूर्ध पयता नो ज न कुं ये वि अरपी वने योग पुज मादिक ही । कं पीय करि
 क हा नो ज म का मा श करे । अये मति करे । अये को ई मूया मूर्ध पयता नो ज न कुं धर्म कहै वि जे ते ।
 नो ज न पयते ते धी र्थ म करे । इत नें का न न धर्म सहै । अर कि नो ज न सं धी ज ला दिक ही । कं पीय नो ज न
 का मा स कहै । ते मं हं विषय नि का ध नि ला धी । मूर्ध धर्म सा ध म ले योग सा ही काल में मु र्म की प्राप्ति होई त
 हं विद्रिष्ट विषय नि वि का कुं वि दारि जे ते यं प्र म नुष का आ पु र्ण होय सु गो मि ले ते ते धी र्थ न करे । इत नें का
 ल शा हि को न सोहे । सो असा का ये सं करे हे मति करे । जो जोग ति ही धी धां अ हे सो योग र मे का ल वे धी र मि धर्म
 सा धन करि नो कुं मु र्म विषे व पु त विषय नि जे मे । धृष्टि विषय नि ला धी म मां ही तथा पि इ हं प्र ह्ने ना ।
 जीव कुं लो न दिवा यण आ हे । ते सा ना व जा न नां । आगे कर्म करि इन्द्रिय सुषु अर जीव त या ही य का



र्थ निपुण है एह वज्र रिजे अ में मुनि है तिन का कर्म कहा करे । असा दिवावता निर्धन त्वं इत्यादि श्लोक कहै हे
 निर्धन त्वं धनं येषां न सुर व हि जीवितं किं करोति विधि सिद्धां सतां ज्ञाने क च कुं । जिन के मिद
 न प नो तो धन अर मर लो सो जीव त त अ में जे स सुर प ज्ञान ही है एक नेत्र जिन के तिन का विधा ता कर्म हे
 सो कहा करे कि नू अरि स के मां ही । जे महा मुनि ज्ञान नेत्र करि यथा र्थ पदार्थ नि कुं अव लो के हे
 तिन के धना दि रहित नि ग्रंथ प नो सोई धर्म हे । जे सें अम जीव धन ते सुधी होय ते सो । ये मुनि नि ग्रंथ प ना ते सु
 धी हं वज्र रि तिन के मर नां सोई जीव नो हे । अ में अम जीव प्राण धर न ते सुधी हो हे । ते सें ए मुनि इन्द्रिया दिक ज्ञा
 वृं सुषु माने हे । असा म ल मुनि तिन का कर्म कहा करे । कर्म का तो व ल इत नां ही है । इति ए रूप प्रथ मे त व नि च
 न प नो होई व मर ए होई सो ज न करि मु नि दु धी होय नां ही । ता ते इ न का कर्म कि नू जी करि स के मां ही । आगे अ में हे
 तो विधा ता कर्म हे सो कान के अ य नां कार्य करता हो हे सो कहै हे । जीविता ज्ञा ध मा शा च ये यां ते यां विधि वि
 धः किं करोति विधि स यां ये यां आ ज्ञा मि रा म ता । जिन के जीव मे की आशा है अर धन की आसा है
 निम के विधा ता हे । वज्र रि जिन के आ ज्ञा न ए न र्तिन का विधा ता कहा करे कि नू न करि स के

विधानांमकर्महं सो जे अज्ञानी पाया पर्याय रूप जीया चीहें हे अरधनवाहें हे तिनके कर्महें सो अयनां कार्य
 नियजनें कुं समर्थ होत कर्मपनां कुंधारे हे ते जीव कर्म ते फरे हे हमारा मरण मति होउ हमारे निर्दयपनांम
 तिहोउ असें आसाते कर्म उ न कुंधी करे हे वरिजिन के आशा नाम को पास नई बता धनादिक कुं बोधिवे
 वे अरमरण के कारण तिन के समुपन ए तिन का कर्म कि करि सके नाही ॥ मुनि कर्म ते फरे नाही मरण हो हे
 तो ही उ पर्याय बोधने का नय नाही हे अरनिधनपनां कुंति रा कुलता का कारण जनि स्वाधीनपने ही धनादि
 कुं बोधिवे ॥ असें आसावेरी तिन कुं कर्म के से दुधी करे मोह ही न मर कर्म का उदय हो नाही न होत मरु
 हे आत्मा को दुधी करे न रूप कार्य कर्ता न हो हे ॥ आगे को ई तो वना राज बोधि आशा का नाम कुं अवलंबे
 हे को ई तप बोधिराज को अंगीकार करे तिन कुं क दद्यावता संता परां दसादि बोध लोक कहें हे ॥ परा के
 दिसमास हो धवे वस्तुति निंदयोः यस्य जेतम से व कं य सपो विषया शया ॥ ५ ॥ ॥ स्तुति अरनिंदा इन का स
 वोक्त ए नाम कुं ए दो यही जीव प्राप्त होय हे एक तो जो तप के अर्थि वर कुं बां है अरण क जो विषय की आशा क
 रित प कुं बां है ॥ नारायण स लोक विषे कोई स्तुतियो प के ई निंदा मो प जीव हे तिन सव नि विमो जो वर कर्त पद बो रि

८१

मुनि पद धारें हे सो तो सर्वोक्त ए पने स्तुति करने योग्य हे ॥ असी प्राप्ति नई वर कर्तिय नां की संपदा वरि वैसा मुनि धर्म
 सप दुर्बर अनुष्ठान आचरें हे ताते या की महिमा उक्त ए पने स्तव न योग्य हे वरि जो या रा बा मुनि पद को बो रि वि
 षय वा ताते स अपद कुं अंगीकार करे हे सो सर्वोक्त ए पने निंदा करने योग्य हे ॥ छोटी कु प्रतिज्ञा का जंग की रं नि
 बले ई ॥ यनें तो मुनि पद अंगीकार करि ता का जंग की या हे ताते या का अपनो उक्त ए पने निंदने योग्य हे इत
 को उ कहें कि निंदा को करनी योग्य नाही ॥ ता का उत्तर ॥ ई को वें बुद्धि करि निंदा करनी योग्य नाही हे वरि या का
 मरन की उ गट ता कुं पुरा न जायने के अर्थि निंदा करने में दोष नाही ॥ असें न हो ई तो या पी जीव नि की निंदा स
 नि विषे कहें कुं करि ए हे ॥ ए ज तु त प से व कं व की प स प स कलं मु ख म मु प म को उं कि सं त तो न त कुं ॥ ५
 बमिह मिह विदं य सदि सं विष या म कं पु वर पि मु धी स तं जो तं ज ह ति म ह स य ॥ ५ ॥ च क व नी हे सो न प
 के अर्थि वर कुं बां है तो बोधी जाते तप का फल अ जो प म्प आ म्प ज नि त शा स ता सु म ही हे ताते सो कार्य तो
 आ र्थ्य का पी ना ही वरि ई सो क वि म्पे य कु व ना आ अ र्थे हे जो सु बु धी र ई बो दा कु व वि ष य रूप वि ष कुं
 वरि जो ग व ने अर्थि वर तप को बोधि हे ॥ नारायण लोक विषे वने सु म के अर्थि किं वि सु म कुं बां है ता का आ

अर्थनाही सर्वथा दुषदायक जो विषय तां कुं ठोहि वदरिता के धामे के अर्थि वधा पद कुं ठो मिता कावना आश्रय हे २
 ई ताने इहं नीमो कसुय के अर्थि वधा वनि पद कुं ठो मिता का कह आश्रय जो सर्वथा दुषदायक जो विषय
 तन कुं ठो मि वदरितिन के सेवने के अर्थि चि नो कप ज मुनि पद कुं ठो मिता सो यदु वना आश्रय हे असा अ
 मर्थ के सेवने हे आगे तय तजने वालो का वदरि आ वर्य करत संग सज्जक हे हे शया तलाद पि
 तु को पिन मं प्रपात तुगा मतः खलु चि नो कप किता तम पिंडा चि चि लोक सिखरा वी पहरि तुगा त धीमान स्व
 मंत य सः पतनादि नेति ॥ ६५ ॥ तु क कहि ए वाल कहै सो नी आथ के पी उ हो नी दे धि उंचा जो शया तल ति
 सने नी ते नरे हे यदु वडा आश्रय हे जो बुद्धि वान पुस मती न नोक का शिखर ममान अति मय करि उंचा तो
 तय तिस ते नी आथ पडने ते मां ही प्रदे ॥ ६६ ॥ वाल क विचार हे त हे सो नी थोरी सी उंची शया तिस ते पडने
 ते नय वान हो हे वा के नी इत न विचार हे जो इहं ते पडे मरे पी डा उपजे नी वदरिय ड मुनि लिंग का धारी हे सो
 तो विचार वा न हे वदरिय ड तय हे सो ती न नोक का शिखर ममान उंचा हे इहं सी न लोक के जीव तय कुं वना
 प्रजमाने हे ताने उंचा जान ना सोई सने उष्ट हो ताना ही नय करे हे आप ही उष्ट हो हे इत न विचार हे ई सने

८२

अष्टम ई मो कुं ई स लोक विषे हस्यादिक पी डा हे नी पर लोक विषे चिर काल पर्यंत नर कनि मो हादिके दुष नो
 म वेन हो हिो सो यदु वना आश्रय हे अहो लोक विषे तो उंचा पद पाए पी छे य राधी न पने नी नी बा हो ते इत नी
 लजा हो हे तहां अपधा तादिक रतां विचार हे यदु असा निर्वज नय हे मुनि पद सारि वा उंचा पद पाय आ
 प ही स्वाधीन उष्ट होय नी बा हो हे मो असा असे नव कार्य दे वि के से आश्रय न हो ई इहं आश्रय कह ते का
 वदना व हे उष्ट हो ता मुनि नि की नो करि ति कुं उंचा धि निंदा का स्थान नयो हे आगे जो तय करि म हया
 पका धो वनां ये य तिस तय कुं नी नी च पुस मलिन य तां कुं दास करे हे असा कह हे विमु दति डरा वार
 सर्वो पित पुसा क वं करोति मलिन तव कि न सर्व भू गो पर ॥ ६७ ॥ तय करि सर्व ही की बाहु वा ह्वा चार हे
 सो उष्ट हो हे वदरि जे न मत ते वाट जया असा सव ते नि कृष्ट नि य जी व हे सो तिस तय कुं मे ना करे हे ना वा
 जे से जल करि म ल धे ई हे वदरि जो धो वने का कारण जल ही में मल नि ला वे तो वा को नी च कहिए ते से मय क
 रि पा प हरि हे वदत पापी नी हो ई अर तय करे तो पाप कुं हरि करे वदरि जो पाप हरि क एो क कार
 पाप तिस ही विषे पाप ज गा वे हे तो वरु सवो कष्ट नी वे हे इहं यज जा व हे जो पाप ही करता होय

सो तो नीच ही है। अर पाप में टने का कारण मुनि निगधारे अरति स विषे दोष ल गावे सो गच्छ नीच है। सो अन्यत्र भी ऐसे
सामान्य की भाँ है। अमस्या न विषे की या पाप तो धर्म स्थान विषे हरि होई धर्म स्थान विषे की या पाप कहें हरि होई
व अने प हो है। ताते गृह स्थ पद का उय जाया प तो मुनि पद विषे हरि होई मुनि पद विषे की या पाप कहें हरि
होय व अने प हो है। ऐसे निश्चय करि मुनि निग विषे दोष ल गाव नां योग्य नां ही। ॥॥ आगे आश्चर्य के वहुत का
रण है। तिए विषे त प कुं जो मन वैला के अति आश्चर्य का कारण प नां कुं दिवा व ता सूत्र कहें है। ॥ संसे व के २
तुम ता निज गत्तु किंतु विस्माप कं त द ल मे त दि हे द म नः पी स्वा मृतं य दि व मं ति वि स्त दृ पु ण्णः संधा व्य मे य म
नि धि य दि व म जं ति ॥॥ अथ ती न ज ग त वि षे को त दृ ल नि के सं क टे पा ई ए ही है। परंतु इन विषे हम कुं तो ए
वीय ही कार्य अमर्त्य प ने आचर्य उपजाव न हारे है। एक तो जाय ही न पु रुष अमृत धा य करि ता कुं व मे है अर
एक तो संघ म नि धा म कुं धा य करि ता कुं व मे है। ता वा य ज हां अ सं न व का र्य म सै त हां आश्चर्य मां नि ए है सो।
लोक ति कुं तो अमक को तु क रूप कार्य आश्चर्य कुं उ पा वै है परंतु हम कुं तो इन दोय कार्य नि का आश्चर्य
है सो ई महा प्रा प ते जा करि ज रा दि करी ग म होई। ऐसा अमृत धा य की या वहु रि वा कुं व मे सो ए। क तो य कुं

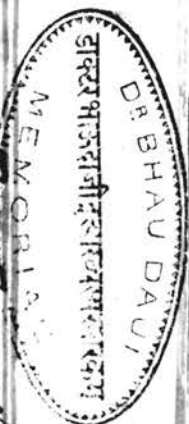
[illegible]

गजबुद्धि तस्य जीवजावहिरंगशत्रुका नासकरै ताकै राजघुष्टेने का कारण ना ही परंतु जो ध्यान धारि कि
 यानि विषे सावधान न घवै तै सो अंतरंगशत्रु नि करि मरणा कं पावे ताते अंतरंगशत्रु नि तै जीजे से अपनीर को हो
 ई तै से ध्यान धारि कि यानि विषे सावधान न हो नां योग्य है तै से मुनि के शत्रु होय प्रकार है एक तो बहिरंग एक
 अंतरंग तस्य जेहि सादिरूप आरंभ दिक् अपने मुनि नि गते वास्य प्रगट विपरीत भासे ते तो बहिरंग शत्रु है
 वज्र नि से ध्यान धारि कि यानि विषे रागादि प्रमाद रूप मुनि नि विषे भी मां हो ते ते ध्यान विपरीत आवत अ
 तरंग शत्रु है तस्य जो मुनि बहिरंग आरंभ दिक् का साग करै ताकै मुनि पद ते उपहोने का कारण ना ही
 परंतु जो ध्यान धारि कि यानि विषे अपमाद होई सावधान न घवै तै सो अंतरंग शत्रु नि करि मुनि पद का नासक
 बने है ताते अंतरंग शत्रु नि तै जीजे से अपना मुनि पद कीर का होई तै से ध्यान धारि कि यानि विषे साव
 धान न हो नां योग्य है आरंभ दिक् का साग करि निष्ठ तन हो नां मुनि नि विषे ध्यान धा
 रि कि यारही है तस्य जीव जावहिरंग शत्रु का नास करे नां अंगे मत्तक आत्मा कीर होई अंतरंग शत्रु का नास हो
 य सो तिस मन को क नां योग्य है नै सा कहै है अने का ता नाथी प्रज्ञा फल नाराति विन ते वर पत्नी ५

८४

कीर्ति विपुल नय सा सा ज्ञान युते समुत्तुंगो सम्पद्यत तम निभूते प्रतिदिने श्रुत स्कंध श्रीमान् रमयतु मनो मर्कट
 मनुष्यं ॥ बुद्धि वान्महोदय समम रूपी वंदर कुंदि मधुति सदा काल साक्षरूपी वृक्ष विधैर भावो के सा है स
 स्वरूप अने का न स्व रूप जो अर्थ ते इ न ए फल तिन के भार करि अति मधी भूत वज्र नि वष म रूपी ध्यान नि क
 रि अपादे वज्र नि विस्तीर्ण नाय रूपी शत्रु आहली तिम के से क उ नि करि संयुक्त है वज्र नि तै प्रकार वं हो
 वज्र नि ना विस्तार लीं जो मनि पांन सो जा का भूत प्रउ है को उ कहै मन तो वंदर समान वं वं हो सो स
 वधनी रंभे नी रागादि रूप परिणमै तें कहा करि ना कुंदि कादी जिए है जे से वंदर गजार है त वंता कि वृद्धि
 गार करै ही करे ताते का कुं वृद्धि धार्य दी जिए तो अपनां विगारन करे अरव ह नी प्रमन्न रहे तै से मन निरा
 लं वर है त वं तो रागादि रूप प्रवर्त हो प्रवर्त ताते वं कुं शत्रु आस विषे ल नाय दी जिए तो रागादि रूप प्रवर्त है
 अरव ह मन नी प्रमन्न रहे इहां वा रा शत्रु नि का पवन पावन करना ताहि का नां म शास्त्रा भासन जांन नां
 आस के अनुसर स्वरूप ध्यानादि क का करना सो जी सा सा आस ही है जाते शुद्ध ध्यान विषे नी वितर्क स
 हिम भान क रा वज्र नि वितर्क नां म श्रुत का क रा है ताते या वत के बल पांन नये पता वत शत्रु विषे ही म

ननगाएगादिकहीनहोहे सोयऊसासुमनवंदरकेरमावमेंकुंवरुसमानकहा तहांवृक्षविषेसोसार।
 नतफलफलहोहे ताकाभारकरिमअहे सासुविषेसारनतसाहदसुपअर्थपाईएहे ताकावृक्षलपना।
 करिपाहोहे वृक्षरिवृक्षविषेपांनहोहे ताकरिमममसोनेहे सासुविषेयुक्तीलीएवचनपाईएहे ताकरिसं
 कीर्णसोनाहे वृक्षरिवृक्षविषेफलीहोहे तिनकेआभयपत्रफलपाईएहे सासुविषेअनेकनयहे तिन
 केआभयवचनरचनावाअर्थनिरुधकरिएहे वृक्षरिवृक्षवंचाशोनेहे सासुजिलोकपूजउंचासोनेहे
 वृक्षरिवृक्षकेविस्तारसुपजमहोहे सोईकारणनूतहें सासुकेविस्तारलिएवृद्धिअथवामतिहोमधुर्वेका
 रणनतहोहे असेंदरुसमानशासुविषेमनवंचरकोरमावि। आगेआसुसुपीवृक्षविषेमनकुंरमावता
 जीवहेसोअसेंनचकुंभावेअसाकहैहे। तदेवनदतदपंपाप्रुवंनधिरंमृतिइतिविश्वमनाचंतचितये
 दिश्ववित्तदा॥१३१॥ समस्ततत्त्वनिकाजंमनहारंभीहेसोअमादिनिधममस्तजीवादिनत्वनिहंअ
 साचित्तवेहे जोसोईएकवस्तुतिसविवक्षसस्वरूपकुंअरतिसंत्यतिपकीस्वरूपकोंप्राप्तहोतसंतानाहीना
 मकुंयमहोहे। नावासासुभासकरनेवालाहोतीकेवलसहअंतकारदिकविषेहीनाहीमनकेरमाविहे



७५

असेंवलुस्वरूपकुंचितवेहे एककोईजीवादिकवस्तुहेसोनितनीअमितनीहेसत्तासुपत्रीहेअसतासुप
 तीहेएकतीहेअनेकभीहे इत्यादिसनहि सोअसेंअवकुंयमहोताजीवादिक्वस्तुहेसोनाहकुंयमनेहे।
 हेअपनिस्वभावसुपरहेहेअसेंहीअमादिनिधममस्तजीवादिक्वस्तुपाईएहे वृक्षरिवृक्षविषेहीआसुवा
 वृक्षरिवृक्षपांतीजीववित्तवेहेसोअसेंवेतयमनेवलुस्वरूपजोसोसमगद्वीपादिककुंयमअपनांकसा
 यकहैहे। आगेअसायंमतोअमसुहोभीअसीकोईआसंकाकैताकुंतिशकरणकरतासुअकहैहे।
 यकमेककुंसिंहधोओतसिधयानकंअवाधिसामतसयामपातुपयतिनि॥१३२॥ एकहीवस्तु
 एकाहीकाउंवेहेअवस्तुअवस्तुइतीमुंयमहेइहोमुकहैहे। यमाएकनिकारंमिअसेंमिअमहे
 असीवतीतिअममसोईअसीवतीतिनाकीअमयाअसिहैहे। नावाजोएकहीअनेकसोवस्तुकुंतिम
 मयनीकहिएअरतिसहपुताहीनीकहिएतोतोअमहीहे वृक्षरिवृक्षअमअमअमेकतेकहि एतोविरोधमां
 हीअसेंपुरवकुंएकहीपुसवकपिताभीकहिएपुवभीकहि एतोअमहीहेअरओरवापिताओरकपुवक
 हिएतोविरोधमांहीवस्तुअमपुंसाधेहें सोईहोएकहीवस्तुनितकहा ताकाउदाहरणकहैहे। कोरिक्

[illegible]

हे भद्र प्रद्योतपुरवर्मादीसोईपुनर्वासमवेतविधेई प्रसहेउविधेनांही प्रसकासविधेई प्रसकासविधेनां।
ही नैसकवहप्रमयई नैसकवहप्रमयनांही नैसकांनिहै। नातेएकहीवस्तुयुगयनसत्ताअसकाहपहै।
इतिभोगतिप्रयेकाएकभोगनिहीअनेकाअनेकभोगनांएकहीधुरवहं सर्वसमिअनेकाएकनीक।
इतिभोगप्रमयविअनेकाअनेकभोगनीभोगिहै। नातेएकहीवस्तुयुगयनएकअनेकभोगिहै।
मोहीतिमरहपहैअनितमरहंहीअनेनैसातनअनेमोअभोगाशासुहारकरिप्रमाणनैअनिसकअ
पेकतेमसुयुगानीजीवतिसेहीविधयेहै। आगेकैउत्तरककैजेवस्तुकेहीअभाविहीमसुयुगनोअ
सिधे। नातेतिप्रमयकेसर्वथाविनादिअनैकसकप्रमयनांहीपायेहै। नैसीअसकाहकरिककांस
अकहैहै। अभासुनकएविनादिमनेअभासनाअप्रतिहिनप्रतिअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रति
सकप्रमयभासनाअप्रतिअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रति
ही। अनाभासनाहीअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रति
अभासनाही। अभासनाअप्रतिअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रतिअभासनाअप्रति

जैसे एक पदार्थ जैसे ही जगत् है तैसे ही सर्व पदार्थ जानने
 दाते जगत् रूप हैं। सो जगत् के अधिक भाग मनुष्यों के सर्वथा निस्पृह माने हैं। इत्यादि एकान्त रूप वस्तु के माने हैं।
 सो जैसे ही नाहि जगत् विचार कीएं जैसे एकान्त विषय विरोध नासे है एक ही वस्तु विषय अवस्था पलटें विना अर्थ क्रिय
 की सिद्धि होती नाही माने सर्वथा नित्य के से मानिए वदुरि अम अम अवस्था होतें श्री कोई भाव कानि न्यूनो करि
 सर्वदा वस्तु एक नासे है। ताते सर्वथा कृण विन सूर के से मानिए वदुरि ज्ञानी भी नासे है वाद्य पदार्थ ज्ञानी नासे है जो
 वाद्य पदार्थ न मानिए तो इमांण अणुमांण ज्ञान का विना मान होई। ताते सर्वथा पांन मात्र ही नाही है वदुरि धनक
 पदार्थ नासे है तिनका अभाव माने वायु पदे सजीव रूप पदार्थ है सो भी अभाव रूप जीवाह साधन कंकुं कुं कुं कहै
 सोयने नाही। ताते सर्वथा अभाव रूप नाही है। जैसे एकान्त रूप तो वस्तु नाही तो के साहे तिस रूप भी है अति सरूप।
 नाही नाही सोही कहिए हे वस्तु है सोई अर्थ का मित्य है पर्याय पलटने की अर्थ का कृण विन सूर है। ज्ञान विषय
 भासना की अर्थ का ज्ञान मात्र है वाद्य वस्तु सत्ता रूप है तिनकी अर्थ का पांन मात्र मांण वाद्य वस्तु भी है परद्वय के
 वकाल भाव विषय युक्त नास्ति है ताकी अर्थ का अभाव है स्वद्वय के वकाल भाव विषय अस्ति है ताकी अर्थ का अभाव।

[illegible]

स्वभाव है इसही लक्षण करियर प्रयत्न तेजि न आत्मा के अस्तित्व का निश्चय हो है वरिपरि यज्ञ नियम है वस्तु का
अस्तित्व हो तेना के स्वभाव का अभाव न होय जाते लक्षण भासन ए लक्षण का अस्तित्व के से रहे वरिपरि जैसे जो पुरुष
अपने धन ही का धर्म होई प्रवर्तन का ही एक सी दसा रहे वरिपरि जो परधन का धर्म होई प्रवर्तन का ही एक दसा
है आही तेसे आत्मा का स्वभाव गान है सो जो जीव अपने गान ही का स्वामी होई प्रवर्तन ए पदार्थ जैसे परिणाम ते
से परिणामों में इस का जंम न होय हो असी भावना रहे ता के अविनासी अवस्था हो है जाते जो नयना तो भाक
स्वभाव ता का सो अभाव होय ना ही वरिपरि जो नयन विना आन भाव नि काय कुं स्वामी हो ना ना ही या की अवस्था
के से पल है वरिपरि जो जीव परधन के स्वभाव नि का स्वामी होय प्रवर्तन शरीर धन स्त्री पुत्र दिक अपने स्वभाव स्व
परिणाम में निवृत्त अधन जाते ता के अविनासी अवस्था रहे ना ही जैसे सारी शक्ति की अवस्था एक सय रहे ना
ही यद्यपि मकी अवस्था पलटे आय की अवस्था पलटी माने तहां अविनासी पनो के से रहे ताते जो विवेकी अवि
नासी अवस्था कुं चाहें सो एक पां न जाव ना ही कुं जावे अगो प्रह जो प्रह न विन कने बली ए कुं ध्याम स्व
य जो श्रुत पां न जाव ना ही कुं जावे स्वभाव ता का जो सा कं न कं मर ए न क हो हो है ता का उत्तर कह है आन मे वक

लंका मे मयुराक्षपनचरं अहो मोहमया सा पश्यन् यथा नृपापने निशे करिणां तविधै कान्ति
 जौ सोसुर्वेषाभ्यां वेगो गच्छेत्तस्माद्विनाशीदे भद्रिजोऽर्जुनमुक्तिरुक्तं अभिनोकिपते सोमनाभाभ्यर्थ
 दे मयुरो हरीवदिषां जांमनी गुणाय भूतापन्नपरियत्तर्पणिदं भाष्यं ज्ञापितुं व्रतान्न वा आतोषतस्तदांमस
 सप्तदशैविकी सोमनाथप्रविष्टा नां प्रसादोत्तरं प्रकृतैः परापरविज्ञानां च संख्यां न हेतुं नये परा
 धर्मिकां नान्यथा रोहे जेसे पंचमहासप्तकांतरी होतार्षिवाचनं आश्रोमै आते पाठार्थं रंमभां प्रदर्शन
 से के ते से नाले महं विष्णु कला रहे है जिस कहना मुश्किल काम है सुख को प्राप्त हा हि है भद्रिदस सुव विषे परा
 धीनता व्यादि कोट दोष भां ही है भद्रिजो विष्णु सत्त्व की अप्रमंश कुं धादिगै सोय हुमे हकीमहि माहे जेसे बा
 लियो मन संसुखायवे की लाय ही छली लावे है तेले को हले कांम को या दि ता थ भक्ता की रे प्रत्ययां कुं बुद्धि द्रादि
 दशाधारी जीजी गोरो भद्रं नारे है भद्रिजं सीजन कं जो धवि कां को भद्रं नारा नरा आचार्य नारे है जेसे नून
 लोपु नदी येका का प्रथं सो ले से को ही न सिधा वे महाकां मिली नाल प्रथं ले है आगे मुना पंच उ वि
 पेड हों जेसे नारा नमम विवरे कलाप न ले यो ऊ है है शास्त्र आगे भगिष्व नो विमुदा भगिनि

तः आगमवतखलोदीशो मलीवान्मवाचवेत् ॥ आसुरूपीः प्रविष्टो नयहे सोतो मां धा पुष्परागा ॥
 रत्नवतमधरदितनिष्ठान्न होत सत्तविशुद्धिर्मलमोहहे ॥ वक्ररिदुष्ट अन्नयहे सो आगारवतधकासमानहे ॥
 तसंतापनसंयुक्त हो हे वा नमस्कृत्य हो हे ॥ जैसे पसरागमलिहे सो तो अधिकरित प्रेक्षणमलनिका मां श
 हिमिसे निष्ठान्तक के मय बुद्धता वस्तु हो ससंत मो जाय सो न हो हे ॥ वक्ररिदुष्ट नका अंगार हे सो अधिकरि प्र
 कासमान के होई परंतु के तो कोय न रूप मे ला होई के मय स्थान सम होय ते संधर्मा न्म जम जीव हे सो तो शास्त्र
 का मया सकरि गो कुरा अज्ञान रणादिक मलनिका ना महे नै से सिद्ध पद के वाई बुद्ध सजाव रूप हो न संता
 प संसाधो प सो हे ॥ वक्ररि प्रधर्म अन्नय जीव हे सो शास्त्र का अभास करिय दार्ष्टिक ज्ञान साध सिद्ध होई
 परंतु के तो मां दिखे नि करि मे ला हो हे ॥ आगे ध्यान की साधनी के विषय सा सच कहै हे ॥ मुहुः प्रसा
 र्य संज्ञानं पश्य मन्वा नयथा लिताम् ॥ श्रीसुधी विनिराकृत आयेत्त ध्यात्मविमुक्तिः ॥ आत्मा अ
 धिकार रूप जो अध्यात्म साधना का सो मनस रा मुनि हे सो बारं बार मन्मं ज्ञान के फेलाय जे से पदार्थ निवे
 हे ते से तिन कुं अवरो कता संता रा ग दे धति कुं निराकरण करि आवे हे ॥ आत्म सो न जीव ध्या

८९

न कहै हे तहां पर जे तो आगम अमरानादिक हृदय मन्मं न से जीवादि पदार्थ निका निश्चय करै ॥ वक्ररि
 यथार्थ अध्यान करता संता ॥ असे मां देष न होई ते से वा हा साधन वा अंतरंग विचार करि राग द्वेष निका
 ना का करै ॥ ऐसी साधनी जे अध्याम की सिद्धि हो हे ॥ अतं उपयोग की तिष्ठत ता का मां म ध्यान हे सो राग द्वेष
 होत पर द्यमि विवेक्य योग प्रमे तहां ध्यान के से होय ॥ वक्ररि पदार्थ निका निश्चय न ए विनां घट्ट द्यम
 दुष्ट निष्ठ मां से तहां मां देष के से धरि होई ॥ अयनां पान पदार्थ निके ज्ञान में विवेक गा ए विनां पदार्थ नि
 का निश्चय के से होई ॥ ताते पान कुं विस्तारि पदार्थ निका यथार्थ निश्चय करि राग द्वेष के मे टि कोई एक
 पदार्थ के पदार्थ आवता ॥ अम सर्व वित वन कुं रो कि ध्यान अवस्था कुं जीव वा स हो हे ॥ गुरु ध्यान हे सो सा
 कात मां क मां हे ता के अर्थ निश्चय निके ॥ ऐसी साधनी सिद्धावनी को महे ॥ आगे राग द्वेष कुं निराकर
 य करि को हे ते ध्यान करै ॥ साधन की एउ तर कहै हे ॥ जो ति निराग द्वेष निके संसार का कारण ते कर्म
 न न के उपजावने का कारण पना पाई ए हे ता ते तिन कुं मय करि ध्यान करै सोई कहै हे ॥ वेष्ट मोक्ष
 ने यावत ता वक्र तिर्नवा वि आवति परिवर्ति मां जे तो मंथानुसारिणः ॥ मंथ जो रई ता का अ

मुसारी तिससारी जो यज्ञ प्राणी ताके यावत्तु वंधनां अरमुलनां पाईएहे तावत्तु संसारतु पुछ विषय मम अ
र मा मम ततिन करि उमण होहे जेमें मांघनी विषे रई होहे ताके मसीका वंधनां मुलनां यावत्तु पाईए
दे तावत्तु मम मम न होने करि वाके परि उमण होहे जेमें संसार विषे यज्ञ मी वहे ताके नवी मम कर्म का व
ंधनां अर पूर्व कर्म का उदय होय करि निर्दरनां यावत्तु पाईएहे ताके नर नारका दिपरी अति विषय मम मा
मन होय जे करि वाके परि उमण पाईएहे वर अर पूर्व कर्म का उदय होय जे आके रागा विलोहे अर रागा दिक्का
वनि ते नवी मम कर्म वंधे हे ताते संसार विषे उमण का कारण रागा विकारा व जां नने आगे प्राणी के कर्म का
मुलनां हे सो कोई तो उमण का अर नवी मम वंध का कारण हे कोई नई हे असा दिवाव ता स्वरु कह हे
मुममाने नया सेन अति वंध मम यवत्तु जे तो साया सो मो सवो यो यो जे अति वंधन मम जो रई ति
ससारी यज्ञ मां वता के मुल मी जो फासी ता करि उमण अर वंध हे सो यज्ञ फासी से खोलनी जा करि उम
ण होई अर वंधन होई जेमें मांघनी विषे रई होहे ताके मसीकी का सी है ताका मुलनां दोय प्रकार हे ए
क तो मुलनां असा होहे जा करि नवी मम वंध हो ता जाय हे अर मांघनी विषे उमण होहे अर एक मुलनां

भैरवचिह्नं नाकारिपदवीयवंधनमोहीहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथासीमाहीहरे भवसीनेकूटमाहीहरे नैसेसं
 लक्षत्रियेयप्रजापतिप्रदे ताकेकर्मकलातीमाईहरे तावतीनिर्बभूवोनांखेयप्रकाशहरे एकलौलित्तिजराभैसीहरे
 होजाकारिपदवीयवंधनमोहीहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अथाकारिपदवीयवंधनमोहीहरे अकारिपदवी
 नबंधननाहीहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे
 कवकर्मकाधुनाईअधुनाउदयूरसवेमनिर्जदेह नवांमविधाकजिनेराहरे सोमवीनकर्मबंधनका
 अरुमाधुनीविधेयप्रथाकाकारिपदवीहरे ताकेकर्मकाधुनीविधेयप्रथाहरे अकारिपदवीयवंधनमोहीहरे अकारि
 वंधनमोहीहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे
 धनवंधनमोहीहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे
 तिअरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे
 रमोक्तलक्ष्मीहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे
 अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे अरुमाधुनीविधेयप्रथाहरे

चित्त-असुप्तकार्यनिकीप्रवृत्तिहोय सुप्तकार्यनिकी-अप्रवृत्तिहोई कदाचित्तसुप्तकार्यनिकीप्रवृत्तिहोई अ
 सुप्तकार्यनिकी-अप्रवृत्तिहोई ऐसीप्रवृत्ति-अप्रवृत्तिकरितो-आत्माकेबंधहोहे वज्ररिमोहकाउदयध
 लोनेनेतत्त्वज्ञानहोताकरिकानमजसुप्तोपयोगकीप्रवृत्तिहोई सुप्त-असुप्तभावनिकी-अप्रवृत्तिहोयमे
 ऐसीप्रवृत्ति-अप्रवृत्तिकरि-आत्माकेमोहहोहे तानेऐसाहीसाधनकरनायोगपड़े। अगोचरहैबंध।
 होहैसोपुण्यरूप-अपराधरूपहोहैसोकाहेतेंनियजेहै वज्ररितिनिदोउनिहेंअज्ञावकाहेतेंहोहै ऐ
 सेआप्तकाकरिततरकहेहै देवानुशागबुद्धिगुणदोषरूपांकरोतिखलुपायंतद्विपरीतापुण्यतडन
 ग्रहितातयोमोहं गुण-अदोषतिनविषकीकीजोदोषरूप-अनुशागसपबुद्धिसोतोनिअकरि
 पापकंकरैहै अरुतिसमेंविपरीतगुणविषेअनुशागदोषविषेदोषरूपबुद्धिसोपुण्यकंकरैहै वज्ररिति
 तहोउनिहेंरहितजोबुद्धिहैसोतितयापुण्यरूपकर्म-निकामोहकंकरैहै बुद्धिनामउपयोग
 काहैसोअपयोगतीनप्रकारहै असुप्तोपयोग १ सुप्तोपयोग १ तहंजाकरि-आत्माकाज
 लाहोइताकाआमपुण्यहै जाकरिवुराहोयताकामाभोवहै सोधर्मरूपभावनिहेंआत्माकाजलाहोहै

२१

तातेधर्मकेसुप्तताजोभावहोतैसुप्तहै अरुअधर्मरूपभावनिहेंआत्माकाबुद्धिहै तातेधर्मविरोधीजोभावहोयहै
 सोतिसजीवकेतैसुप्तोहकेउदयतेगुणविषेदोषहोयअदोषविषेअनुभाहोई अथवातिसहीअभिप्रायतेजावि
 हेंगुणहैअनोपुण्यकाकारणहोतिसविषेतोहोइहोईअरुअविषेदोषहोईअजोदोषकाकारणहोइ तिसविषे
 अनुशागहोईतिसजीवकेअनुशागयोगसहैहं ताकरियापकर्मकाबंधहै वज्ररितिजिसजीवकेमंदमोहकि
 उदयतेगुणविषेअनुशागहोईअदोषविषेदोषहोई अथवातिसहीअभिप्रायतेजाविहेंगुणयाअपुण्य
 काकारणहोई तिसविषेतोअनुशागहोईअरुअविषेदोषहोयताजोदोषकाकारणहोइतिसविषेदोषहोईतिसजी
 वकेअनुशागयोगसहै ताकरियुक्तकर्मकाबंधहै इहांकोअज्ञाहैअंधधतेपुण्यकाबंधकेसंक्षेपताकामाभा
 न जोअपतांकषयकाषकोननजीगदोषकरेतहंतोपायबंधहै वज्ररितिसेकोउपपुरषमित्रकाबुद्धिहै
 वज्ररितिसेजोधर्मविरोधीविषेदोषकरेतहंयाकेअभिप्रायविषेधर्मकाअनुशागहै तातेसुप्तबंधहोयहै ताक
 उग्रहृण सुहृसिंहदोउग्रहृतहंसुरतोमृतरकाकाअभिप्रायतेमरिपांचदेवसर्गदेवजयासिंहमुनिमारवका
 अभिप्रायतेमरिपांचदेवमरिकाया वज्ररिशत्रुनिविषेपायनिकीदायादीजीविनिकीनिशकरिहै तानेक

चोचित है वैसे ही पुण्यबंध में वैसे, जैसे रात्रि उष्ययोग रागद्वेष सहित प्रवर्तित है ताते इन कं असुत्रोपयोगक
 दिए हैं वृद्धि जिस जीव के मोह के अभाव में जैसे रात्रि उष्ययोग रागद्वेष सहित प्रवर्तित है ताते इन कं असुत्रोपयोगक
 करि पुण्यकर्म अथवा पुण्यकर्म का नास ही हो है नवीनबंधन हो है पूर्वबंध की निर्मग हो है जैसे तीन प्रकार उपये
 गे है सोई पुण्य पापका बंध आपति न दोष निकाला सता का कारण जामना ॥ आगे जो रागद्वेष के पूर्वोक्त प्रकार
 रकार सायना है तो तिन रागद्वेष निकाल यजन का हिते हो है जैसे पूर्वोक्त कहें है ॥ मोह की कड़वि के बीजों
 न्याय कुराविव मसा झा ना मिना रा संतवे तो निहि धि कुरा ॥ जैसे बीजों के जड़ अथवा अंकुर हो है
 तैसे मोह मूल का रूप ते आता के रागद्वेष हो है ताते निरागद्वेष निरुं जो जीव वृक्ष की या कहें है नीह जीव को ना
 स्यात् अथि करि सो मोह दध कर वं बो गये ॥ अतत्त्व अज्ञान रूप मिथ्यात्व नाव काना मतो मोह है अर
 द्र अति दुःखार्थ निको मो नि नि नि वि धि धि अधी नि कर नी तिन का मम रागद्वेष है सो अतत्त्व अज्ञान ही ते यदर्थ
 द्र अति दुःख है ताते जैसे वृक्ष के जड़ अथवा अंकुर का मूल कारण नवीन है तैसे रागद्वेष का मूल कारण मोह जो
 नना वृद्धि जैसे कोई जड़ अंकुर कंद मूल की या कहें सो वृक्ष के बीज कंद मूल करे तैसे रागद्वेष काना म की या कहें सो

९२

मोह काना स करे मोह काना स न पंचन का ना स मरु जही से है सप्पदृष्टि के मोह काना स न एवी तें कदाचित् रागद्वेष
 पर है जहि जैसे उपादे संस्र के जम अर अंकुरा के ते कदाचित् हरे हरे परंतु सीधु के मो तैसे मोह मदे मशी धुना स
 कंधा सि हो हगे वृद्धि के र मिथ्या दृष्टि के मोह का स झ वृत्ते तें रागद्वेष से नी अथवा पारितो जैसे बीज हो ते जड़
 अंकुर से नी बीजा वृक्षी संपरंतु सीधु वंधे तैसे तें रागद्वेष मशी धु द्रि कंधा सि हो हगे ताते रागद्वेष का मूल का
 रण मोह कं जनि तिस ही काना अ करना ॥ मो जैसे बीज जलावने का कारण अग्नि है तैसे मोह ना स कंधा रन
 का मोह ॥ ज्ञान ते जीवा दित त्व नि का स रू प के यथार्थ जामें तो अतत्त्व अज्ञान काना अ होई ताते तत्त्व ज्ञान का
 अभास वैसे तसर रह जा ॥ इतना की ए सब सिद्धि स्व ॥ यमे व हो है ॥ आगे सोई निरागद्वेष निरुं बीज न त मो
 ह सो के कहें वृद्धि ता के ना स विषे कारण कहें सो कहें है ॥ पुण्य पुण्य गृह दोषो बो गंभीर ॥ साति स्म क
 मा गवा मा दिना मोह ॥ पुण्य ॥ पुण्य विरो हति ॥ मोह रूपा पुण्य दोषो है सो के साहे पुण्य उति धने का ल का
 नया है मोह अनादिकाल ते जया है वृद्धि के लो है अरु दोष ते निप माह ॥ यम गतो मंगला दि कं मो रा गृह ॥
 आनि प जे है मोह सो पर द्रव्य का यह कथन रि अहं के दोष ते निप जे है वृद्धि के सो हो नीर है पुण्य

तोउंनहोहे मोहहे सोजाकाशाहनपाईएओसावडोहे वडूरिकेसाहे गतिसहितहे गूमडातोमधिरुधिरादिकाग
 मनलीएहे मोहहे सोनरकादिकगतिकामडावलीएहे वडूरिकेसाहे पीडामहितहे गूमडावडिहे अरमोहआ
 ऊनतानियजावेहे ओसामोहआऊनतानियजावेहे ओसामोहरूपगुमडाहे सोसागजासादिककरिमुद्ध
 होहे अरमोहकुंघासहोहे गूमडातोमधिरादिककाओउनां अरजासादिकधृतादिककालगावनां इनिउ
 पायनिकरिमुद्धहोहे अरवामग्रीहपरोहकुंघासहोहे मोहहे सोवरदयकाओउनां अरमिजजातिकाय
 हणकरनां इनउपायनिकरिमुद्धहोहे अरसमकहपरोहकुंघासहोहे जावायेसंगूमडाअपनें सररि
 दीविषेउपजेहे परंतुआपकेंडुवदायकहे तेसोमोहहे सोअपनेहीअस्तित्वविषेप्रगटहोहे परंतुआऊ
 नताउपजावेहे तातेउपायकरिआकामासकरनांयोग्यहे ॥ आगोमोहरूपीगुमडाकेछुटकीयावाहेतिहि
 जीवनाशकुंघासनएनीऊटवनिविषेओकनकरनांओसाहोहे ॥ मुखदमुखयंतसुदुखयंतोयदिद्विष
 : मुखदोयिकयंओचा द्विषोदुःखयितुंमृताः ॥ ८५ ॥ जोआपकुंमुषीकरैतेतोमिबहोहि अरदुषीकरैते
 शत्रुहोहि तोजेमिबजीयेअरवेदुषीकरनेकुंमुएतोवेजीशत्रुनएतेकेसेमोककरनेओपहोहि ॥ ८६ ॥

९३

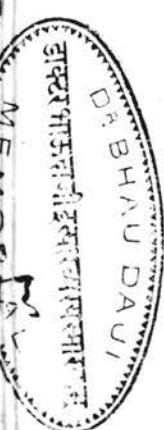
कविषेजोआपकुंमुषउपजावेसोतोमिउकहिए अरदुखउपजावेसोशत्रुकहिए वडूरिजोयहलेंमिउनी
 थाअरपीवेंआपकुंडुखदायकहोयतोवाकोनीतहं शत्रुहीमांनिएहे वडूरिजाकुंमनुमांनिएताका
 शोकनीमांनिकरिएहे तातेइहांअपनेंस्त्रीपुत्रादिकहेतेतेरीमांनिविषेमिबयेपरंतुवहमरणकुंघासन
 एवतोतुफकुंडुखदायकनएतातेवेजीशत्रुनएअवगुनकाओककहाकरणां सोप्रतददेवोजेसंशत्रु
 कामरणादिकदुषउपजावेहे तेसेहीमूणीवेंस्त्रीपुत्रादिककास्मरणादिकदुःखउपजावेहे ताते।
 शास्त्रमायकरितोस्त्रीपुत्रादिकवज्रतहितकारीनांही वडूरिमूणीवेंनीजुनकंहितकारीमांनिसोकक।
 रैहेसोयऊवनामोहहे जोमोहकुंहरिकीयावाहेसोस्त्रीपुत्रादिककामरणादिकहोतेनीओकनांहीकरै
 हे ॥ आगोस्त्रीपुत्रादिमिउनिकेमरणविषेउपजाहेदुखजाकेओसाजोतेसोकहाकरैहेसोकहेहे ॥ ८७ ॥ अप
 रमरणमत्वाभीयानलंघनमेरुदमविलयतिहरं स्वस्मिन्मृतो तथास्यऊशत्मनः विनयमरणेभूयः सा
 ध्वयः परजन्मवा कथमितिमुधीः शोकंऊर्कमृतेपिनकेनचित् ॥ ८८ ॥ जोजीवअतिसयकरिय
 लंघकाऊप्रकारमेद्यानजाय ओसाजोआपतेअमस्त्रीपुत्रादिकतिनकामरणाताकुंहोतसंतेंतिनऊअ

एनें जानि रोवता संता विलनाय करैहे सो जीव आप विषे मरण अवस्था हो तें तें से ही अति समय करि रोवता
 विन लाय करै सो असें मूर्ख आत्मा कै नयरहित मरण हो तें निप जे असाध चुरयउ अरु उतर कष्ट पर लोक से
 कै से होई न होय। तातें सुबुद्धी जीव है सो मूर्ख को ईश्वर सो क ना ही करैहे। जो जीव स्त्री पुत्रादिक का मरण
 हो तें पतक आप तें तिन का संबंध है तो जी मोह करि तिन कुं अपना मानता संतारो वै हे विलनाय करैहे। सो जीव आप
 प का मरण हो तें तो अत्यंत शोक करै ही करै। एक दृष्ट का विषय हो तें ही शोक होइ तो मरण समय तो सर्व ही का वि
 शय होइ। तातें जो कै पुत्रादिक का विषय शोक होइ। ताके मरण का नयरहित जो समाधि मरण सो न होई। व
 दुरि समाधि मरण तें यश लोक विषे यश होइ अरु पर लोक विषे उक्त पद होइ। सो व के कै से होई तातें जानी मोह
 कुं घटा यप होइ स्त्री पुत्रादिक कुं अयनां मानता संता का उ का मरण न होई शोक म करै। बाह के समाधि मरण की
 सिद्धि होइ तो करि वा के इहा यश की अरु आगे स्वर्ग मे कादिक की प्राप्ति होइ। आगे यश सो कहै तें होइ अरु
 ब्रह्म कि सा का कारण सो कहैहे। सो मे सो कहै सो तो दुख जाना प्रागस्तः सुख ते न हो नाव शोक मन सुखी सा सर्व
 सुखी। इष्ट सामग्री की हानि तें शोक निप जे है अति स मो क तें दुःख होइ वदुरि इष्ट सामग्री की प्राप्ति तें रग।

५४

निप जे है अति स रग तें सुख होइ तिरु कारण करि सुबुद्धी जीव है सो हानि विषे शोक करि रहित हो त संता सदा काल सुखी
 होइ। ना वा सर्व जीव सुख कुं चाहै हे सुख का धन क दुःख होइ सो शोक तें होइ। शोक होइ सो इष्ट सामग्री का वि
 शय न होइ। वदुरि जो जानी असा विचार करै जो मोह तें पर वस्तु कुं इष्ट मानें हो। इष्ट होइ अरु पर वस्तु मे
 रे क वदुर न होई मेरे राखे रहै ना ही। तातें पर का विषय विषे शोक कहै। असें विचार तें जो हानि हो तें नी शोक न क
 वै ताके दुःख कहै तें होई। इष्ट न विनां सुख का अभाव न होई तव वदुराणी सदा काल सुखी ही रहैहे। तातें सुखी र
 हावा है सो हानि न शोक न करै अरु जो को मुहानि न ले नें क उपाय करि सुखी नय चाहै सो स मार विषे कोई साम
 ग्री की हानि होय ही होय तातें त हं शोक न कर तां सो सुखी हो नें क उपाय है। आगे जो इहा सुखी होई सो पर लोक
 विषे कै सा होई सो कहैहे। सुखी सुख महामन्त्र दुःख दुःख सम सुते सुख स कल समा सो दुःख त स विषय य
 इ स नो क विषे जो सुखी है सो पर लोक विषे नी सुख कुं पावैहे वदुरि इ स लोक विषे जो दुःखी है सो पर लोक विषे न
 दुःख कुं पावैहे त हं सर्व वस्तु को साग सो तो सुख होइ वदुरि ता क उ जग पर वस्तु काय हल सो दुःख है। ना वा कोई ज
 व असा प्रम करै कि वर्तमान सुख हो नि कष्ट दुःख सहित तो पर लोक विषे सुख होय सो पर लोक तो परे रू दै न

ज्ञानिगतहंकराहो ॥ अवदं सुखबोधि कष्टदुखसहिपसो तो उचितनाही ताकं समजाई एहे जोई हंड ॥ खी हो
 ई सो परलो कविषे सुषयावे असातं नममतिकरै जोई हंड सुषी होई सोई परलो कविषे नी सुषी होई ॥ अर हंड
 धी होई सोई परलो कविषे नी दुषी होई ॥ इहां प्रश्न जो शास्त्र निविषे तो यज्ञ प्रसिद्ध है जो विषय सुषसे वे सो दुःख के
 पावे ॥ अर तय श्रृणुदिक कष्ट कुं सहे सो सुष कुं पावे तुम के संकहे है ताका मतर तंतो वास साम धीने सुष माने है सो
 तेरे सुमहे वृद्धि रहम कहै है जो अपने परिणाम आकुल तारहि स होई सो तो सुष है आकुलता सहित होई सो दुःख
 है ॥ वृद्धि आकुलता होई सो मोहने पर प्रत्यकाय हण की एं होई ॥ जानें यज्ञ तो परदम कुं गे है बर प्रयना होई ॥
 ही अपने आधीन परिणामे नाही तहां आकुलता वपने ताते पर प्रत्यकाय करि नि सकल हो नां सोई सुष है
 सो असीद साज एवर्तमान नी सुषी होई ॥ अर आगामी नी या का फल परम सुष होई ॥ वृद्धि पर प्रत्यकाय हण के
 नि आकुलता करनी सो दुष है सो असीद साज एवर्तमान नी दुषी होई ॥ अर आगामी नी या का फल दुःख होई ॥ वृद्धि
 रमा सु दु विषे नी विषय सुष से ववका फल दुःख कहा है सो जहां लला करि आकुलता नी एं विषय से वे है ताह
 का फल दुःख होई ॥ अर विषय सुष मो मोमं मिमं के वा इ इ दिक के धने पाई एहे ॥ परंतु तहां दृष्टा प्योरी है ताते कु



२५

गति कुं नाही पावै है ॥ अर कादिक कुं विषय सुष नाही मिलै है ॥ परंतु दृष्टा करि आकुलित होई नर कादिक कुं पावे
 है ॥ वृद्धि तय श्रृणुदिक कष्ट का फल सुष कहा है ॥ सो वास्तो तय श्रृणुदिक अर अंतरंग विषे संकेत रूप दुः
 खी न होई ॥ ताके फल सुष कहा है ॥ वृद्धि तय श्रृणुदिक कर तां दुःखी होई ॥ ताके आर्त ध्यान होने करि वा का फल
 दुःखी होई ॥ ताते जो जीव मोह घटने ते वते मान सुषी होई ॥ सोई आगामी नी सुष कुं पावे है ॥ अर मोह वंधने ते
 वर्तमान दुषी होई ॥ सोई आगामी नी दुःख कुं पावे है ॥ शास्त्र विषे नी दुःख कादिक ते असाता का वंधक
 बां है ॥ असाता का लुब्ध आहंड मही होई ॥ ताते दुःख का फल होई ॥ असातम करि परलो क के सुष का उपाय
 ते भाग्य सुमति हो ॥ वृद्धि जोई हंड विषय सुष मोहिये है सो मिश्री मिलै जै सें गुड का चार धुरालो ते सें
 शान्ति सपाय विषय समीर सना से ताते विषय सुष मजोगे है ॥ किंतु तिन के बोझने विषे दुःखी न होई ॥
 ताते विषय सुष मोहने का नी जय मति करै ॥ सांवाधर्म भावने ते वृद्धि मान नी सुष होई ॥ आगामी नी सुष हो
 है सो असा कार्य कर नाई ॥ मोह है ॥ आगे एं वें के कष्टादिक का मरण ते तो शोक होई ॥ अर तिम की उ
 रति है ॥ रथ होई ॥ सो यज्ञ सुसति कहै है ॥ जै सें एं वें चर कहै है ॥ ॥ मोह से तर प्राप्ति रहि देहि ना

۲۵

[illegible]

यान् शमहि फलमाप्नुतेति मुमुक्षुस्तपःशास्त्रयोः हेनवत्तलोककीयांतिविनाई हंतेमेंनिरंतरशास्त्रकं
 यदिअरविस्तारजीणकायकेशतितकरिआरिरेकोंमीसोधि जैसेहुजयकषायविषयसपीधैरीमिहुंनंजातेज १
 तेमसामुनिहेतेतयअरशास्त्रकाफलवयसमभावहीहुंकरेहे केवलशास्त्रकापढनांअरमयकाक
 रनाहीकार्यकारीहेनाही कार्यकारीतोउपसमभावहे तहांजोजीवशास्त्रपढिकरितत्वज्ञानमेंकषायनिकों
 घटावेहे वातपधरणकरिइहअमिहसामयमिनेंसागदोषनहेनेकेसाधनकरनेमेंकषायनिकुंघटावेहे तिस
 कोंतोंशास्त्रपढनांअरतयकरनांसकलहेहे वहरिजोजीवशास्त्रपढिकरिवातपधरणकरिविषयकषाय
 मिहुंसाधे मजरभावनेकेअर्थिवाभांनवमाईकेअर्थिवाभोजनधनादिककेअर्थिशास्त्रपढेहेतयकरेहे सो
 जीवतलोककीयांतिविषयवेनाहे जैसेअनलोकविषयविकेअर्थिवायारसंवादिकार्यकरेहे तानेयसमय
 ऊउपायकीपाहे इहांतकजोआयरादिकविषेतोयहुनुपायनजाहे ताकासुतर आयरादिकविषेतोआह
 वायविसेषदीवेहे अरइसउपायविषेअंतरंगपापवहुतहेहे अजोकोउपेहेकिंशुमारसहितजोकी
 नकुंअवलोकिकरिविषयनिकीअजिलाषीजीवनिकरिउपजेहे सोकेमेंविषयकषायजीतेजाहितवगुमउन

२७

रकरेहे इहजिनंहुजसिकिविषयाजिलाषं खलो यासौतवमहाजनयसनर्थ सोहाय्यकममुमोहिय
 अमुस्य दोषोनिषिद्धवरणततयेतरस्य हेनवत्तलोकनिकुंशुगासहितदेविकमिकहाविषय
 जिलाषकुंवाप्तहोयहे यहअमिहविषयाजिलाषतोहुंमहाअनर्थउपजावेहे जैसेगीकुंबधिदुग्धघृता
 दिककाकिंचितहुंसेवमहुंअयोपआचरणहेसोदोषकुंउपजावेहेनेसाअपकुंनाही अज्ञाजीज
 वलोकनिकुं शुंआदिउहितदेवकरिविषयनिकीवांठाकरेहे सोयत्तकहाचिमतिकरे यहकलजअ
 ननयजोहिमहुंउपकावाणहे जैसेकोईरोगीअधिकरावहुंकाकिंचितहुंसेवनकरे ताकेरोगकीअतिद
 हिहोई सोरोगीमिहुंमधिकरावहुंकासेवनउचितनाही तेमेंविषेकीनिकुंविषयाजिलाषउचितनाही
 आगंकरेहे जीवयाउहितनकेहुंउपायकवस्तुनिसुअसविहोयहे सोएविषयतेरेनवजवकेहुंमाईतिति
 विषेतोहिअजिलाषकरसांकेसेयोपहे अहितविहितपीतिः पीतकलवमपिस्वयंसददपहसंयुत्वा
 सखोजातिजोपयं अहितनिरत साकाहोषंममीकनदेजवे विषयविषयहुंसाभासं कथंहुंमतेवु
 धः जैसेकोहुमनुष्यअपनीपारीसीजासोअधिकपीतिरहीहे अरवाकुंदुराचारमुनेतोमुनिकरि

तत्काल आप ही कहित जे जैसे आय क मांण विषे साधन जो विवेकी विषम हित जो जनता समान जो एवि।
 यथतिम काल व जव विषे दोष देखि कै सें इ निका सेवन करै काहू के सुखि सं अधिक धीति होई अरु वह
 वहुं दुख बार नी सुने तो तत्काल जे जैसे यं हित विवेकी आत्मा थी ज व जव विषे यनिके दोष देखि करि कै सें।
 वषया नु रागी होय सर्व धान होय विष कान ह्या जो जनमिष्ट तो लगेयरं तुषाण हरे सो ए विषयर मणी कसे
 न सें है परं अमंत जव धां ए हरे आगे कहै है कि जा समें तूं विषयनिका अमा स करै ता समें कै साह
 ज व न तें कहित होय है तव कै सें होय है आत्म नात्म विजोय नात्म वर्तिश सी दुख आचिरं स्वात्मा साः
 सकलात्म जीन वर्तिश सी कती रात्मनः आत्मे त्या परमात्मतां प्रति यत न्द्रात्म विद्यात्मकः स्वात्मा ला-
 लमुने निधीद मिल स न्द्रात्म म धात्मना हे आत्म न्द्रं आत्मार्पण के जोयन हवि जे विषम कष
 यदि कतिन की घृति करि चिर काल दुखारी भया अरु जव तूं आत्मा के संदर्भ क सो ए के कारण मां जे
 रागादि क लय जे निजता घृतिन कं मंगी कर कैं न वतिन के मंगी कर कष वे करि मोष्ट आत्मा है आत्मं
 ही पावै जा कं जे सी जो परमात्मा द मासा हि शासि हो ता संता के वृज मां न स्व रूप न थाप का आध करि उपज्यो

[illegible]

۴۴

नावार्थ

वैराग्यसंपदः ॥ १ ॥ याज्ञानविषयिनि केनेत्रनि की जो कटाक्षते ईमगुटेरे तिन करि वैराग्यसंपद सुदाय
 दीन जया ॥ अर होन हरे सें सार प्रमग जाते ॥ ऐसा तप ते ग्रहण्य मो ॥ २ ॥ ग्रहण्य अवस्था विषे तो ।
 निज स्त्री का सेवे न रहे ॥ अर जेत एक धारि करि सार की ॥ नि केने त्रिनि की जो कटाक्षते ईमगुटेरे तिन
 करि ॥ ३ ॥ ई ई वैराग्यसंपदा जिम की ॥ ऐसे तप ते ग्रहण्य अवस्था ही ॥ जे ज्ञान नी वहत पसंसार ही का कर
 पाहे ॥ आगे कहै वैराग्यार के बोध ते ॥ स्त्री का अनुगामी होय दुखी जया सो मरीर ते सी तार ये नम जाय ता ते मरीर
 दुख संभने हसति ॥ ४ ॥ स्वार्थ जुं मां धर्म विगल्य ॥ स्वतन्त्र ऊनिमान ॥ संशय प्रे मित परि प्रवसते ॥ दुख मे तत्त्व
 लव न स्वेति तां पद मयि पसे दिख ॥ सुखो सिद्ध ॥ ५ ॥ संख्य मां धोय दिस मति मा ॥ माय ही विप्रद ॥ ६ ॥ हे न
 वृजी वलुं या मरीर के हो ते ॥ सें अपमां अर्थ सुदोय योग रूप ॥ आत्म क माय अथ वापं वम हा वत सय यती का
 धर्म तथा ॥ अप धर्म स पक्ष धर्म का धर्म ता के ना स ॥ ज्ञान लित संता ॥ अप मां म के से क रानि करि स्त्री संयोग ।
 कृपा प्रज या सो य स्त्री का संवंध ही म हा दुख का म ॥ ७ ॥ कै सा हे न त सो हे न जा ॥ अस मति मां न जाने ॥ इहं अत्रि
 मां म सह का ॥ न या ज्ञान मां म ॥ मार ल जाना ॥ ८ ॥ मति तो मरीर के ॥ अर्थ अप मां अप धर्म ॥ अर ए ह तो ते रे संति

DR. BHAI DAVI
 MEMORIAL
 शास्त्र भाषा नीदर लायन मार कन

एक ये मन आय ॥ सो सं ॥ ऐसा के ह विगल्य ॥ जो वारं वार या ही ॥ सं ॥ ति करि ॥ अर ते रि करि ॥ जो सं ॥ सुखि चं न है तो
 सारि सं ॥ १ ॥ ति नि करि ॥ २ ॥ सं ॥ हो मरीर का पोषा करि ॥ अर वा के सं ॥ तें स्त्री का अनुगामी होय निर अर
 दीन जया ॥ ३ ॥ अर मरीर ते ते रे ॥ हा ए क ये न न आय ॥ ४ ॥ सो हे अर सं ॥ अहे ह ते ने हसति ॥ अप दे स्त्री प्रसं ॥ ५ ॥
 अर नि ॥ विनिम ते ॥ ६ ॥ ति म ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

वेसरीरधरिसंभारीजीवव्रमणकरैहे मनुकअरतिर्येचहोयतवओदारिकसरीरधारेदेवअरनारकी
 होयतवविकियकधारे अरतिजसकामाणकेअनावतेशरीरनधरेतवमुक्तहोईसरीरकाधरनसोह ?
 संभारतातेसरीरकासंवंधसाजहीहेहुईदेकअनकरिकहा ॥ १०३ ॥ शरीरकेधारकसंभारीअरसरी
 रीसिद्धिनातेसरीरसुंममत्वतजनाहे ॥ आगेकहेहेइहजीवतेशरीरकाउपगारकरैहे अरसरीरया
 सुंप्रतिकूलहै तातेसरीरकाममत्वतजना ॥ नयत्सर्वोच्चविशायेशरीरमपिपुअता सोप्यात्मयेमन
 स्वरूपोदधरित्रिधासुतत ॥ १०४ ॥ सर्वअव्यक्तिकाभूजोसरीरताऊकं आत्मापुअपदकं धातक
 रैहे अरसरीरआत्माकुंवांजादिअकेअत्मकरिअस्पृशकरैहे तातेताकेदुराधारकुंधिक्कारहोउ
 आत्मातेशामलीनसरीरसुंउपगारकरैहे सुवियरकेपेणतेदेवमनुकदिककरिसेवनीककरैहे
 अरसरीरअसुनकुंनयजायजीवकुंअयोनिमेंमारिआसाकरैहे जोकेउनीटेमोहीतातेसरीरकुंधिका
 र ॥ १०५ ॥ आत्मातेशरीरकंसंयमादिसाधनकरिअप्यकरैहे अरसरीरअप्यानदसविधैजीवकं
 नरकनिगोदतिर्यगागततथाकुमानुषादिकजन्मकरिअस्पृशकरैहे सोअचरिजनाहीहोयसो
 नजा+

जलीहीमरेबुराहोयसोबुरीहीकरै ॥ आगेकहेहेसंभारीजीवशरीरदितीनजागकुंधरेहेसोछोकहोयमेंकहे
 है ॥ १०६ ॥ रसादिशब्दो जागः स्यादज्ञानादृसादिरचितः ज्ञानादयत्तुतीयस्तुसंसार्येवंअत्मकः जागअथमयंनि
 त्यमात्मानंबंधवर्त्तनं जागदयास्थयसुंयोजागतिमतत्त्ववित ॥ १०७ ॥ आदिकाजागतासमधानुमही
 मरीरहे ॥ १०८ ॥ तार्यावेदजापमात्राणादिअष्टकर्मकाजागहै अरतीसराजागकाविर्कनिजभाष्यकोहै यानां
 तिसंभारीजीवतीनजागकुंधरेहे तीनजागमईसंभारीजीवहै सोसरीरकाजागअरकर्मकाजागइनहोयन
 गनितेजीवकुंअधुआकरिवेकीविधिजानेसोतत्त्वपानीकाहिर दारीअरअरसरीरकेधूनकारणकर्मनिने
 जीवमिकुंअधुआकरिकानादिमिजभावधिबैरमेंमोईतत्त्वज्ञानीअरपरवस्तुधिबैरसहोयसोअज्ञानीहै
 आगेअप्यप्रमकरैहे होयअप्रमतेआत्माकाअधुआकरनीतयकेआचरनतेहोयसोअप्रमकरनाकविनता
 कामप्राधानकरैहे ॥ १०९ ॥ करोतुमचिरंधोरंतयः केशासहोजवान् चितसाधानकषायारीअजयेषतदहता ॥ ११० ॥
 अर्थ ॥ जोतं केशासहिवेसंसमर्थहैचिरकालदुहरतयनकरैतोमनहीकरिजीतेजाहिअैसेकाधमानमा
 अलाभधैरीतिनकुंतोमीतिअरनजीतेतोवर्षाअज्ञानभाहै कषायजीतिबमेंनोकायकेशनाहीमनहीकी

[illegible]

रणनिष्पत्तिरित्यादि अरु फल कहि एक कार्य मन की शानताति न कृत जिकरियर लोक की सिद्धि वांछे है अरु
 आयही अयने मन उपगसाधन करि अयनी प्रसाद करे है कथायनिके वसि है अरु जाने है हम शानति चिन्ह है
 सोइ इच्छा विरुद्ध है कोधादिक में अरु शानतादि गुण नियर स्पर्धे है जैसे विना व अरु मसे के अनादिका
 जका परस्पर वर्धे तति वारं वार धिक्कार होउ कलिकाल के पुनाव कं जाके पुनाव करि सुबुद्धि ऊइह लोक
 प्लोक का फलता के विना स करि वेतें अत्यंत विगार गए हैं नारायण जे कथायत जे दिनु शान चित्त कहावे
 है ते बुद्धाही अयनी प्रसाद करे है कथायनिके अरु शानता के परस्पर विरोध है जे बुद्धि वान कहाय आत्म
 क आशान करे है तेवे उजम विगारें हैं अत्यंत विगारें हैं आगे पुर शिष्य सिष्या करे है जो तं महातप अरु
 ज्ञान करि संयुक्त हैं अरु कथायनिका जीवन हारे तो अहंकार काले सजन करि अहंकार कं मूल ते उपारिहा
 रि उद्यत स्तुतय स्पष्ट अधिक मजि नवं त्वा मग कत्कथायाः प्रा नू दो धो ध्या धा धा जमि व ज न धो किं तु दु हं
 रुम मे विरुद्धे पि ध्या है तलिल मि व ना मि दे शो य व र्ण मत्स र्ग ते स तु जे न व ति य र व सा दु र्ज यं त कु ही ही
 ३११ अथ तं तय विधे उग्र मी न या है अरु तो तं कथायनि अयमान कूं धा स न ए है अरु समुद्र विधे जल अगा

धनोयते तेनेरेणानभगाधनयहे परंतु एक तो हि शिष्या कहै है यह बात और निकरि अगम्य है या दो स
 कं विवेचने सजे जेसे जल के प्रवाह विषे तुल्य भूमि विस्थान क विषे जल नि सदेह आं भ होय सो गृह है लोक
 निके जां निवेमें मां हि तेसे अपनी वरावर के विषे कर्म निके वसते अदेष सका भव होय है जाहि सा सु वि
 धिमात्सर्य कहै है सो अति दुर्जय है जाहि तुं सजि ना वाय जो तं सय सी है मं व कषायी है गंभीर चित्त है ते मा
 त्सर कहि अदेष सका जायत जि अपन विस्वरी तथा अधिक विषे अदेष मना व मति करै ब्रह्म मदीय
 हैं तं सर्व धात जि ॥ ७ ॥ आगे को उग्र मन करै है इन क माय नि हो ते स ते जीव का कह अकला एता ॥ ८ ॥ उ न
 र कहै है जहां काम को धादिक का उद्य होई सो ही जीव का अकला एय द कथन दृष्टांत दृष्ट करै है अथ मा
 ही को ध के उद्य विषे अकला एा दिधा वै है ॥ ९ ॥ चित्त स्थ मय न व धु म हरेण जाना कुधा वहि कि मयि द ध
 म न ग वु धा ॥ १० ॥ धोरा म वाय सहि तेन कता म व स्या ॥ ११ ॥ को धो द्या द्रवति क स न कार्यं हंति ॥ १२ ॥ अथ ॥ देयो काम
 तो चित्त विषे कृता वा ह न कृता ॥ १३ ॥ अर का ह न को ध करि काम जां नि को उ वा स प दार्थ न सम कीया सो काम न
 म्वा काम के योग ते म राग अवस्था कं प्राप्त न या काम की करी धोर वेद नां स ही सो को ध के उद्य ते को न के का

डाक्टर भाऊदाजी देशपांडे
 DR. BHAU DAJI

१०५

र्थ की कं नि न होय ॥ १४ ॥ को ध के उद्य ते सर्व कार्य कामा स होय क उ में को उ वा स प दार्थ काम जां नि न सम क
 या सो काम न म्वा वह को धि काम करि पीडित मया ॥ १५ ॥ आगे मान के उद्य विषे अकला एा दिधा वै है ॥ १६ ॥ कं वि
 धाय निज द ह वा द मं धा ॥ १७ ॥ अद्या द्रु ज त त मु र्ति वि व स ते न मु चेत् ॥ १८ ॥ जे संत माय कि व य द्रु व ली वि स य मानो
 म न म यि ह नि म द गी क रो नि ॥ १९ ॥ देयो का द्रु व ली अ प री धि हि री सु ज प रि आ य नि धा जो व क ता हि त जि
 क मि नि न दि द्या वा व री त म्भ वि सं सार ते मु न म य ॥ २० ॥ परंतु कैय क दि न क उ य क सं ज ल म नां न का उ द य र द्या त
 करि वा य प र्यंत के व न न उ य म न क र क र के स की धा व न कं धा व नि नां मु क न न ए ॥ २१ ॥ यह तु ब म्भ क म न म
 हा मो ही न नि करि है ना ते मां म त्त ज नै ॥ २२ ॥ म न म्भ क र मं य रा ये व द र भ ल ह री प्र क ा र्ग करि सो य स व क
 रानं गृह ॥ २३ ॥ अर अ म नां तो नि य त्त क रि सि द्ध मां ज है ॥ २४ ॥ जे लो क का म म रा यो व के मां ज कहै क ॥ २५ ॥ मान
 ही मो द न क वि व न करि है ॥ २६ ॥ अथ वि धा र म्भ प र्थी व स वां न वि वे की स र स ज न त मां न के उ द य करि व र्म
 प र्यं न के अ व न म्भ जे न ए मां त य नि धा र्ग त व के व म्भ य मा ॥ २७ ॥ आगे कहै है कि जे वि वे की गु ण नि की म हं
 त ता जा नै है ति न कुं उ ल मा प द्र मां न क र नां उ वि न तां ही ॥ २८ ॥ हां शो क दो य में वि ध वै है ॥ २९ ॥ स मं वा चि म तो ॥

श्रुतं कृद्विद्यया सोऽयं भुजे विक्रमे लक्ष्मीर्दानमनन्तमर्थिनिचये प्राप्ता गतो निवृत्ते येषां प्रागजनीहते पिनिरयं
 काराश्रुते गोचरा श्रितुं संप्रति लेखतो पितृगुणास्तेषां तथाप्युद्धताः ॥ १७ ॥ वसन्ति भुवि समस्तं सायि संधारिताः ।
 मे रुद्रे मुपनिविष्टाः साचते वायस्य तदपि किल परे षां ज्ञानकोणे निलीनं कथं कथं मिह सोऽगर्वमात्म
 धिकेषु ॥ १८ ॥ यालोकविषये पूर्वमहमहत्पुरुषमयं जिनके वचनविषये मया अस्मात्स्वविषये बुद्धिद्वय
 विषये अस्मिन् विषये सर्वविषयान्तरात्तापस्यक्रमः अपलक्ष्यकाजच ॥ १९ ॥ न के समूह विषये प्रणामः ।
 एतेन अनिरवृत्तिमार्गविषये मया न जिनमोऽपुनरोते न एतौ न अहंकाररहित आत्मविषये ग्राह्यं अथवा
 एतां अचिरजदे अथवा कालिकालविषये उक्तमात्रं गुणानां ही तो नतिनके अतिउद्धतता हे मया गर्वमेव
 हे ॥ २० ॥ पूर्वमनुर्थकालविषये मया सवादी मुनिरव्यावां न दत्तार महाचिरक ज एतो गर्वकाले मया
 नया अथवा अचिरमात्रं गुणानां ही तथापि नुद्धतं गर्ववर्तते इह वचनमथवा अचिरजदे ॥ २१ ॥ गर्वकरं नानु
 हे गर्वतो तव कौं जव आद्यते को नु अधिक न होई सो एक सं एक अधिक है अथवा विषया एष्टी विषये सम
 सवसे है सवका आधार एष्टी है सो त्रैलोक्य की नुं मि घनो वधि घन वात इ न ती न वात वलानि के आधार है

१०६

सा

एष्टी वात वलय आकास के ऊपर में है सो अनंत आकास के वली के पांम के अंश में जीन नया है एक सं एक अ
 धिक है तते जगत विषये आपतें वहुत नि कुं अधिक जनि को न गर्व करे विवेकी कदापि गर्वन करे ॥ २२ ॥ एक
 ते एक अधिक है सव एष्टी के आधार एष्टी यवन के आधार वात वलानि के ते वात वलय आकास के आधार सो अ
 कास समस्त ज्ञान में ग्राह्य है अस्सी जीवनि में विचुत्ति करि एक सं एक अधिक है जीवत त्वनि करि सव समां न है
 ॥ २३ ॥ अंगी मार्यार के योग ते जीवका अकला एष्टी है सो तीन सो कमें दिषावै है ॥ २४ ॥ मारी चयं कनक मया
 मिलितं हंतो स्वस्वामो क्राव्याय लघुरासीत्पुनः स कलः कलोन कृपट बहु बंधो नितरामपि बन्ध ॥ २५ ॥
 संत द्विषमि वदि डगधमहतः ॥ २६ ॥ अंगं प्रापाम ह्युपार्त्ता निष्पाद्य नमो मयान् यस्मिन् लीजान लरुंते को
 धादि विषमाहयः ॥ २७ ॥ प्रबन्धाय मम कोपि न वै तिधीमान् अंगं गुणस्य मम नोपि हे मेति संस्था कामं गिल न ध
 वज्जदी धति धात हां पुरो षवो धिन विधुं स विधुं दुर्दे ॥ २८ ॥ अथवा क ॥ २९ ॥ मम माटे गुण नि कुं हत है जे संघ
 में ह्यं कं कनिका मावर्ज विषयित करे है देवो मारी चो रावण का मंत्रीता का ज सकपट करि कनक मुण हो ने ते म
 लिन नया अस्मिन् अथवा अथवा अति निमं जय ज सोतिन के मुमते इह वचन नि कसा जो अस्मिन् माहेत न जनि

एमरनजानिनाकुंजर सोयाभाया चारके वचन करि जगुधिष्ठिर मित्र निमें लघु नये ताते अलक्षुभाया चारव
 कतगुणानि कुं हने है नावाभाया चारमहा दुसधार है मारीचमंजी लघुता कुं धातनया राजा युधिष्ठिर मारिखे
 अश्वत्थामाहत यावचन कहवे करि लजा कुं धातनये ॥ अहो नयजीवहो प्राया रूपी उं देवामे ते मरो इह पा
 अमिथ्या जावरूपी महा अंधकार मई है जाविषे लुखिरहे है कोधादि महा दुख मर्म जहां धाजा होई तहां अंधकार
 कुं होई अरतामें मर्मर है ॥ नावाभाया यह माया रूप का उ अति मोह है जमें मिथ्या रूप अंधारा है जमें कोधादि
 मर्मर है ॥ हे जीवतं ऐसा तो गुप्त पामेरा के उन जने गा बुद्धि वान न जानें तो और कैसे जाने अरमेरे मो
 दे गुणितिका इह पाय के से आछावन करेगा ऐसी तुं कदादि मति जाने धागट देखि चंद्र मो अपनी उलून करि
 रानि करि जगत के आछावन करेगा ऐसी तुं कदा ताव कुं निवार है सो ऐसे चंद्रमा कुं कुं धल न जोरा कुं सो आ
 छादि मकरे है या वान सव ही जाने है ऐसा को न जो या वान न जाने ॥ आगे कहै यालो न कथा यथ की जीविका
 अकाज दिखि है ॥ वन चर मया दवन देवा लता कुं लका लधिः कि लज डत वा जो लो वान बुजे विचले स्थितः व
 तु सच मर स्तम प्रणे र पि प्रविशे जितः पराति वृषा याये तो वं विधादि विपनयः ॥ २५ ॥ दिखे लोक विषे पसिद है

१०७

वन चर जो जीव अथवा व्याघ्रता के नय थकी मुरहाय जागी सो देखे यो गते तस्की रं विवेलते उलजी सो मरुता क
 मित्र लनि सार सुं वता के लो न से मरी होई र ही सो वन चर में धाग निमें र हित करी ता ने जे व छातुर है तिन के वड
 जता करि यधकार विपनि होय है ॥ आगे कहै है अक साप की कर मरुती जो कथायति न कुं जीति करि अ
 अहे संसार जिन के ते ऐसी साम ग्री कुं धात है यो सो होय जो कनि में दिखि है ॥ विषय विरति संग साग
 दया विनिग्रः समय मरुता स्तवा न सस्त पधार गो वनः निधमिति मनो वृत्ति नीति जने बुद्ध्या लुता नवति
 वृत्तिन संसारो ह्ये स्तेनिक दे मनि ॥ य प्रनियम नितां सः शांत कथांतरात्मा परा मलम माधिः सर्व सत्वा
 दुःखं विनिहित हित मी सारी के अजा जं सपूजं दहति निहस निने निधि ता आत्म शारः ॥ २६ ॥ विषय सं
 विरकता अरपरिग्रह का लता कथायति कनि ग्रह सम क हिसा संताराणादिक का त्याग मर कहिए मन ईंधी
 नि कानि रोध म क हिए या वन जीव हि मादि कथायति का त्याग तिनिक धारण तव का अना सत पधार का उ
 यम मन की वृत्ति कनि रोध जिन रा ज विषे न कि जीव नि की दया स मयी विवेकी जीवनि के संसार समुद्र का तट
 निकट आय लेय है ॥ यम निग्रह दिखे मोह के मूल है यम कहिए अचर्य स अयोग किय का त्याग अरी

नेयमकहिणघरीपलपट्टरदिमयकमासवातुर्मासघर्षादिककासंवरसोयमनेमादिविषेसाधुतसरहे महासां
 तचिचदेहादिकबाह्यवस्तुनितेनिरवर्तिनबाहेभावजिनका अरसमाधिकहिणनिर्विकमदसाकृशासन
 याहेसर्वजीवमात्रविषेहेदुशजितकीविहतकहिणकहिणसास्त्रोक्तअमहे योगअहारजिनिके अरध
 रिकरीहेनिंजनिमयकीयाहे अध्यात्मकासारआत्मस्वभावजिननेनिरंतरआत्मअनुभवविषेमगत
 हे आगेकहेनेअसेपुणनिकरिमंजितहेमुनिपततेनिष्पश्येतीमुक्तिकेजाजनहोहि समधिगत
 समस्तासर्वसाधनद्वारास्वहितनिहतविताः श्रान्तसर्वप्रचाराः स्वयम्फलजयाः सर्वसंकममुक्ताः कथ
 मितनविमुक्तेर्ताजनेतेनमुक्ताः यमीजांतिजामाहेसमस्तजिवेयोग्यअरग्रहणकरिवेयोग्यवस्तु
 भिकास्वरूपजिने अरहिंसाआदिसवयापनितेधरिहे अरआत्मकसाणकेकारणसमकदर्शनसमग्रज्ञा
 नसामकचारित्रतिनविषेआरुतहेचितजिनका अनिरवृत्तियोग्यहे सर्वइंद्रियनिकेविषयजिनिकेअ
 रस्वप्नऔसारोवेहेजिनमेंअपनांकसांनअरपरजीवनिकाकसांनअरसर्वसंकल्पविकल्पनितेरहितहे
 तेमहापुरुषसवधपंचनितेरहितकोनमुक्तिकेजाजनहोहि निसंदेहसिवसुखकेजाजनहोहि जेसर्व

२९८

प्रपंचनितेरहितहोहिनैमुक्तिहोहि मुक्तिकापूर्वएकानिः प्रपंचतांदीहे जेदेखेयादेयकंजांनि सवत्यागजोग्य
 वस्तुनिकंतजिआत्मकबाणकेकारणजेरक्तवपतिनकुंष्टिकरिचिषयनितेदिरंक्तिहोयहे तेहीचवसागर
 जेसारहोहि आगेकहेहेमुक्तिद्वाराचहोहेहेसुं अरमुक्तिके अर्थरतनत्रय कारणक
 काहेतोपमनत्रयकेजांतेनयकरनां अस्तगतकुंनिर्नैविषयसक्तवेविआपविषयसक्तनहेमां
 वामनविषयप्रमोदितवतामातापियेवंपरस्तेवांजोगुणदोषसुमममसां किंतसुमर्त्यनिनेतअंनव
 तेवमसुनुवनप्रयोगितरअत्रयं अमेतेद्विषयकसाअपरितस्तंतसुखजोगृहि विषयरूपवस्तुकहि
 एजाताकेकसजावकुंघासतरहे जेअविवेकीजोगकेपुणअस्वोयकेविचपतैसअहेचितनिकअरजिन
 काआसांभीपराधीनहे तेतोसम्यक्सांनरूपधनकरिरहितचरदीहे सोइमकाकहाजायअरतेरेतीननवन
 विषेउद्योतकरएहागरअत्रयधनहे तातेतोहिअथकरनां इंद्रीवोरतेरेआसियासिधौगिरदफिरहे तिनकी
 रनमुक्तवेसोयतनकरितेरीआनविजतिवेनग्रहे सोकरिसदाअग्रतद्वज जेसेंसंसारविषेजेनिर्द्वन
 पुरणहेतेतोजाग्रतरहोवाममकरे तिनकंदोरनितेकहूअग्रजांही अरनिककाकहाले अरआदिधनक

विरुणहें तिनकुं चोरनिने मरा सावधान नरहना सावधान नरहें तो चोरनिने मुमावे तेसे अविवेकी जीवतौर नउ
 यरुप धन तैर हितहें तिनकुं दंडियरुप चोरनिकानयनाहें ताते प्रमादी जण ये छविषयति कसेवेहें अर
 तैर नउ यरुप धन काधारीहें तासे दंडियरुप चोरनिने सावधान नरह जो प्रमादी होय तातो अपना निज धन मु
 मावेना आगे कहें दे जीविय विषय ग्राहें मोहने सो कर्म मज पीबी आदि संयमो यकरा विषे कं अ
 नुपाम सति कसो अरु विषय वेहें रामे सुवस्तु वनिता विपुवीत मोह मुहो छया किमिति संयम साधनेषु धीमा
 न किमामद नया तरि हस मुक्ति पीतोष धं जुज विजातु विदुषा पीर देवु दिवा मम तोरु सी अ
 दिवस्तु निविमैग याहे मोह तेर आसात संयम के साधने पीबी आदि निमि विषे वृथा मोह कुं करे जे
 से को उभोग के मय ते नो मम कुं त जिमा आते अधिक सोय धने करि कल मजी एकरे कदाचि न करे
 जे से को उचु दिवा न मजी एकरे मय ते नो मम कुं त जिपाच क सोय धं कुमात्र ते अधिक न ले ते से
 गंती कनक काम नी आदि परिपद कुं त जिकरि संयम के साधने के मम हल यि लोकादिक तिन हं वि
 धे मम तन करे मम त्वहे सो बंधका कारणहें अर नो कदाचि मम तन करे तो दीत राग जाव कुं न पावे म

१०५

रासी होय कनिमद नरक अनां का करे आगे कहें दे सर्व यथा र्थ नि विमै डि मोह हें मुनि सोय धकार अम
 कुं कतार्थ मानेहें लयः श्रुति सति कं धुति मदी र्थ संयम कसो फल मिवा लये ममुप नीय ते स्वतानि क
 धी वल इति चित्तं कसो चोर बाधा विनि कसो विपु नो यतः सुकत कसो धीर धी जे से कि साय धं उ विमै
 धी जे तो अ करि कला की बुद्धि करेहें तो वास वि कसो अथा करि रहित होई अपने घर में अमने करि आवे नउ आ
 य कुं कतार्थ माने ते से मध नम अरु कसो इति करि दंडि आधिक चोर तिन की बाधा करि रहित आत्म स
 कस निमै मय होय तव आप कुं कतार्थ माने अरु कि साय धं अपने कर नय की कतार्थ माने तव सी जे नउ
 निरुधध अनघर में आय पौरे अर साधु धीर बुद्धि अपने संयम की कतार्थ माने तव सी जे नउ अरु कि साय
 रवी बाधार हित मय मुत रुम दी ज का फल जान हए का आप विमै नय कर तव मुत का फल आप ह
 नय के बाध दंडि र्थ दि क चोर ते कुं न नउ साताय अर अपने चरु य विमै नय हो तव यती आप कुं कतार्थ माने
 जे से कि सोय अन कपरि यम करि मेती कर्त हें अर वि विमै पणे ता ज अपने घर में अवे नउ आप कुं कतार्थ जा
 ने आगे कहें दे कि कस कुं कतार्थ माने जे सा विचारहें सो मुत जान कनि मेरे सप्त अर्थ आप नि कुं न हें ताते जे मरु

पशुभेदकसुविधकरिवेसमर्थमांहीनेमाजा निआशासपशुभेनिरुद्धनाउचितमांही। शहरीगुरुशिष्युं
 शिष्टादेहं। दृष्टार्थमनमेकिमयमितिहामावलेयाहं। नोपेकस्वजात्रयेकउमरंनिशेयमासादिभंय
 र्पानेतिधिमप्यगाभमनिनंवावधतेवाडवः। कीर्तिभूतविपदकस्यजगतिप्रयेराशांतिभूत। १०५॥ १०६॥ १०७॥ १०८॥ १०९॥ ११०॥
 शासपशुभेरेमांनवंतकेकविधनकारीमांही। अजांतिआंनकेगर्वतेआशासपशुभंअमममिममां
 जगत्तुकाएकअदितीयवैरीमदुजयकारीआशासपशुभेयाहरिहीकरमांताकाहं। सकंहेहै। देवोअ
 माधंमजजाविषेआजासमुद्रताहि। अरवामजवाधीउपजाविहेसोयेहै। तामेयाजगतमेजादिशुभेवरहे
 ताहिबहुलताकरिआमिकहांतेहोयजिमकैरंधमाप्रहुशुभमांही। मेईनिवाधजांवहु। सोअमातोप्रवल।
 मनुहे। शकेहोतेआंतहाकहांतेहोई। अथायजेसेसमुद्रतेआमाधे। अरवउदमानअमिस्तोकहै। सोउता
 केजलकुंमोयेहै। मोरंधमाप्रहुमनुकेअजावविननिरावाधतामांही। मोप्रवलशुभेहोतेनिवाधताकं
 तेहोयजेसेआसाकेअजावविननिरावाधताकहांतेहोई। अरकवाचिसंजानेगाजोमेरेसंयमादिगुणप्रव
 लहे। आसाकहाकरेगा। सोआसानविचारनां। समुद्रअतिगंभीरप्रातोउत्तकंरंधमाप्रहुउदवानजताने

११०

सोसातोआसातोतीवामिहै। संयमरुयसमुद्रकेमोसेंही। सोसें। तातेआसाकासर्वथानासहोयसोयनकर।
 नां॥ आगेकहैनातंआशासपशुभेकोतिरमूलकीयाचोहैहैसर्वथामोहकापरितागकरि॥ १११॥ ११२॥ ११३॥ ११४॥ ११५॥
 छदयोज्ञानवारिआविनेमिमहाधर्मदीयाइवायादयिताकजलमलिनस्यकार्यस्य॥ ११६॥ ११७॥ ११८॥ ११९॥ १२०॥
 हयजाकामोपुनरुपयपिशास्त्रकेज्ञानकरितथाशुभआचरणकरिमंजितहै। तोमुघसंसायोग्यमांही। जेसेंदी
 यस्नेहकरिहोतेसताकरियुक्तहै। सोकाजलकुंउपजावेहै। तेसेंस्नेहकरिहोरागभावताकरिसहितहै। सोमलि
 नकार्यजेपायस्यअमुनकर्मजिनकाउपजावनहाराहै। असाजांनिजगतसंस्नेहतजनां॥ नावायजेसेतेन
 केसंबंधकरियुक्तदीयकप्रकासतोकरेहै। परंतुकजलरूपकलंककुंतिपजावेहै। तेसेंतेराशुभाचरणरुप
 दीयागानावरूपतेलकरियुक्तअथायावरूपकलंककुंउपजावेहै। तातेदेहादिकसंनेहमजि॥ जेसेंतेला
 यमअगनिसत्प्रकासरूपपरहैहै। अरकजलरुपकलंककुंनांही। उपजावेहै। तेसेंतेवीतरागनावरूपपरहुज
 करिकर्मकलंकनउपजे॥ १२१॥ १२२॥ १२३॥ १२४॥ १२५॥ १२६॥ १२७॥ १२८॥ १२९॥ १३०॥
 रिक्तेशकोनोर्गहै॥ १३१॥ १३२॥ १३३॥ १३४॥ १३५॥ १३६॥ १३७॥ १३८॥ १३९॥ १४०॥

५४॥ आप्नी तं विषयनिकी सचिनें असचिमें आवेहे अरवजुनि उनही ने सचि करेहे ओमें करतें तीसरा
 पत्र जो जागत ते उदासीनता सचि रापता दिखये विगारि दुषीहे ओसा जो निजो तं कलायका अर्थी हे तो
 रागधेय को तजि अरंवे राप कं न जिजावत स्थिरादिक विषयनिकं प्रथमतो सचि करि नो गवेहे अरपी
 वेंतन का लही असचि होय जाय हे वज्ररि उनही सुं सचि करेहे ओमें करतें वां वासय आधितें सदा आहु
 लहरि हेहे सचि असचि ते रहित जो वीतराग नावता हिन यावता संता सरा मेद विन नहे ताते रागधेय कुंता
 जिमम ताव कुं न जिमम क विमुषी होय ॥ ३॥ आगे कहेहे अने क दुसन करित पताय मांन जो तं सो मो क मु
 धके अजाव तें लवले सभाउ जो विषय सुषता करि आय कुं सुधी मानें हे सो वृथा हे ॥ ताकड मानित सात्म
 अ बीर सुष सी करे निर्वी सि निर्वृतां जो धो याव त्वं मर्विमम ऊसि ॥ ५॥ संलोह के धिं की नां ई दुष रूप
 अस्त्रि करित पताय मांन हे सो जो लग मो क के सुष स पस मुद विषे म प्रम हो जहे तो लग ई नी करि यजे जे
 ले शमाउ विषय सुषतिम करि आय कुं धे धि न करेहे ॥ ॥ ॥ जे से लोह के गोले कं एणी जल में डबोई ए चव
 ही आताय तें रहित होय अर जो ले सभाउ जल तें झामि तो लायन मिटो वहन लही न सम हो जाय ते से जीव स

DR. BHADU DAJI
 १११

५५॥ आप्नी तं विषयनिकी सचिनें असचिमें आवेहे अरवजुनि उनही ने सचि करेहे ओमें करतें तीसरा
 पत्र जो जागत ते उदासीनता सचि रापता दिखये विगारि दुषीहे ओसा जो निजो तं कलायका अर्थी हे तो
 रागधेय को तजि अरंवे राप कं न जिजावत स्थिरादिक विषयनिकं प्रथमतो सचि करि नो गवेहे अरपी
 वेंतन का लही असचि होय जाय हे वज्ररि उनही सुं सचि करेहे ओमें करतें वां वासय आधितें सदा आहु
 लहरि हेहे सचि असचि ते रहित जो वीतराग नावता हिन यावता संता सरा मेद विन नहे ताते रागधेय कुंता
 जिमम ताव कुं न जिमम क विमुषी होय ॥ ३॥ आगे कहेहे अने क दुसन करित पताय मांन जो तं सो मो क मु
 धके अजाव तें लवले सभाउ जो विषय सुषता करि आय कुं सुधी मानें हे सो वृथा हे ॥ ताकड मानित सात्म
 अ बीर सुष सी करे निर्वी सि निर्वृतां जो धो याव त्वं मर्विमम ऊसि ॥ ५॥ संलोह के धिं की नां ई दुष रूप
 अस्त्रि करित पताय मांन हे सो जो लग मो क के सुष स पस मुद विषे म प्रम हो जहे तो लग ई नी करि यजे जे
 ले शमाउ विषय सुषतिम करि आय कुं धे धि न करेहे ॥ ॥ ॥ जे से लोह के गोले कं एणी जल में डबोई ए चव
 ही आताय तें रहित होय अर जो ले सभाउ जल तें झामि तो लायन मिटो वहन लही न सम हो जाय ते से जीव स

वर्तिका अपेक्षा मूल जगत जोगि विद्ये परदे के सादे जगत अधेत कहिए एक रूप है विषय कथायनिकी प्रव
 र्ति सोय वर्तिका कहिए अरति निवर्तिका निवर्तिका निवर्तिका कहिए मोहन दर्शनिकी अपेक्षा अपेक्षा पर पक्षर नो पर
 पक्षर निवर्तिका कहिए तजि मोक्ष के अजित लब्धि निवर्तिका कहिए अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए
 अनिवार्य है ॥ १ ॥ अजित लब्धि निवर्तिका कहिए अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 नायक विद्या मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 गोकर्ण है निवर्तिका अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 सिद्ध तरे अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 को अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 पक्षर निवर्तिका कहिए अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 वर्तिका कहिए अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 वर्तिका कहिए अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥

११२

वजां वधते पयो जन नारी ॥ तेसे जो जग प्रवर्तित है तो जगत्ता के निवर्तित के अर्थ निवर्तिका अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए
 प्रवर्तिका मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 तिका मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 राग विषय प्रवृत्तिः स्यात् निवृत्तिस्तन्निषेधनं तौ च वा
 दार्थसंबन्धो तस्मात्तत्र परित्यजेत् ॥ ३ ॥ राग अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 एवो उवाच पक्षर निवर्तिका कहिए अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 प्रवर्तिका मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 तें पर वस्तु के अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 मो निज मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 जामे मोया प्रकार जावना जावना ॥ ४ ॥ जावना मित्र वाचने अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 जावना वना ॥ ५ ॥ मे संसार मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥
 जादि जावना तिन के जावना ॥ ६ ॥ अपेक्षा मूल पर पक्षर निवर्तिका कहिए अनिवार्य है ॥ १ ॥

मिथ्यादर्शनादिनाशनाशकप्रमाणकारणसर्वसहाजार्हसोऽभवन्नावहुः अरभ्यकद्वरसनादिन
वनामोक्षकाकारणकदेनार्हसोऽनावहुः अग्रेकहेतुकोनवस्तुहितकारीमोहीदिषावेहे अनुसु
नेपुण्यपणेसुबहु खेचतुयं हितमाद्यमनुष्ठेयं शेषत्रयमथहितं अनुकहितानुत्तमवचनक
रणां ह्युपमनसं प्रमद्वकाया एव संसाधोपदे अरभ्यनुकवचननिरदे चित्तप्रवृत्तकृपाया लनेहायो
पदे इतदेवतिकरिपुण्यपणोयहे अग्रतेपुण्यअसुनतेयापसुमतेसुमसायतेह्य एसुनअसुनपुण्य
पणसुमहवत्तनपतिनमं अरिक्तेतीनसुनपुममुषाहितकारीमोह्यादरते अरभ्यतेकेतीनअसुनपा
यह्यप्रहितकारी तेतजिवेयोपदे निश्चयतयकरिनिअरिहतेयाजीवकुंएकसुकोपयोगीउ
पादेयहे असुनअसुनतेउहीदेयहे तथापिबिबहारनयकरिविवाहिलो असुनतेसर्वथाहीतजिवे
योपदे जातेयदसर्वथामोक्षमार्गकावाते असुनोपयोग्यपिमोक्षकासाक्षातकारणानां परंमुप
रंययमोक्षकाकारणहे जातेकथंचित्तप्रकमधयमअवस्थाविषेउपादेयं अनुपरिणामनितेपुण्यका
बंधदोष अपुण्यतेतुगादिकासुमहोय अरभ्यसुनपरिणामनितेपायकाबंधोपायतेमरकनिगोहादि

दुषं होय ताते का ऊ प्रकार ऊ असु नो पयोग न होय नांही ॥ ॥ आगे असु नादिति न के साग का अनुक्रम
दिया है ॥ तत्रा प्यादंत उपायं परिष्कारं ये बो मरुः स्वतः स्वयं शुभं च शुद्धे सतां तेषां मोति परमं पदं ॥
॥ भावार्थ ॥ प्रथमतो असु न महित बूटे ताके अनाव करि पाप ऊ दुष बूटे व ऊ रि सुद्धो पयोग के अनाव करि शु
न ऊ बूटे असु न के बूटे ते पुण अर सुर्गादिक सुख ऊ न होई कारण के अनाव ते कार्य रुका अनाव होय
जव सु न ऊ बूटा तव परम वीतराग नावरुप शुद्धो पयोग विधैति श्रिकरि परम पद रूपी है वह परम पद सु न
असु न हो नुनि ते रहित है दो नुनिके अंत विधै होय है ॥ भावार्थ ॥ आत्मा का उपयोग देय प्रकार है एक सुद्ध एक
असुद्ध असुद्ध के दोय नेव असु न तथा सु न सो असु न ते पाप अर पाप ते नर कबि दुष ताते असु न तो सर्वथा
न जिव ही योग व ऊ रि शुभ ते पुम अर पुम ते स्वर्गादिक सुख सो असु न के निवार दे अर्थ शुभ का उपाय होय
है वी ते सुद्धो पयोग न असु न बूटे है शुद्धो पयोग के स साद करि इह जीव मुक्त हो है ॥ ॥ आगे आवाक प्रश्न
कर है आत्मा होय तो परम पद की प्राप्ति होई आत्मा ही नांही तो परम पद के से होई अर आत्मा ऊं गनी दिम
रण पर्यंत कहे न देखा नांही वस्तु होय तो दृष्टि परे इह तो चार्थ क कहै अर शांथ कहै तान बा आत्मा तो स

शमुक्तहीहै यहलीमअनुकूलतजि वहुतिसुनकूलतजिपरमयवर्षावे प्रहृतोअयुक्त तवशीपुरुहोउनि कामम
 धानकरैहै ॥ अत्मात्मासमिहाविबंधमयतः तदं धनमाप्रयेतेकोधदिकता यमादजनिता कोधव
 यस्तेवतान् मिथ्यात्वेपरिनातमएवममनः कालाविलडौ कवित समकबतदरुताकडुमनायोगैकमा
 नुयने ॥ अयमो आत्माज्ञातिस्मरणकरि आयकैहै नवहृषियैहै अरनूतदिकअपनेप
 वेनवकहै सोजीवमिकै हवेनवकेसीतिअवेहै तातेआत्माहै सोअनादिकाकर्ममिकरिवंधाहै नेक
 मबंधआपबनिकरिहै अरआपवकोधदिकप्रमादजनितहै अमप्रमाविहीसदिकप्रवृत्तिनितेहै अर
 अपवृत्तहै सोमिषातकरि उपविनकरिहै दुष्टहै सोआत्माभिषातहोनादिकरिमविनहै अरकाउमप्रिषा
 यकाऊएकमनुष्यनवविधैसमस्तबुतीनवेकमिः कयायनामनिकेयोअकरिअवुकमैभुनहोइहै ॥ अय
 चार्वाकतौअसेकहैहै सोआत्माहैहीनाही सोआत्मानहोयतोअैसासेवेर कोनकैहोई जोआत्माहोई अर
 आत्मानहोई तोअंतरादिकअैसेअैहै जेमेंअजानांअ अयआनेमवकीतथायनवकीअहमीवातकुं
 एऊयादिआवे अरजोआत्माहीनहोयतोपुनपापकाफलकोनजोगवै अरआत्मानहोयतोअहंकारमम

[illegible]

के जड़ संस्कृता की बुद्धि उभयै सोई संसार का कारण है अथवा प्रीति के प्रभाव से मुक्ति है असादि का वैदे ॥ माम
 मम मंमं मत्वा अंतो प्रांतो न वारं वे नामो ह म मे वा ह म मो मो ह म स्ति नः ॥ १५ ॥ अंतो के होतें आप के अम
 जे कायादि कति न रूप जामो अर कायादि क हें अयनां सय जामो याही विपरितीपां न करि न व स मुद विषे प्र
 प्यो अचरुं इह जनिमं पर्ययार्थ नोही मे जुहुं सो मे ही दुं पर म प वा र्थ पर ही है निमं मे नो ही मो मे ने नो ही ॥ १६ ॥
 अ जगत विषे सर्व ही पदार्थ अयने अयने स्वभाव के धारें हैं काहु इय का काहु इय से संबंध नोही सव नु दे जु
 वेहें अर मे अना वि का ध ते मी व्या ल साग दि क के योग ते वे हा दि क प दार्थ नि क अयने जो म ता न म सो वे तो मे रे
 त नि क ल मे न होय अर मे वृथा अयने अमे या ही जो संसार विषे जुपां अर अव स म ग ज्ञान के प्रभाव से मे य द जो
 नी जो य ह अ म य दार्थ मे नो ही यह अ उ मे वे त म मे रे अर इ न के क र सं व ध सो य ह र्वा पान क र ग ण का कारण
 है ॥ आगे कहें हैं कि प्रीति हरि नारायण निधय होई जा कायादि क हें अतु रा ग बुद्धि हरि विनो के ता के व ह वि
 लोक नां क र्म व ध के निम न है अर वैराग्य बुद्धि करि देये ता के क र्म व ध के विना स के अर्चि होय है ॥ १७ ॥ वं धो ज म
 नि ये न नि वि डं निः क रि ते व सु ना वा र्थ क र सं पु ण परि ण तः प्र ज्ञा त म नः सां प्र तं त त नि ध ना य सा ध न म नं दे रा ॥

१५

गणका ए स हो दुर्वो धं हि त द म दे व वि डु षां म श क ते कै य ने ॥ १८ ॥ य सं सार मे दारु प दार्थ नि वि षे ए क अ दि
 ती व है प्रीति जा की ता ते नि न जि म म न व व न का या दि क लु नि करि आगे अति गार क र्म नि का वं ध उ प मा अर
 अ व वै रा ग्य का ह र कं ड सा म यान वा प यार्थ नि के परि ज्ञान रूप बुद्धि परिणई त व ते ई स लु व ध के वि ना सि वे के
 अर्चि सा ध न स प न र्ता ते जो न कान करि मे स ग दि क प र ग थ सो अ ज्ञां म नु वा र्थ है अर वि वे की नि का अ
 र्थ प्रतीति प लां है सो नु वा र्थ है ॥ १९ ॥ अर इति क प र व लु नि अ ग्रा य बुद्धि करि देये ता त व र गी के ते ई व लु व ध क
 कारण जती अर ज वं ध रा म बुद्धि करि देये ता क र ग बुद्धि करि देये ता त व र गी के ते ई व लु व ध का कारण जती अ
 र ज वं ध रा म बुद्धि करि देये ता क र ग त व का या दि क मु क्ति के सा ध न स प न र्ता ते रा ग जा व का य त न क र मां ॥ २० ॥ आगे
 वं ध अ र्थ क नां स ज नां ति होई सोई अतु क म वि धा वि है ॥ २१ ॥ अधिकः कवि दार्थे कवि दीनः क्वचित्मम क
 वि दिते म य य सं व ध मो ह क मो प नः ॥ २२ ॥ कहु इ क मो क र्म नि का वं ध अधिक है अर नि ज र अ म ह अर
 कहु ई क वं ध अ ल है नि र्ज ग वि मे र्थ है अर कहु ई क वं ध त था नि र्ज ग म मां न है अर कहु ई क वं ध त नि र्ज ग ही
 है इह वं ध मे का वा व र न के अतु क म है ॥ २३ ॥ या जी व के मि थ्या ल गुण स्वां ते तो क र्म नि का वं ध व डु त र है

अरतिर्गतुं चोहे अरुचं प्रपुण्यनादि अगले पुण्यनादि विविधे वंध अरुचं निर्जगत्कृत है अरुच
 तुर्य पुण्यनादि विविधे अरुचं निर्जगत्कृत है अरुचं अरुचं ध्यानी निकै निर्जगत्कृत है वंधनोही इह वंध अरुच
 निर्जगत्की ध्यानी कही आगे जाके कर्म अर्थने कार्य करवे तेरु तन कर्म निकाय ही कार्य जो नवे
 शरीर नय जावे सो अरुच उपजाय न सके जाकी अरुच मानई सोई योगी यस्य पुमं च पापं च निफलं गज
 तस्य संयोगीति निर्वाणं न तस्य पुमं गच्छतः जाविरक्त के पुण्य अरुच पफल न उपजाव न ही वि
 रग पुम का फल सदा पाप का फल न सके सोवे कर्म जाके फल न ई सके सोई योगी जाके निर्वाण ही वंध अरुच
 प्राप्ति नोही पुन पाप ही संसार पुण्य के फल न सगा है जैसे फल का फल पुण्य है सो पुण्य धिर गय तो फ
 ल कहां ते वेय ते संजीवनी के चतुर्गति फल का कारण पुण्य अरुच कर्म निकाय ही सो महा पुनिके पुन पुन
 कर्म ही धिर गय तो मं गरी के मं होई ताते तिम के निर्वाण ही है आगे कहै है कि आ अरुचानि रोध जो सं
 धर सो प्रतिज्ञा के पा लवे ते रोध है महा मय सदा मय सं न तस्य पुण्य न सगा मर्यादा पा लवे जाम पुये रुष्ट
 माहति महा तप रूप तला वस मय पूर्वा नादि गुण कय न लक विपूर्णता की प्रतिज्ञा रूप पालिके वंधन

श्री गुरुभ्यो नमः
 Dr. BHAV DAVI

विविधे माव रुचं विविधे विविधे जो ध्यानी विविधे विविधे तो लगत जाव विविधे नर है अरुच निकै
 रुचं माव रुचं विविधे विविधे जाय अरुच नय मं जल नर है ते सं गुण रूप मरित न स्या तप रूप तन ध्यानी की प्र
 तिज्ञा रूप विविधे तो पुण्य अरुच नर है आगे कहै है कि महा पुनिके संयम रूप वर की तनिके एकार
 एहं बुद्धि कय संयुक्ति र्ति मति पाद संयति यति नय मयि प्रपुण्यं बुद्धि निर्विक्रिय ते गृह कति
 यति पद रूप वर के विषय महा रुचं पुण्य वन पुमि कय पुमि कय पाद का वंध अरुच तन मयि धिर ता
 ही ध्यानी अरुचि रूप मी का ही सो कय विविधे माव रुचं नय मयि विविधे तो महा रुचि रूप पादिक सार्थ य
 पद रूप वर कय विविधे अनायास विविधे के विविधे जीव जंत प्रादे अरुचि कय गायी अरुचि अरुचि ध्यानी ध्यानी
 वरुचि विविधे तो सार्थ विविधे जीव निवास को तन रुचं कले कनिर्विघ्न तान होय कय रुचं कय गायी जाय ते सं
 यति पद रूप के गुण रूप कय पद रूप की ति बुद्धि रूप मी वप नु वत नय मयि मयि विविधे तो गायी क
 रुचि तन सार्थ मी वा स कदे तो अने कय र्थ यति विविधे अने कय र्थ मयि कय आगे कहै है कि गायी विविधे मि
 जीति वे कुं उद्यमी जया है मुनि अरुच विविधे मयि कय वे प्रकयन करै तो गायी कय पुष्ट करै

949

[illegible]

तिन सते ॥ ५० ॥ १३ ॥ पूर्व जो जो आवरन की या पर दोष ना सै अपने गुन प्रगट करे सो सव योगी सर के उतरो न
 र उच्छ विवेक द शा के होतें आंग न चेष्टा ना सै ॥ नावा ॥ जो पराण आगन गो वनां अर अपने गुन प्रगट क
 रना एही अग्रान चेष्टा सो अग्रान नी नि कुं बुरी न ना सै ॥ अग्रान ने योगी न कुं बुरी ना सै ॥ आगे कहे है कि जे उत
 मज्ञान की पराणति सुरहित है अपन पक्ष कहर है तो उतिन के शरीर दिवि मे ममता बुद्धि होय है सा करिक
 हा होइ है सो कहै है ॥ ॥ अपि सुत व सा सा बाजी शिवा त रुणा मने न वति हिम नो ह ले या व ममत्व ज
 लाई ता इति क म धियः क हार ने अरं ति निरं सरं विर परि चिते दे म स्मि न ती व गति स्प हा ॥ ५१ ॥ ॥ नि
 अ य से ती महा त प स्मि नि हं के आ सा रु प वे लि की शि वा त रुणा त कं आ च रे जो लग म न रु प ज उ वि धे म न
 ता रु प ज ल आ ई ता है सो लग आ सा वे नि के से न के ॥ ॥ ओ सा जा नि वि वे की पुर व या अ य नी दे व वि धे हं अ सं त
 उदा म है शरीर के जी वे म र वे की बां ला ना ही ॥ यद्यपि शरीर सं धि र काल का परि व र है तथा पि मु नि न के म म ता
 ना ही ॥ देह ते नि स्प र है ॥ क ह सा भ जे त्रि काल जो गा दि क ति न करि निरं तर शरीर कूं द में ही है ॥ सीत काल में जल
 कै ती र उ म काल में गि र कै चि म र र्ध काल में त रु त नि नि वा स करे सो त्रि का ज योग कहि ए ॥ ॥ जे से वे लि

११८

की ज उ अ सं तें सी च ये तो ता की सि स्ता स वा हरि त ही र है जे में आ सा रु प वे लि की ज उ अ लु क भा व सो म म ता रु प ज ल
 से म ज ल र है तो आ सा रु प वे लि की ज उ अ लु क भा व सो म म ता रु प ज ल ते स ज ल र है तो आ सा रु प वे लि की सि स्ता
 स वा त रुणा ही र है ॥ ॥ आगे बा ही अर्थ कूं द शा त हार क पि दृ ट करै है ॥ ॥ की र नी र व द ने द रु प त स्ति ए तो र
 पि च दे ह र है नो ॥ जे द ए व य दि जे द व त्त्वं का रु प सु सु व वा द का क था ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ जो जी व शरीर ही में नि अ य
 से ती जे द है तो अ सं त ही जु दे जे पु त्र क ल चा दि अ ध रा शि आ दि क वा वा द स्तु क हं ति न की क हा क था ॥ वे ते
 प्र ग ट नु दे ही है ॥ अर जी व अर दे ह शरी र की ना ई ॥ यद्यपि अ जे द स प स्ति ए है तथा पि नि धे से ती जु दे ही है
 नावा ॥ ते अ स का र्मा ण तो स व सं सारी जी व नि के म धा न गि र है है ॥ क व जूं जु दे हो ते ना ही ॥ ज व जी व मु क्त हो ई
 न व वे हं ॥ अर अ हा र क शरी र क व रूं का रु प क मु नि के हो ई है ॥ अर म मु ष ति र्प च नि के उ द रि क दे व ना र
 की ति के वे कि य इ न का सं ध हो य है बू द है ॥ अ न दि क ज का स र्पि सं व ध जी व के है ॥ जी व अर शरी र शरी
 र की ना ई मि त र है है ॥ ते उ जु दे तो पु त्र क नि श दि क अर शि आ दि क की कां न वा त वे तो प्र ग ट नु दे ही है ॥ ओ
 सा जा नि स व ते ने ह त ज ना ॥ ॥ आगे बा शरी र के सं यो ग ते आ सा के जो ना ई है सो वि धा वि है ॥ ॥ स सो हं दे ह

संयोगाजलं वानलसंगमात् इति देहं परिभ्रमन्तीती नन्ताः त्रिविधिणाः ॥ ५३ ॥ कलाणके अर्थी जे महा
मुनिते ऐसा जो निदेह संतेहत जिआनंद रूप नरा कहा जासा जेसे अधिक संयोग ते जलत घाय मान हो
नहे। तेसे देह के संयोग ते में त घाय मान प्रया इह जो निकलाण के अर्थी महा मुनि देह सुमम त्व त जिआ
नंद रूप नरा ॥ वाच्य या जगत विषे इह जीव जे ते दुषले शरीर जोग विहे ते सरीर के संवंध ते जोग विहे ॥ ताते श
रीर सं अनुगमन जिमो कानि लायी जीव नि कुं चीत राग नाव आ चरनायो पहे जा करि व डुरि शरीर का सं
बंध न होई ॥ आगे सरीर दि विषे ममता नाव का कारण महा मोह बा के साग का उपाय कहै है ॥ अनादि
त्व सं द्रष्टो महा मोहो इति स्थितः सम्मयोगे नैव तस्तेषामुद्विष्टमिति ॥ ५४ ॥ जिन महा पुरुष निष्ठ
रूप विषे चित्त का निरोध सोई नई उषध ता करि भ्रमनादिकर्म संवय करि छदय विषे तिष्ठता महा मोह सो व
प्रकाश तिन ही का परलोक सुख होई ॥ वाच्य जेसे उषध के योग करि उदर विषे तिष्ठता अजीर्ण वृष्ण ति
नही के योग की निवृत्ति होई ॥ योग चिर काल ते अजीर्ण के संवय करि ब्याहे सो उषध के योग ते द्रवि होय
तेसे विषाग्नि करि ब्याजे कर्म विकार सो सम्पक म्यान ही करि निवृत्ति होय ॥ आगे मोह मोह के अना

बहुतेतसंतैजेमुनिइतवस्तुअंयसंतिवेधैतिनकेकोनसुखकैनिमसनहोईसबहीसुखकैनिमनहोई॥
अपकेअभीमिहैकतायनिमनाअहिंसापरिभुतिहुअंडःकतिमिःकतिसुखमलंसंसारसोबोअनं॥सर्वता
ममहेममअतिकरंक्षणअसंप्रपतां॥किंतयमसुखपतेनसुखितःसतंसदसाधवः॥५॥इयजेएकाकी
पदेकैएकभाभीअसकबतिपनाभामेहै॥अरमरीअहिनासकंमनबंधितपदार्थकीछातिभामेहै॥अ
इहमर्कनिर्जासुअकउदयसाहिइभामेहै॥अरसर्वेशसंसारकेसुखकापरिहारताहिसुखभानेहै॥अ
समस्तभाअंमहानुभवभामेहै॥अरसंभूअंअंणायामामेहै॥इहइतिजिनकीहेतिजिकेजेसाकौनप
दार्थजेसुखकैविमितिअहोयसबहीसुखकेकरणहोहै॥ताकरभाभाधुसभासुखीहीहै॥इहअनसत्यहै॥
भावअंजातविधैजेपरिग्रहादिकइयहायकसामगीहैतिनएकंमितिमुअस्तकारभाअंनिअंगीकारक
रीतिनकेयोगइयस्तकारणकौनजातेजेसकलपंचदतेदूदेतेहिसुखसुखीहै॥भागैकोउग्रअनकरेहै॥
कर्मकेउद्यकसिउद्यअसुयताहिजोगवैतिनकेचितविधैषेदकीउतपतिहैजातेकैसंसुखीपनाहैताकास
माधानकरेहै॥आकसोयतपोधनैइहयगोमुखंयहानीयतैतत्कर्मस्वयमाप्तयदिविदःकोनामंष

दक्षतः यातवो विनिगीषुणा यदि न वेदां न लोचिः स्वयं। यदि प्रसुतनेतुरप्रतिहतां तद्विधेकः ह्य
 ॥५॥ ॥५॥ जो कर्म उद्यम आयातादि उपलपकेवल करि उद्यम सायस्य करै। अर जो स्वयमेव उद
 य आया कर्म तेरे प्रकाहे का मुनिके प्रेदकानां मनां ही जे सें बती की है इहाना के सो वैरी परि जाय करि जी।
 ते। अर ते वैरी ही मुदकन आनं करि आय परि उद्यम आवि नोय स मोन क हा इह लो अधिक उद्यम है।
 जा वाय। जो जो धाया मुपरि जय वा बुद्धं जति निम परि जो वा बुद्धि चलाय आवै तो तिन के क हा तां नि। तो ही
 म हा मुनिन म के उद्यम करि कर्म निमुदय में लाय विहावे तिन के स्वयमेव कर्म उद्ये आवै त विमै क हा उद्ये। का
 आतां कर्म के उद्यम विमै उद्यम मनें मुवि कर्म नि की निज र कर ते सरीर सं निम हो काय ज करै। का। एका कितं ने
 प्रतिज्ञा म क न म पि स मुव न म रं सह वात। अं ता चिं सा म हा यं त मु मि व सह गानो ज विं चिं सा म हा म स।
 की म हा। म हा म त द धा म वि विं व म अं क वं म। ध्यायं ति धु म मो मु मि र म ह न गु रा गु रा गे न र सिं हा ॥ ५
 ॥ ५॥ जे म पं त म पु म नि मं म धं म य रं न नि की पु का म ह न ध न ए नं म म म क ता वि मे ति हे आ म स्व म पं कं धा
 वै हे ना म की वा हे मो ह नि नि र का की र ह वे की है प्रतिज्ञा जिम के स रं हि त नि करि स क ल परि मा सी है हे। अ चिं

ते

ने

१२०

यहै यहि मां जिम की सरीर सं सहाई तं निम का म म मु क म आ कूं धा म न एं। जो प्रज म ह पाय क हा स हा ई हे १
 यगा अं नि करि अवत क स हा ई तां मां सो स हा ई तां ही। अप नें कार्य विमै आय उद्यमी ज रां प मं क स न वं धि
 जिम स्व रूप का धा न करै है स रं रं र ह त हो य वे की वि वि वि न रं रं जिम के ए वि वार है। द मारै वा। री व व ऊ
 रि उद्यम अ वि निराद र करि म न नं कूं उद्यमी न रं। जा वा य। स व सं गारी जी व नि के शरीर का म म त है सो मु
 न पु नः शरीर कूं धा है। अर जे मिरा द र करि सरीर कूं धा है तिन के सरीर कूं र उद्यम अ वि प र्म प र कूं धा
 वै। का। म गं रं है। क र्म नि की अर न वे न वे त म ध र व की वि वि के र रि हे वे का चित्त कर ते सं ते आय पर
 म गुण नि करि मे मि त है सो र म कूं धा वि उता के का र क र है। का। वे धं न प र मं म स ग त र जः स्थ नं वि ला य
 स तं स र्वा स रं रि त म री मु वि वि त मे र मु हा दी व न। आ ता मी म वि क स वी त म न य स्तु थं सो थं य स्ति नो पं १ त
 न ध र म क स पु म तं मु ति। म ह नि म ह हा ॥ ५॥ अ य। जिम के मं ग नि मे र ज ना गिर ही है ए ही आ म स्व म है
 अर मि ला त व ही स्थान क है। अर कं करे नी ए धी स ज है। अर जि न पु क नि सिं घ टि कर है ते ई वि न के म
 रं है। अर ए वे व वि क मे र न का मी मं वि क ल तें र हित है मु धि जि न की अर दू वि ग ए है म पं न रूप यं धि जि न

मेरे

कैने ग्यान धन मोक्ष के पात्र पर मन स्थिर रह्यो मन अंग विचर्यो ॥ नावाथ जे विषया जिला धी शरीर के अनुगम
हैं ते आपुही बुझि रहें और न को ब्रह्म संतार ॥ अर जे चिर कहें रागादिक ते रहित हैं ते तरण तारण समर्थ ह्योरे रा
गादिक मन हरि ह्योरे मन अंग विचर्यो ॥ ३॥ बहुरि आगे कहै है वेसाधु के संह ॥ हर फटन यो नु नाव जनि न मो
त समुत्सर्प गौर त सत्त्व द कथं कथमपि प्राप्ति सादंगता ॥ निश्रुद्ध हरि गी विलो नय नैरापीय माना च मे धम
स्तेषामयं सचिन्मचरितैशीराश्विरं वा सरान ॥ ४॥ अर्थ ॥ अति से यों तप के प्रभाव ते उपजी कृत मोति ना के प्रक
मक निबूझ मिजास न त्व ताहि कों लोको ॥ ५॥ प्राप्ति होई अरि अति से आनंद कं प्राप्त न होई ॥ अर विश्राम कं प्राप्त हो
वत के जीव जनि सं ॥ हरि गीनिके वं वने प्रतिन करि विश्राम सं देखि रहै ॥ धर्म वै धार जे चितवन में न आवै सो सं च
विज्ञति न करि बुझत विनय न विषे अपीत करै है ॥ नावाथ जे निज समुप विषे म प्रहोय करि परम शान्त न जा कं प्रा
प्त न होई ॥ ते धर्म हैं वन के जीव जीति न सं जयन के सध नि कं प्रहो ॥ ६॥ आगे सो सी बुद्धि न की कहै करै सोई
कहै है ॥ वेसाधु फिर लक्ष्मणान निदयो राधात्मनो रं रं ॥ प्रजे चैर विधाये न दमनयो राशान्त विश्राम्यति ॥ यरं न वि
निवे जिता ॥ शमय मे कंधं वहिर्भासय ॥ तेषां नो उपविचयं तु पद्मा ॥ पादोष्पिता पांशवः ॥ ७॥ जिन की बुद्धि न

गतकी आशा कर आत्मा रोनुनि कै मध्यवाप्तनई कैसेहें दोनु नां होत बा जाय है नेद जिनका सो मुन मुनिन।
दी दोनुनिके मध्यमाप्त होई ननें प्रकार के उचित निज दिशम कूं न प्राप्त नई नेद की गरी कैसेहें वै महा मुनि सं
तमा नही है न जिनके अपराध पापार्थ निविधै चित की वृत्ति जाय थी सो जिन संतरंग विधै ध्यायितिन के च
रासमन की परस्पर मया प्राप्त विधै कोन कोन पवित्र न करै सब को पवित्र करै सो हम कूं पवित्र करौ।
नमस्ते मन का अनादितं वंधै एक से होय रहें हैं सब निरुं एक से प्रति जा सेहें जे महापुरुष नेद विष्णु न।
करि दो मुनि कूं नारे जो निज मनु निर्मम त होय नमत की आसा मनि है तिम के चरासमल की रज जीवनि
सं पवित्र करै है। आपो नही है वे वादावृत्तिक निरोध करि कर्म को फल संतोष वै है निन के परिणाम की
विशेषता की प्रसंग रहै है। यथा मुनि संवित नुन ता कर्म फल संतोष न जे वंत तद्वीरणादनुन चउः पं
मुयं वागतं कुर्मो वृत्त न मेघ सोपनिमतो गच्छत्यो विजये सर्वान् परिणामान् परित्यागी मवंद्यः सतां
अविनेष्टं न ज्ञान विधै ने मुन आया न मुन कर्म न पार्ते निम कर्म निरुं वैद कहिए निन की धेरण
नं जीवमनुपनीय वै है सो हम जीवनि में जो असुख निज न कूं आदरै है सो उनला कहिए। अरजो जीगीस

रचना शुभदे उनिही केविनाचे अर्थि सर्वां न परिग्रह रूप कर ग्रह का सागी होय मो सत्पुरुष निकरि बंदनी
 कहै ॥ आगे को उ प्रह्लाद कहै कि सुषुप्त कर्मनि के फल नो गवै है तिन के नवे पुनया पबंध होहिगे ताते दो उनि
 का न स कै से होई ता का न सा धान करै है ॥ सुख दुख बा स्यादि ह विहित कर्मो दृष्ट सा कृतः प्रीति स्ताय
 कृत इति विरक्त आदि भवेत् उदासीन सत्पुरुषा नति प्राणं न हि नवं समात्कं सत्पुरुष तिसु विदधि म
 गिरिव ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ सुषुप्त अथवा सुषुप्त होय है पूर्वोक्त जित कर्म के उदय ते मो जो कदाचित् सुषुप्त विषयीति होई
 अरु इति विषये आत्मा माने तो नवे कर्म आव संधै ॥ अरु मो मो सुषुप्त दृष्ट विषय न करे को न मो प्रीति का
 र ॥ अरु को न कुं आत्मा पकारी भांनि ॥ अर्थ ॥ विचार ते जे प्रति उदासीनता कय है तिन के पुरातन कर्म तो
 विषये ॥ अरु नवे नव धै ते विवेकी महा प्रणिकी भांई सदा प्रकाश पी हो ॥ भावा ॥ कर्म का उदै जीवन के आवै है
 ता विषये जो हर्ष विषाद करे तो नवे कर्म वंधै ॥ अरु जो हर्ष विषाद न करे तो न विन वंधै ॥ पूर्व कर्म फल देखि रज
 ॥ इति निश्चै है ॥ आगे पुराणे कर्म की निर्जरा विषये अरु नवे कर्म के संचर विषये जो क सुज्ञ का सो दिधा ॥ १२ ॥
 वे है ॥ सकल विमल बोधे देहो हे निर्जरा कल न इव सकां निष्ठुरं जमि यित्वा पुनरपि तद जावे ॥

प्रज्वल सुकलः सन् नवति हियति वृत्ति सवेया मय्य भूमि ॥ १३ ॥ ॥ जे में अग्रिका एकुं सर्वथा न सम क
 रित के अभाव विषये अति निर्मल प्रज्वल ते में निर्मल ग्यान दे हो हदि क का अभाव करित तिन के अन
 व विषये विमल प्रकास करै है ॥ यति का आचरण सर्वथा आसुर्य का स्थान कहै ॥ ना वा ॥ ग्यान प्राप्ति नो
 ह कृत जि देह सुं मेह त जे सकल परिग्रह का साग करि वीतराग अवस्था धरि ग्यान ही निर्मल प्रकास करै
 मुनिकी अने कि क वृत्ति है सो पूर्ण ग्यान मुनी ही के होई ॥ ग्रहण के अल होई ॥ आगे कहै है मुक्त अरु
 संसार दसा जी के साधारण है ॥ अरु जे गुण दि गुण के नाश कर मुक्त माने है तिन की श्रद्धा निकषा कर
 ता कहै है ॥ गुणी गुण मई सत्पुरुष नाश कर आधिपत्य अंतरा बहि निर्वाण भूषण मे विरक्ति जित ॥ १४ ॥
 अर्थ ॥ गुणी कहै आत्मा सो गुण दि गुण मई है ग्यानादिक का नाश सो आत्मा का नाश जे से उन्नता
 के अभाव ते अग्रिका अभाव के थक दीप के अंत हो ने सुख निर्वर्ण माने है सो विरक्ति नां ॥ ज्ञान की पू
 र्णता सोई मुक्ति है ॥ इति हो सो गुण मई है ॥ गुण का न भ सो ध्वज का न स हलंकार का बाहिर ॥ असा तो न
 अरो मंत्र क नां नां ता सुखी बुध देह माओ मने मुक्तो गत्वा र्ध मवलः ॥ १५ ॥ ॥ आत्मा कव

कुंठयमानां ही अरकवक्रमरेनां ही अरजाके कोनुमूर्तिनां ही अमूर्ती कहे व्यवहारनयकरिकर्मणि।
 कोकतो हे निश्चैनयकरि अयनें सुजावकाकतो हे अरव्यवहारनयकरि सुषडयकाकोकतो हे निश्चै
 पनें स्वजावकाकोकतो हे आपानकरि इंदी जनितसुषडं सुषमांते हे निश्चै परमानंदमयी हे ग्यानरूप
 हे व्यवहारनयकरि देहमात्र हे निश्चै वेतनामात्र हे कर्ममजरहित लोक के सिधर जायकरि अनुअ
 चलतिष्ठे हे जावाय आत्मा केवल ज्ञानानंदमई हे सकलव्याधिरहित हे परंतु परकुं आपामांनि अं
 तिनेनचमेषां हे जवअपनां स्वरूपताजाने तव निरुपाध्यांनरूप अविनासी होयतिष्ठे आत्मा।
 ज्ञानस्वरूप हे ॥ अ॥ आगे कोनुप्रहकरे हे इंदी जनितसुषके अजावते के से सिद्धि निकुं सुषी कहे ताक
 समाधान करे हे ॥ अ॥ स्वाधीत्याडवमप्यासी सुषंयदितपस्वीनां स्वाधीनसुषसंयत्ताः न सिद्धाः सुषि
 न कथं ॥ अ॥ अर्थ जो मुनिन के स्वाधीनपने तो काय के स्वरूप सुष सुष कल्याती सिद्ध न
 कुं सुषी कोमक हिए बेतो सदा स्वाधीन सुषमई ही हे ॥ अ॥ तत्त्वदृष्टिकरि जगत के जीवडुषीतिन मे स
 प्यकरही मुनि ही सुषी कहे तो सिद्धी केवल आनंदरूप ही हे ॥ अ॥ आगे पंचके अर्थ कुं पूर्ण करि

१२३

करियंकी अज्ञा प्रमाणे प्रवर्ते हे तिसकुं अज्ञानविषय हे ॥ अ॥ इति किमिपयवा बां गोचरीकृतकसं चरि
 तमुचितसुषे अतसां निरुपमं ॥ अ॥ अर्थ वचनं संततं चिंतयंत मयदि विपदिपेतामाप्रयंते प्रियंते ॥ अ॥
 केयकवचनकीर अर्थ विचार हे वितनि ॥ अ॥ अर्थ संप्रमाणुनितिन के वितन रमणीक इहे आत्मा सु
 शासन प्रचारयाता हि विरत संप्रमाणुनितिन के वितन रमणीक इहे आत्मा सु
 शासन प्रचारयाता हि विरत संप्रमाणुनितिन के वितन रमणीक इहे आत्मा सु
 शासन प्रचारयाता हि विरत संप्रमाणुनितिन के वितन रमणीक इहे आत्मा सु
 शासन प्रचारयाता हि विरत संप्रमाणुनितिन के वितन रमणीक इहे आत्मा सु
 शासन प्रचारयाता हि विरत संप्रमाणुनितिन के वितन रमणीक इहे आत्मा सु
 शासन प्रचारयाता हि विरत संप्रमाणुनितिन के वितन रमणीक इहे आत्मा सु
 शासन प्रचारयाता हि विरत संप्रमाणुनितिन के वितन रमणीक इहे आत्मा सु
 शासन प्रचारयाता हि विरत संप्रमाणुनितिन के वितन रमणीक इहे आत्मा सु
 शासन प्रचारयाता हि विरत संप्रमाणुनितिन के वितन रमणीक इहे आत्मा सु

एधर देव है निन की भक्ति विधे आरु दक्षिण जिन का भौसे पुण नि करि न द कहि क ला ए रुप मुनि राज जैन के आ
 राय निन का जाया इह ग्रंथ है अथवा जिन मे ना राय का शिष्य गुण ज्ञान का जाया है ए रोउ अर्थ प्रमाण है
 ॥ आगे कहै है श्री विष्णु देव तुम के कला के कला रेउ ॥ ॥ ना नि ए ज के पुत्र श्री विष्णु देव तुम के महा क
 आण के निम त होउ जा के पांन सप जल विधे ल क व जगत क मन नु ज न से है ॥ ॥ इति श्री आत्मा तु शा स
 न अथ परिषदा निम नु ॥ ॥ श्री ॥ विला ला न ग जी राम जी ल स च र म मं द के सराम गं गाराम नि
 न मे र ल न चं द वा च नार्थ वे स न ग र मं द लिखे संवत् १८८८ क मिति काल गुन सदि ११

